ज्ञान-स्तम्भ

2013-14

हिन्दू कन्या महाविद्यालय
जींद

From the Principals Desk.....

It gives me, immense pleasure in offering the current issue of our College Magazine 'Gyan Stambh'. Ever since its inception in the year 1970, the college has made tremendous progress in the fields of academic, cultural activities and sports. Recently we have also started B.Sc. Non-Medical from the session 2013-14.

Discipline is the sheet anchor of life. It means obeying certain rules and regulations in every field of life. A disciplined person walks fast on the road to success and touches the heights of achievements. Discipline is the prime requirement for a student. In oden times even princes were sent to 'Gurukul's to learn dutifulness and strict discipline so as to become able at every stage of life. So I would also like all my students to be the followers of path to a disciplined life. I also extend my good wished to the students for a bright and successful future.

I also extend my heartiest congratulations to the Editorial board, the staff and students of the college for their efforts in bringing out the present issue.

Mrs. Shashi Behl
Officiating Principal
Hindu Kanya Mahavidyalaya

COLLEGE GOVERNING BODY

Sh. Brij Mohan Singla
President

Sh. Baldev Raj Ahuja
Vice-President

Sh. Jai Bhagwan Goyal
General Secretary

Sh. Shyam Sunder Jindal
Treasurer

Editorial Board

Front Row (Left to Right)
Staff Editors

Dr. Mrs. Poonam Mor (Editor in Hindi Section)
Dr. Mrs. Geeta Gupta (Editor in English Section)
Mrs. Shashi Behl (Officiating Principal)
Dr. MS. Sudha Malhotra (Editor in Chief)
Mrs. Sushma Verma (Editor in Sanskrit Section)

Back Row (Left to Right)
Student Editors

Ms. Punita (Hindi Section)
Ms. Nitika (English Section)
Ms. Shiv Raj (Sanskrit Section)

Cultural

गणतन्त्र दिवस पर राष्ट्रीय गान प्रस्तुत करती हुई छात्राएँ

जोनल यूथ फैस्टीवल (हिसार) में जनरल ग्रुप सॉंग व हरियाणवी ग्रुप सॉंग में प्रथम तथा पाश्चात्य समूह गान में इंडियन लाईट वोकल व हरियाणवी गजल में टीम द्वितीय रहने पर हर्षित छात्राएँ

टैलेंट शौ में नृत्य नाटिका प्रस्तुत करके छात्राओं का मनोरंजन करती हुई B.Sc की छात्राएँ

प्रबन्धकीय समिति के सदस्यों, प्राचार्या महोदया व स्टॉफ की उपस्थिति में कॉलेज में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा कुमारी पुनीता ध्वजारोहण करते हुए।

प्रतिभा खोज समारोह के दौरान नृत्य प्रस्तुत करती हुई छात्रा

कुमारी गीत गणतन्त्र दिवस पर देश भक्ति से ओत-प्रोत नृत्य प्रस्तुत करते हुए

कुमारी हिमाँशी सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान गीत प्रस्तुत करती हुई

टैलेंट शौ के दौरान मनमोहक नृत्य प्रस्तुत करती हुई छात्रा

Cultural

देश भक्ति से ओत–प्रोत कोरियोग्राफी प्रस्तुत करती हुई छात्राएँ

सांस्कृतिक कार्यक्रम के शुभारंभ पर सरस्वती वंदना प्रस्तुत करती हुई छात्राएँ

टैलेंट शो के दौरान हरियाणवी लघु नाटिका प्रस्तुत करती हुई छात्राएँ

हिन्दी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर बी.ए. द्वितीय की छात्रा को ईनाम देते हुए प्राचार्या महोदया व हिन्दी की विभागाध्यक्षा डॉ0 सुधा मल्होत्रा।

प्रतिभा खोज समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करती हुई प्राचार्या महोदया श्रीमति शारी बहल जी

26 जनवरी को योगा प्रस्तुत करती हुई छात्राएँ

होम साईंस विभाग द्वारा आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में विजयी छात्रा को प्रस्कृत करती हुई प्राचार्या महोदया व होम साईंस विभाग की प्राध्यापिकाएँ

प्रतिभा खोज समारोह में नृत्य में विजयी छात्रा को पुरस्कृत करती हुई प्राचार्य महोदया व सांस्कृतिक विभाग की प्राध्यापिकाएँ

Women Cell

छात्राओं को संबोधित करते हुए प्राचार्य
Govt. P.G. College, Jind

प्राचार्य श्रीमति शशि बहल के स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए **M.G.** संस्थान के सदस्य

कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ मुहिम छेड़ने की शपथ लेते हुए स्टाफगण एवं छात्राएँ

महिला दिवस के अवसर पर छात्राओं को जूडो के ट्रेनिंग देते हुए जूडो विशेषज्ञ श्री प्रमोद मलिक

Women Cell के एक **Function** पर भावपूर्ण कविता प्रस्तुत करते हुए छात्रा कु० आरती

Govt. P.G. College Jind के प्राचार्य श्री वेद प्रकाश श्योरण का स्वागत करते हुए प्राचार्या श्रीमति शशि बहल

CJM Mrs. Harleen A Sharma, CJM श्री अरमिन्दर शर्मा, प्राचार्य श्रीमति शशि बहल, श्री जय भगवान गोयल कार्यक्रम का प्रारम्भ करते हुए

Skin Care Camp के दौरान छात्राओं की मैडिकल जाँच करते हुए डॉ. पंकज सोनी

Legal Awarness Cell

College Leval Competition

Advocate Ms. Archna Pawar talking about role of Legal Services Authority in Legal Literacy National Legal Service Day 9-11-2013

Sh. Jai Bhagwan Goyal, General Secretary Managing committee, H.K.M.V., Jind talking about women empowermet during special legal literacy seminar

Special legal literacy seminar on women empowerment, Madam Harleen A Sharma, CJM Sh. Arminder Sharma, CJM Jind, Mrs Shashi Behl, Principal HKMV Jind

College Leval Competition

Students Interacting on various issues related to women

Students in special legal literacy camp

N.S.S. Activities

एन.एस.एस. कैम्प के दौरान एक दूसरे को मेंहदी लगाती हुई एन.एस.एस. स्वयं सेविकाएँ

एन.एस.एस. कैम्प के समापन समारोह में एन.एस.एस. रिपोर्ट प्रस्तुत करती इंचार्ज श्रीमती नीलम

ट्रैफिक वीक के अन्तर्गत एन.एस.एस. स्वयं सेविकाओं को रोड साईन्स के पम्फलेट्स वितरित करती एन.एस.एस. इंचार्ज श्रीमती नीलम

कॉलेज प्रांगण की सफाई करती हुई एन.एस.एस. कार्यकर्ता

शिविर के दौरान कार्यकर्ताओं को वर्तमान समय की आवश्यक्ताओं के अनुसार स्वयं को ढालने की शिक्षा देते शिक्षाविद् श्री जावेद अबास जी

पौधरोपण करती एन.एस.एस. छात्राएँ एवं एन.एस.एस. इंचार्ज

एन.एस.एस. दिवस पर सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करने की शपथ लेती हुई एन.एस.एस. स्वयसेविकाएँ

स्वयंसेविकाओं को योग प्रशिक्षण देते योगाचार्य श्री सूर्यदेव शास्त्री जी

विश्व साक्षरता दिवस पर श्लोगन राईटिंग कम्पीटिशन में भाग लेती हुई एन.एस.एस. स्वयंसेविकाएँ

एक दिवसीय शिविर में महाविद्यालय के लाइब्रेरी कक्ष की सफाई करती छात्राएँ

वृक्षारोपण के द्वारा वातावरण को स्वच्छ बनाने की महत्ता को लघु नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत करती हुई एन.एस.एस. छात्राएँ

N.S.S. Activities

एन.एस.एस. स्वयं सेविकायों को सेल्फ एम्लोयमेंट प्रोग्राम के तहत प्रशिक्षण देती प्राध्यापिका श्रीमती हिमांशु गर्ग

छात्राओं के भावी जीवन को सुदृढ़ बनाने के बारे महत्वपूर्ण बातों की शिक्षा देते श्री श्यामलाल कौशिक जी

'गीता के महत्व' पर प्रकाश डालते हुए डॉ0 एस.के. आहुजा जी

जीवन में लक्ष्य के महत्व को समझाते हुए मनोवैज्ञानिक श्री नरेश जागलान जी

दाँतों के रखरखाव की जानकारी देते हुए प्रसिद्ध दंत चिकित्सक डॉ0 वरूण अरोड़ा

एन.एस.एस. कार्यकताओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देते हुए श्री प्रमोद मलिक एवं उनके सहयोगी

एन.एस.एस. कैम्प के उद्घाटन समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती छात्रा

एन.एस.एस. स्वयं सेविकाओं को फर्स्ट एड की ट्रेनिंग देते श्री सूर्य देव शासत्री जी

एन.एस.एस. कैम्प के समापन समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती छात्राएँ

एन.एस.एस. के साल दिवसीय कैम्प के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए मुख्यतिथि श्री बलदेव आहुजा जी

एन.एस.एस. कैम्प के समापन समारोह में पुरस्कार स्वरूप शील्ड लेती हुए एन.एस.एस. छात्राएँ

शिक्षा का प्रचार प्रसार करते हुए एन.एस.एस. स्वंयसेविकाएँ

मुख्य संपादिका की कलम से.....

प्रिय विद्यार्थियों,

आप सब तरुण है। तरुण समाज का नवजीवन है, तरुण साहस और पराक्रम की दहकती ज्वाला है, तरुण का उत्साह उद्दाम झारने की तरह है. जिसे कोई बाधा नहीं रोक सकती। तरुण राष्ट्र का महाप्राण है। तरुण संस्कृति का रक्षक व संदेशवाहक है। तरुण धर्म की धुरी का धारक है। तरुण वज्र की तरह प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थिति में भी अडिग रहता है। उसके लिए कठिनाइयाँ चुनौती हैं, मंगल है, वरदान है। तरुण के कर्म रथ की गति को भला कौन रोक सकता है ? उसके दिग्–दिगन्त व्यापि लक्ष्य को कौन मोड़ सकता है ? वह शक्ति और साहस का दूसरा नाम है। आज तरूणों से देश को बहुत अपेक्षाएँ है और तरूण भटक रहा है। पैसा, सुविधा, चमक दमक सब उसे मृगमरीचिका की तरह पथभ्रष्ट कर रहे है। वह मानवीय मूल्यों को भूल चुका है।

आज हम समाज में उसे सम्मान और प्रतिष्ठा देते है, जो प्रतिष्ठित पद पर हो अथवा धन धान्य से सम्पन्न हो। जिसके पास कोठी, कार, बंगला हो। हमें अपना आदर्श, दृष्टिकोण और विचार बदलने होंगे। परिश्रम और परमात्मा का गहन संबध है। क्योंकि कर्म ही पूजा है, जो जीवन को यज्ञशाला समझकर सदा कर्म में लीन रहता है, वह परमात्मा के सबसे निकट होता है। वह अपनी जिन्दगी को साध कर पूर्णता की ओर बढता है। हमें भी परिश्रम करना चाहिए। सुविधाओं की ओर रूख न करके पसीने की एक एक बूँद से जीवन और चरित्र का निर्माण करना चाहिए। हमें सच्चा मानवतावादी बनना है। इसके लिए हमें परिश्रम करने वाले की मज़दूरी देकर अपना कर्तव्य पूर्ण नहीं समझना चाहिए बल्कि उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना ही हमारा परम कर्तव्य है, किसी के मेहनत की कीमत नहीं चुकाई जा सकती मेहनत आदर के योग्य वस्तु है, तभी तो फ्रांस के जॉन ऑफ आर्क ने भेड़ें चराई, महात्मा टॉलस्टॉय ने जूते गाँठे। उमर ख्याम ने तंबू सीए। खलीफा उमर ने चटाइयाँ बुनीं। भगवान श्री कृष्ण ने भी गौएँ चराई। कबीन ने कपड़े बुने। रविदास ने मोची का कार्य किया। श्रम के महत्व को समझने वाला व परिश्रमी को सम्मानित करने वाला प्रभु को समझ सकता है। परिश्रमी व्यक्ति को स्नेह–दान देना चाहिए। यही सदाचरण है। सच्चे आचरण का प्रभाव मानव हृदय पर पड़ता है। आचरण में वह प्रकाश है जो निराशा से घिरे अंधकार को समाप्त करता है। आलस्य और कर्महीन मनुष्य ही असफल होते हैं। अच्छे आचरण से ही हम सच्चे पुजारी, मुल्ला, पादरी की श्रेणी में आ सकते है। इसके लिए निश्छल, निष्कपट रूप से शांत और मौन भाव से अपने कार्य को पूजा की तरह करना होगा। तभी जीवन में सफलता प्राप्त होगी। कर्म के बिना तो मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। यदि हम सब कर्मशून्य हो जाएँ तो फिर समाज चलेगा कैसे? सारी सृष्टि कर्म कर रही है। प्रत्येक व्यक्ति को कर्म करना ही चाहिए। एक क्षण के लिए चाँद या सूर्य अपना कर्म करना रोक दे, तो सृष्टि मात्र ही समाप्त हो जाए। हमें आनन्द के साथ मेहनत करते रहना चाहिए। ईश्वर को फूल तोड़कर समर्पित करने से नहीं, कर्म रूपी फूल समर्पित करने से प्राप्त किया जा सकता है।

डॉ0 सुधा मल्होत्रा
एसोसिएट प्रोफेसर
(हिन्दी विभागाध्यक्षा)

ENGLISH SECTION

Teacher Editor
Dr. Geeta Gupta
Assoc. Prof. in English

Student Editor
Nitika
B.A. III

INDEX

1	Editorial	Dr. Geeta Gupta (Assoc. Prof.) English
2	Way to God	Dr. Sudha Malhotra (Assoc. Prof.) Dept. of Hindi
3	Change yourself and the world will change	Mrs. Neelam (Asstt. Prof. Pol Science)
4	Criteria to Measure Humanity	Reetu Dhingra Lect. In English
5	Humorous Quotes	Harigandha, B.Com II (1729)
6	English to Good	Shvita, B.Sc. I(2515)
7	J to J (Jind to Japan)	Geet, B.A. III (2251)
8	The world is a stage	Pooja Bhardwaj, B.A.II (1167)
9	Paper	Sonali, B.Sc.I (2520)
10	Jokes	Sonali, B.Sc.I (2520)
11	How to speed read	Shilpa, B.A.II (1153)
12	Don't Limit your reading speed by your speaking speed	Shilpa, B.A.II (1153)
13	Read with your eyes only	Shilpa, B.A.II (1153)
14	The kind Beggar	Harigandha, B.Com. II (1729)
15	March Song	Jyoti, B.Sc. I, 2509
16	Slogans	Khushboo, B.A. IInd Sem
17	O! Teacher	Girizja, B.Sc. I, 2529
18	Guess the City	Shilpa Jain, B.A.II (1208)
19	How to be sucessfull	Punita Lohan, B.A.III (2126)
20	Cuteness of Wind	Punita Lohan B.A.III (2126)
21	Secret of success	Shilpa, B.Sc. I (2523)
22	Which one wins	Shilpa, B.A. II (1153)
23	All IZZ Well	Shvita, B.Sc I (2515)
24	My life	Monika Mor, B.Sc. I (2516)
25	Teacher	Monika Mor, B.Sc. I (2516)
26	A College Life	Sakshi Bhardwaj, B.Sc. I (2522)
27	Interesting Facts	Jyoti, B.Sc. I (2509)
28	I love being a Girl Child	Pooja Bhardwaj, B.A. II (1167)
29	Who AM I	Rinki Jangra, B.Sc. I (2531)
30	Teachers VS Students	Rinki Jangra, B.Sc. I (2531)
31	Encouragement Drops	Versha, B.A.II (2244)
32	Value of English	Shilpa, B.Sc. I (2523)
33	Chemistry in my Life	Sanny Nehra, B.Sc. I (2545)
34	What is Life ?	Renu Duhan, B.A. I, 170
35	Don't forget and think	Ritu Chahal, B.A. I (158)
36	Mathematics is Life	Shweta Pahal, B.A.I (249)
37	Money	Nisha Shran, B.A.II (1138)
38	Dil Chahta Hai	Sandhya, B.Com III (3910)
39	College Life	Shilpa, B.A.II (1153)
40	Teachers Love	Diksha Setia, B.A.I (203)
41	Words to live by	Preety Soni, B.A.I (191)
42	Nature	Sandhya, B.Com III (3910)
43	What should I Be When I Grow up ?	Sandhya, B.Com III (3910)
44	Time is Precious	Shilpa, B.A.II (1153)
45	Handsome is that Handsome is does	Sandhya, B.Com (3910)
46	Our Life	Sandhya, B.Com (3910)
47	Some Amazing thought provoking Quotes	Shilpa (1153)

EDITORIAL

Life entails swimming in shark infested waters and plucking the lotus of wisdom that blooms on the surface. It is like disintegrating block of ice, melting fast. One has to perform brilliantly in order to make some impact on life. Even a small house requires a foundation. So, what wonder is it, if a human being also needs a strong foundation and a plan to make a mark in life. Moral, ethical and spiritual knowledge and experience are the best foundation of life.

In the present scenario, secular knowledge is given importance as against spiritual knowledge. In schools and colleges only information is given related to the subjects that a student has chosen. But no ethical and moral education is imparted. It makes students selfish and devoid of sympathy and empathy. They become materialistic Zombies imitating outer world without any divine spark. They just imitate their role models who are mostly film stars and try to copy them.

Adults in schools and colleges are not able to provide any ideal models for the students. They themselves are mired in fashi on and artificiality.

This dearth of Leaders and models is cause of present malaise. Coming back to students, I advise you to leave a :tificiality, crudeness and rudeness behind. I find that present generation of students are either affected and crafty or are simpletons devoid of good manners. There are only a few who have respect and devotion for their teachers,

I wish that you will eschew being phony, false and mechanical. Life is spontaneous and natural, enjoy it and live up to the expectations of our great nation.

Dr. Geeta Gupta
Assoc. Prof. in English

WAY TO GOD

Truth, Peace, Love, Non-Violence are pathways of the Supreme power. First of all, truth is god. Truth is that which never changes, God is goodness and God is beauty. Beauty is nature. Goodness is good work and good work is God's work. Whoever wants to be happy must humbly follow the divine law. His laws are:

1. Start the day with Love
   Fill the day with Love
   Spend the day with Love
   End the day with Love
2. Watch Your
   W Words
   A Action
   T Thoughts
   C Character
   H Heart
3. Anger and intolerance are the twin enemies of correct understanding.
4. Time waste is life waste.
5. Be good, see good, do good.
6. The three D are duty, devotion and discipline.
7. Care not for marks but for remarks.
8. The ABC of life is 'Always be careful'
9. Bend the body, mend the mind, end the senses that is the way to immorality.
10. Service to mankind is Service to God.

These paths are the golden link between man and God. Our body and soul which constitute its pillars. So man is the best activator of his own fate line then divine grace has to come to us, it calls for dedication, it calls for devotion, it calls for detachments. It calls for an eternal struggle to persevere in search of eternal truth and sense of values.

Dr. Sudha Malhotra
Associate Professor in Hindi

CHANGE YOURSELF AND THE WORLD WILL CHANGE

The most important person in the world is 'I'. The person whom we see in the mirror is none else but one who stands in front of the mirror. If you change, the mirror image will also change. That is the crux of the matter. Change yourself and the world will change.

The tragic fact is that we have been crying hoarse to get others to change but we our selves don't want to change. When we change, things automatically change, concentrate on yourself.

Change is not brought about by any outside agency. It comes from with in, by the person him/himself. Everything in nature changes by itself. It is effortless as the cells forming or outer form are changing every moment. But to bring about any change in our personality we have to make efforts and do so constantly. The world or for the matter of that nobody seems to be changing as every body wants others to change.

We tend to depend on others for every good thing or the thing we would like to have, and we fail to do so and feel miserable about it. We must remember that dependence on others is a potential cause of miseries. Those who depend on others better die at the time of birth, it is said.

An old illustrative story is often told. A lady with her son went to a saint and requested him to do something so that her son may give up the habit of taking too much of sugar. The saint after a pause asked her to come after a fortnight. The lady did so. But the saint sent her back asking her to come after 30 days. This time the saint said something to the child and in a few days, the mother was happy to see the desired change in the boy. She went to the saint and asked him why he did not give his advice to the boy when she had gone for the first and the second times. The saint said 'I myself was addicated to the habit of taking in extra sugar. I took a month's time to give up the habit, before I had any cheek to ask your son to do so."

As Henry Davis Thoreau said once **things do not change, we change."we can say** when we change, things automatically change. If you want to see a change, concentrate on your own self. This advice the person in the mirror has given me more than once, You, too have it.

' Hum badlenge jag badlega'

Mrs. Neelam
Assistant Professor
Political Science.

CRITERIA TO MEASURE HUMANITY

'Love, hope, fear, faith, these make humanity. These are its sign and note and character.'

By the standard of anatomy, medicine, and even to some extent, psychology, there are no major differences between two or more individuals. But is Humanity limited to the body? In humanistic sciences there is talk of perfect and imperfect man, of this low and high kind. There are some requisites to measure the differences between two human beings.

Knowledge is one of the requisites of humanity, and although the importance of awareness of the self, of the society and of the world cannot be denied. It is inadequate. This view claims that humanity is measured by character and disposition. But what kind of character and disposition are criteria of humanity? One answer is love, which is the mother of other fine dispositions. A person with love is as interested in others as in one's self. In religion this is called self sacrifice. There is an instruction in all religions to love for others what you love for yourself, and dislike for them what you dislike for yourself. This is the logic of love. As has rightly been said:

If you want to awaken
all of humanity
then awaken
All of yourself
If you want to eliminate
the suffering in the world
then, eliminate all that is
dark and negative in yourself
Truly, the greatest gift
you have to give is that of your
SELF-TRANSFORMATION.

Another criterion is that of resolution and will power. It claims that if a person can dominate himself, his Instincts, nerves and passions by his will power and reason and not be dominated over by his inclinations and desires. He is really human.

In modern schools of thought, much emphasis is laid on freedom as one of the criteria of humanity. As a requisite for humanity, it is correct but as the sole criterion for humanity it is wrong.

Islam has laid great emphasis on self control. The person who controls his anger and does not allow it to overcome him, is the strongest (person). One must not use one's anger in a way contrary to God's satisfaction and should be able to dominate over his own desires.

Though technology has exceeded our humanity. But I don't believe that learning is a criterion to measure humanity. If it were so, we should say that Einstein, the most learned man of the time, was the most endowed with humanity.

In fact, the most indentifying trait of humanity is our ability to be humane to one another.

Reetu Dhingra
Lect. In English.

Humorous Quotes

* "The reason fat men are good natured is they can neither fight nor run."

Theodore Roosevelt
26th President of USA

* "Democracy is the process by which people choose the man who'll get the blame."

Bertand Russell
Philosopher of Logician

* "The length of a film should be directly related to the endurance of the human bladder."

Alfred Hitchcock
Film Director of Producer

* "Experience is like a comb that life gives you, when you are bald."

Navjot Singh Sidhu
Former Crickter & MP

* "If there were no bad people, there would be no good lawyers."

Charles Dickens
Writer

* "If you don't read the newspaper, you're uniformed. If you read the newspaper you're misinformed."

Mark Twain
Writer, Lecturer

* "Gravitation is not responsible for people falling in love ."

Albert Einstein
Physicist

* "The more you know, the more you know you don't know."

Aristotle
Greek Philospher

Harigandha
B.Com II
1729

ENGLISH IS GOOD

The spread of English
In India will never blemish
When everybody is making a wish.
Make me Good In English.
English Is everywhere like honey.
Even beggars ask money money.

Let English be very funny,
Only Good English will make your life sunny.
Without English, your pocket will be tight.
With good English your future is bright.

To God, I pray every night
Make my English right.
In interview speak English to flatter
Make yours friend speak English better.

English speaking matter
To make your name better and scatter
English is everywhere on globe
No English, no job.
Thus, Eng. Provides bread butter and food.
That is why English is so good.

Shvita
B.Sc. 1 Year
2515

J TO J (JIND TO JAPAN)

In this large world around us, there are 7 continents and 257 countries.

Among these 257 countries, Japan is the only other country I got a chance to visit.

So, I started my journey on 25 Aug 2013, Sunday 8:30 PM Flight No.: AI306 IGI Delhi to Narita Tokyo.

With Some guidance from fellow passengers I stepped on foreign land for the Ist time.

The first major difference is in time zone, Japan is 3 and half hours ahead of India.

After clearing immigration, custom etc. My di and Jija ji were there to receive me.

On the way to my destination city Shizuoka, I got a chance to board world famous Bullet train.

It covered a distance of 200 kms in 1 hour but inside the train I could not feel that the train was traveling at such a speed.

I was expecting rush like we are used to in Indian trains, but I found just the opposite. One more remarkable thing was that there were lockers for baggage where you can keep your luggage and lock them with the lock code of your own which you can use to unlock and get off with the baggage.

For each station there was an announcement for the station, as soon as we heard announcement for Shizuoka. I was expecting rush while getting off but I was again wrong.

I stepped out of station and found that there isn't any pollution.

Roads were as clean as the interiors of homes.

Just by this view I forgot all my lag and I was feeling joyful.

Very soon there was another surprise awaiting me that is of traffic rules. People follow traffic rules even if there isn't any one from traffic police. There were more number of cycles on roads as compared to cars, As more cycles than cars means less demand for fuel and less pollution. I could understand the logic of fresh air.

People in formal suits were riding their bicycles and using i phones was the sight I could never even visualize in India.

If light turns green and car and pedestrian are waiting. Person driving car will wait and allow pedestrian and cyclist to cross the road.

Soon we reached home and it was the day to recover from jet leg and just rest.

The very next day I rode a bicycle and it refreshed childhood memories. We went to a nearby park called as 'Fungsu" There was a fountain. Activities of Japanese kids playing around me made me think about their Indian counterparts. Again the difference being that their parents were not worried about their security at all. Next we went to a mall and some nearby shops for shopping. I was surprised to see that most of the shops are run by women as shopkeepers.

Though we are used to sayings like 'Customer is God' in India. But I think in Japan it is followed in its true sense. You can visit any shop, any no. of times, see the items on display, but even if you are going out without purchasing anything, shop keeper will treat you the same way as first when you entered the shop.

No. of shops selling women product clearly outnumber the shops selling products for men. I could feel that Japan is more of a woman dominated country. Even before going there, I heard that it is safe for girls in Japan and I could actually see the difference there itself. There is hardly any crime, women can roam around even at 2:00 AM, even if you forget to lock your house and you return a few hours or days later, there is no need to worry.

Most of us have heard about Japanese technology and their punctuality. I could see it as I found that trains and buses are almost on time. People reach their workplaces before time and as soon as working hours start, they are ready to start their work. For a person working on part time job (Getting paid per hour), being late by even 2 minutes is considered as being absent for Ist half hour. In technology we all are used to Japanese companies Sony, Toshiba, Honda. Mitsubishi and Toyota etc.

Though I visited a lot of places there, but would like to highlight one specific part of the journey and that is my visit to Tokyo with two special mentions 'Epson Aqua Stadium' and Disney Land. Aqua stadium as an aquarium: you can actually pass through a passage with fishes and water on your 3 sides. There is also a dolphin show where dolphin performs in front of a huge audience. They were dancing to the music and it was really enjoyable.

I was feeling lucky to visit my dream land Disney land. It gives you a chance to visit your childhood again and I could see people from every group age there. Again it confirmed that Japanese are fond of Cartoon characters and it's not surprising that popular cartoon characters Doremon, Shinchan were originated in Japan.

I saw artists dressed as Cinderella and her Prince Mickey and Mini Mouse, Superman were wandering around in that area. We get pictures clicked with them, shook hands with them. We enjoyed a lot of rides, few were beyond my imagination and scary as well. But in all it was once in a lifetime experience which is unforgettable.

Geet
B.A. III
2513

The world is a stage

The world is a stage
Where every individual has a role to play
Enters the world like a saint,
Is the answer to mother's prayers and wait.
Grows up a little
Becomes a good playmate.
Enters the teenage
And becomes the reason behind parents rage.
Then in an adult
Who believes he is mature enough.
Takes his decisions
And decides for others
Plays the role of husband, brother and father,
But now the role has come to an end
And he can no more defend
So he exits with the happy quote
That 'The life is a lovely boat.'

Pooja Bhardwaj
B.A. IInd Year
1167

PAPER

I am a piece of paper
People use to write on me
and I get polluted
By the letters
which look like ?
a colony of trees
If the words are important
Then I will live long
But if not
I will be in the dustbin,
counting my last time.

Sonali
B.Sc (I) (NM)
2520

'Jokes'

Teacher: Define Mathematics
Rahul: A war between duster and chalk on the blackboard.

Ramu: Why did you cut a hole in the umbrella?
Hari: So. that I can see when it stops raining.

Teacher: you are minister's son still you failed three times why?
Student:Sir, my father stopped changing parties so I also stopped changing my class.

Teacher: Subhadeep, what is the shape of the earth?
Subhadeep: It is round teacher
Teacher: Give me three reasons to support your answer.
Subhadeep: Mummy says it is round, daddy says it is round as so do you, teacher.

HOW TO SPEED READ ?

Let's start with basics.

Most people read word by word, and often say the words to themselves using the voices in their heads. Why do we do this? I fully blame kindergarten reading programs, which force children to read out loud both in class and at home. Who thought of this?

Anyway, that is not at all the most effective way to read in terms of both speed and comprehension. Therefore, the very first thing you need to do is eliminate the voice inside your head. This took me one hour to do.

Don't Limit You Reading Speed By Your Speaking Speed.

This process really sucks, by the way. If you really believe that the voice inside your head is your enemy, you will probably be frustrated for the first half of your journey. You may get better, then get a snack, then come back to continue your training and realize you are back where your started. Feelings of hopelessness will arise. But dont' give up. Be a man/woman and push on.

A tip for those who will have trouble not subvocalising to hold your breath as you read. Because we breathe as we read, even when we do it silently, since we are used to speaking the words aloud. Breathe in when you need to. Once you feel that you have eliminated that voice, try to return to normal breathing Remember to use breath holding whenever you are having trouble.

Once you have eliminated voice, you have unlocked a huge amount of potential in terms of your reading speed. Since you are reading with your eyes, try reading 2-3 words at a time and then move up comfortably. Trust me, if you dont skip voice elimination you will make progress fast. Hopefully this helps someone, it really helped me. After couple of days, I was able to read 2 to 5 pages per minute. I am not exaggerating. Do this actively and you'll build your own rhythm. Things you can learn in an hour which will be useful for the rest of your life.

Read With Your Eyes Only

Whatever you do just don't use that voice inside your head. As you learn to do this part go ahead and read word by word an go over the lines with your finger. Just work on eliminating that voice why ?

Because you cannot say words nearly as fast as you can comprehend them, believe it or not.

Shilpa
B.A. II, 1153

THE KIND BEGGAR

He was a beggar, had been regularly coming for over a decade hollering in the name of God and requesting alms. Most of the people used to dispel him with contempt. However some would give him some coins and some left over eatables. He would accept those with folded hands, sit patiently and eat, and afterwards before leaving, used to "May God Bless All."

One day some kid girls also visited the colony requesting alms. However they didn't get much, as the beggar had already collected the daily given away. The girls visited many houses but were not given alms. On a cross road they ran into each other. One of the girls became teary and cursed him as a bane for them and that the girls had to search for a new area.

The beggar went to them smiled and gave the young girls all the coins and hollered. "May God Bless All" and went away. The beggar was never seen in the colony again.

Harigandha
B.Com II
1729

MARCH SONG

Never look behind fellows
When you are on the route
Time will come in future
To which you will suit
Whether it's scorching heat
Or winter chill;
Never look back fellows
Success is waiting still
You will get fruit fellows
Whatever you have pained
You will meet the destination
None have ever gained
Right work, right time
Done with good will
Brings cherished fruit fellows
If done with firm will
Failures in life
Have taught many a lot;
Success by achievers
By failures got
Shirkers shirk the work
Thinking it a hard lot;
While achievers join the work
Thinking it their lot
Either it's mountain, plateau or river
There's no word Impossible" In dictionary of achievers"

Jyoti
B.Sc (I)
2509

SLOGANS

If you do not stand for
Something you will fall for anything.

We learn only form our mistakes
Not from our success.

Every man is the architect
Of his own future.

Education is the manifestation
Of the perfection in man.

Cowards die many times,
But a brave man dies once only.

Faith will move mountains.
You cannot cross the sea merely,
By standing and staring at the water.

Tomorrow's job depends upon
Today's performance and not that
of yesterday's.

Genius is nothing more,
than inflamed enthusiasm.

Nothing great was ever
achieved without enthusiasm.

There are really no mistakes
In life only lessons.

A man is a man to the extent,
That he sticks by his word.

The greatest blessing of life is that,
We can love and be loved.

Try to go a step ahead
Whatever people expected you to end up.

Get up one more time than
If you are knocked down.

A harmful truth is better
than a useful life

A wise man knows everything,
A shrewd man knows every body.

There are no gains without pains.

Genius is one percent,
Inspiration and ninety nine percent perspiration

Strength is life,
Weakness is death.

Khushboo
B.A. Ist (2nd Sem.)
115

O! TEACHER

Teachers are wonderful person who drive away all our tension. It is they who show us light and make our future bright. From them we learn discipline and virtue line by line. Our good habits they mould, they may love or scold. They are the shining stars with fragrance as sweet as flowers. Guiding us on the right path with their mighty love and supervision. Wonderful people are these teachers. To us they are friends and preachers. Under their guidance we become gold. Though they may be young or old. We pray for them one and all. On whom God's grace may always fall.

Girija
B.Sc (Ist Year)
2529

GUESS THE CITY

1.	Water Village	जलगांव
2.	Snake City	नागपुर
3.	Opinion City	रायपुर
4.	Ear City	कानपुर
5.	Moon City	चन्द्रपुर
6.	By-By City	टाटा नगर
7.	Victory City	विजय नगर
8.	Expression Town	भाव नगर
9.	Mister Town	श्री नगर
10.	40 Village	चालीसा गाँव
11.	Opinion Fort	रायगढ़
12.	New Village	नया गाँव
13.	God, Fort	रामगढ़
14.	God's Door	हरिद्वार
15.	Face	सूरत
16.	Went	गया जी
17.	Multiply	गुणा
18.	Man Lion Fort	नरसिंहगढ़
19.	And Colour after	औरंगाबाद
20.	Money after	धनबाद
21.	Nector Head	अमृतसर
22.	Saint Hair	ऋषिकेश
23.	Duaghter Miss	कन्याकुमारी
24.	I. The After	अहमदाबाद
25.	Great Strong God	महाबलेश्वर
26.	Eye Pond	नैनीताल
27.	Elephant City	हस्तिनापुर
28.	Queen Field	रानीगंज
29.	King House	राजगृह
30.	New-City	नवाशहर
31.	Big The	बड़ौदी
32.	Great Country	महाराष्ट्र
33.	Answer State	उत्तर प्रदेश

34	Cloud House	मेघालय
35	Precious Stone City	मणिपुर
36	Religion City	धर्मपुर
37	Head city	सिरसा
38	Blue Snake	नीलकण्ठ
39	Intelligent City	होशियारपुर
40	Star Baldness	तारागंज
41	Hand Drama	कर्नाटक
42	Brave Fort	बहादुरगढ़
43	Five Rivers	पंजाब
44	Cow mouth	गौमुख
45	Middle State	मध्यप्रदेश
46	King Place	राजस्थान
47	Brick City	ईटानगर
48	Sun City	सूरजपुर
49	'U' Jain	उज्जैन
50	Sh. Pious River City	श्री गंगानगर
51	Jasmine City	चम्पानगरी
52	Lotus City	कमला नगर
53	World God City	जगन्नाथपुरी
54	Seed City	बीजापुर
55	Water Fall	पानीपत
56	Capsicum	शिमला
57	Loud City	कोलहापुर / उल्लास नगर
58	Joyfull City	आनंदविहार
59	Happy	सुन्दर नगर
60	Three Husband	त्रीपति बाला जी
61	Puppy Village	पिल्लू खेड़ा
62	New Heart-He/She	नई दिल्ली
63	36 Fort	छत्तीसगढ़
64	Rise City	उदयपुर
65	Mango Village	आमगांव / आमपाली

Shilpa Jain
B.A. IInd Yr., 1208

HOW TO BE SUCCESSFUL

We all have some dreams and desires. We all have some aim in life. But it is a question before us how to achieve our goals or how to be successful in life ? First of all, we should form our goals and we should have courage to fulfil these goals. We must be dedicated to our work which is most important to achieve our aims. Dedication makes us to love our dreams. We should continue our study and don't waste our valuable time. This time flows very speedily, we should be punctual. If we waste away this valuable time, there will be nothing for future. So, it is said 'Today is the most important day'. We should keep it in mind.

The next most important thing is patience which keeps us steady to our goals. We must be inquisitive every time so that we can learn more and more. Gandhi Ji said, "If a man wants to learn every mistake of his can teach him something." We should be disciplined and should have positive thinking. Sometimes we may have failed but positive thinking and patience give us power and confidence at that time. And the last point we should keep to heart is every time we should have trust in God. God is the final judge of our success.
So, we should be thankful to God.

Punita Lohan
B.A. 3rd
2126

CUTENESS OF WIND

O Wind! You are so soft
O Wind! You are so cute.
You blow on the mountains
And enjoy the falling of ice
Ice cools you and
You cool the whole world
O Wind! You blow on the seas
And enjoy the waves there
Sea waves wet you and
You wet the whole world.
O Wind! You blow through the gardens
And enjoy the sweetness of smell
Flowers make you sweet smelling and
You make the whole world sweet smelling
O Wind! You are so soft.
O Wind! You are so cute.

Punita Lohan
B.A. 3rd
2126

SECRET OF SUCCESS

What is the secret of success ? I found its answer in my room. "Push" Said the button, " Be cool" said the fan, " Be up to date" said the calendar, " Be in time" said the clock, "Reflect before you act" said the mirror, "Make light your difficulties" Said the lamp, "Reject bad ideas" said the ventilator.

Shilpa
B.Sc. Ist Year
2523

WHICH ONE WINS?

An old Cherokee told his grandson.
"My son, there's a battle between two wolves inside us all.

One is Evil
It's anger, jealousy, greed inferiority, lies, ego.

The other is Good.
It's joy, peace, love, hope, kindness, truth.

The boy thought about it, and asked.
"Grandfather, which wolf wins."?

The old man quietly replied.
"The one you feed."

Shilpa
B.A. (Ilyr)
1153

ALL IZZ WELL

Tension and tension is every where.
No happiness any where,
Businessman are busy with computers,
Student are busy with tutors.
In life there is no comedy.
Everywhere there is a tragedy.
Day by day tension is increasing
Mind is restless and joy is decreasing
Student have tension for exams.
Commuters face traffic jams.
Tension are till evening from morning.
In the form of water shortage
And global warming.
Tension is already more don't have it.
Happiness is less, Grab it.
Joy is everywhere if you look around.
It is in the sky, it is on the Ground.
So, whenever tension rings your door bell,
Be happy and say, "O Bhaiya All is Well."

Shvita
B.Sc. (Ist Year) A
2515

MY LIFE

Life of Girl is miserable.
She has very few faults.
But she is beaten by all
She wants to do something good
But her thoughts are cut like a wood
She wants to become something good in life.
But she is forced to become a house wife.
She wished to have same freedom as a boy.
But her face is the same as toy.
She want to live joy fully.
But she is treated very badly.
If you are able to understand her heart's pain.
You are said to have something gained.

"TEACHER"

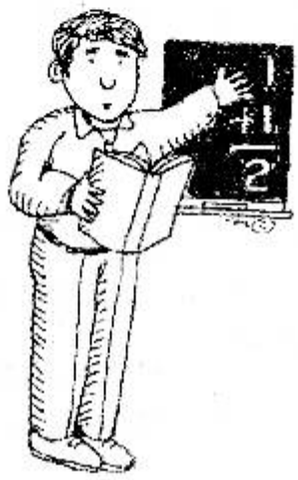

Teacher is a potter,
Student is clay,
He has the power to make them
Shine like sun rays.
He is the messengers of God.
He knows our limitations &
Teaches us without hesitation
He teaches us to learn and write,
He tells us about the mysteries of life
He is honest he is polite
He is one who gives us light.
Like a candle in the night.
At last I say, teacher is like Christ
He gives us knowledge & light.

Monika Mor
B.Sc. Ist Year (B)
2516

A COLLEGE LIFE

As a college freshman, I expect a lof of things.
Aside from picking courses,
Studying, talking jargon or gibberish,
Talking about a job for the future,
There are a lot of things to consider.
You are now grown up
And it's time you explore
Everything and have some experiences
Learning a lot in this age was such
A blast enjoyment which gives pleasure or keen satisfaction
But of course we still need to be careful.
You will never know what you have until you lost it.

Sakshi Bhardwaj
B.Sc Ist Yr.
2522

INTERESTING FACTS

If there is a Q then you (U) will follow
I mean, in all meaningful words consisting
The letter q, then the letter u will follow it
e.q. Queue, cheque, quit etc.

There are some words which don't contain
Any vowel like try, why, fry etc. but there is
No word without vowel sound.

There is a word in which first 2 letters stand
For a man, three for a woman, four for a brave
Man & the whole stands for a brave woman.
Could you guess the word? Its.....Yeh a
Heroine.

'T' is an island could you explain how it is
An island ? T is in the middle of (WATER)

A is the father of B, but B is not the son of A who is 'B'?
Daughter
$2^5 x 9^2 = 2592$ Isn't it strange. [$2^5=32$, $9^2=81$]
Any more examples. [$32 x 81 = 2592$]

Observe the pattern
$12^2 = 144$ $21^2 = 441$
$13^2 = 169$ $31^2 = 961$
He is in between two mats with an I.C.S.
Degree who is he ? MAT HE MATICS (Mathematics)

Jyoti
B.Sc. Ist yr.
2509

I LOVE BEING A GIRL CHILD

I am happy because I am a girl
Because I have my hair to curl.
People prefer a boy
But there is no joy in being a boy.
I think girls are the loved ones.
Because they have more fun.
People should understand these things
Why these days charities are open which
Tell us to expect girl more than a boy
And my dream is that to keep the female flag fluttering high.

Pooja Bhardwaj
B.A. IInd Yr
1167

WHO AM I?

No, I am not a Hindu
Not a muslim either
Do not take me for a sikh,
I am a christan neither
"Life is my name
Humanity is my game
Love is my creed
Honesty is my deed."

TEACHERS VS STUDENTS

When we are in class,
We are students
When they are in class
They are teachers
When we write over our writing,
It is overwriting
When they write over our writing
It is correction
When we gather to gossip
It is gossip
When they gather to gossip
It is meeting.
When we are found in the library
It is bunking
When they are found in library
It is research work,
When we copy from others,
It is cheating.
When they copy from others
It is quoting.
When we don't do our work on time
We are lazy
When they don't do their work on time
They are busy
When we think in classroom
We are day dreamers
When they think in classroom
They are philosopher.

Rinki Jangra
B.Sc. Ist Yr.I, 2531

ENCOURAGEMENT DROPS

Life never turns the way we want,
But we live it with the best way we can,
There's no perfect life, But we can fill
It with "Perfect Moments'

Always smile in any problem,
It might not make your problems
Disappear but
It will stop people from asking
"What's Wrong with you...?"

When your signature are changing to
Your autograph, then think.
You are on the track of 'success'

The winners of life's game are not those
Who have never tasted failure but
Those who have tasted failure again
And again but 'Never Give Up..'

You can't fall if you don't climb,
But there's no joy in living your
Whole life on the 'Ground'

Amaging Facts:
Maszid:6 Words
Church:6 Words
Mandir:6 Words
&
Quran:5 Words
Bible:5 Words
Geeta:5 Words
They all say the same thing:6-5–1
That's why 'God is one'

Versha
B.A. IInd Yr
2244

VALUE OF ENGLISH

The value of English is very great,
Never diminish its value at any rae.
English opens knowledge gate,
He can learn English who has traits.
Seekers of English go to states
But dullers in English always wait
An intelligent student in English is never late,
For the teachers he always stands and waits.

Shilpa
B.Sc. Ist Yr
2523

CHEMISTRY IN MY LIFE

If you find chemistry a bore
Take a few drops of $H_2 SO_4$
If you want to feel free and light
Take a bit of potassium cynanide
If you want to go to hell
Drink a bottle of HCL.
If you want to get rid of your life.
Take a little dose of $P_2 O_5$
If you want to make some bricks
Mix sand with $C_2 H_6$
If you want to lose your weight
Smell a little of $C_2 H_8$
If you want to catch a hen
Smell a little quantiny of $C_4 H_{10}$
Please don't go to bed
Otherwise every bit of chemistry
Will come out of your head

Sanny Nehra
B.Sc. Ist Yr
2545

WHAT IS LIFE?

Life is a Goal	.....	Achieve it.
Life is a Challenge	.....	Meet it.
Life is a Gift	.....	Accept It.
Life is Duty	.....	Perform it.
Life is a Game	.....	Play it.
Life is a Mystery	.....	Unfold it.
Life is a Song	.....	sing it.
Life is a Promise	.....	Fulfil it.
Life is Love	.....	Enjoy it.
Life is Spirit	.....	Realise it.
Life is a Struggle	.....	Fight it.
Life is a Puzzle	.....	Solve it.
Life is an Adventure	.....	Dare it.
Life is an Opportunity	.....	Take it.

Renu Duhan
B.A. Ist Yr
170

DON'T FORGET AND THINK

Don't forget time is the 1st prize for us. So, never forget the importance of time.
Don't forget the better time to begin everything is present time.
Don't forget your confidence is your dare. So, never loose your self confidence and patience.
Don't forget I will win not immediately but definitely.
Don't' forget nothing is impossible and something is better than nothing.
Don't think that God is not with you. God is always with everyone. God helps them who help themselves.
Don't think that you can't achieve your aim. Always keep a goal in your eyes and a spirit to achieve that.
Don't think study is not for knowledge
It would be used in your practical life also.
Don't forget that the most important person in our life is that who is with you at present time.

Ritu Chahal
B.A. Ist Yr
158

MATHEMATICS IS LIFE

Life's mathematics is something like this (+) add friends (-) subtract enemies (÷) divide sorrows and (x) multiply joy.
Simple calculation
Alphabets used-
ABCDEFGHIJKLM
NOPQRSTUVWXYZ
Marks allotted
12345678910111213 ...26
Alphabets Used
D+I++S+C+I+P+L+I+N+E=Discipline
Marks allotted
4+9+19+3+9+16+12+9+14+5=100%
It may be any field, the weightage discipline carries is always 100%.

MONEY

With money you can
With money you can build a temple not the lord.
With money you can build a house not the home.
With money you can have food not the appetite
With money you can have amusement not diligence
With money you can have books but not knowledge
With money you can have everything not life.

Shweta Pahal
B.A. Ist
249

DIL CHAHTA HAI

Kbi Kbi Dil Chahta h kuch esa ho jaye.....
Paper ho per Result na aye
Classes ho per teacher na aye
Bus me baithe par college na jaye
Picnic jaye or wapis na aye
Hafte me 3din ho or fir Sunday aye.....
Sote rahe dinbhar sham ko ghumne jaye
Hum bilkul na padhe or pas ho jaye
Sab dost sath rhe or chuttiyan manaye
Jise chahte h dil se vo apna ho jaya
Barish me bhige or zor se gaye.....
Duniya ko bhul fir bacche ban jaye
Bheed se dur ek duniya banae
Sari zindagi bus yahi kate jaye
Kash ye sare sapne sach ho jaye
Kbi kbi dil chahte h kuch esa ho jaye..
MERE SARE DOST MERE
PAAS WAPAS AA JAYE.

Nisha Sharan
B.A. IInd Year
1138

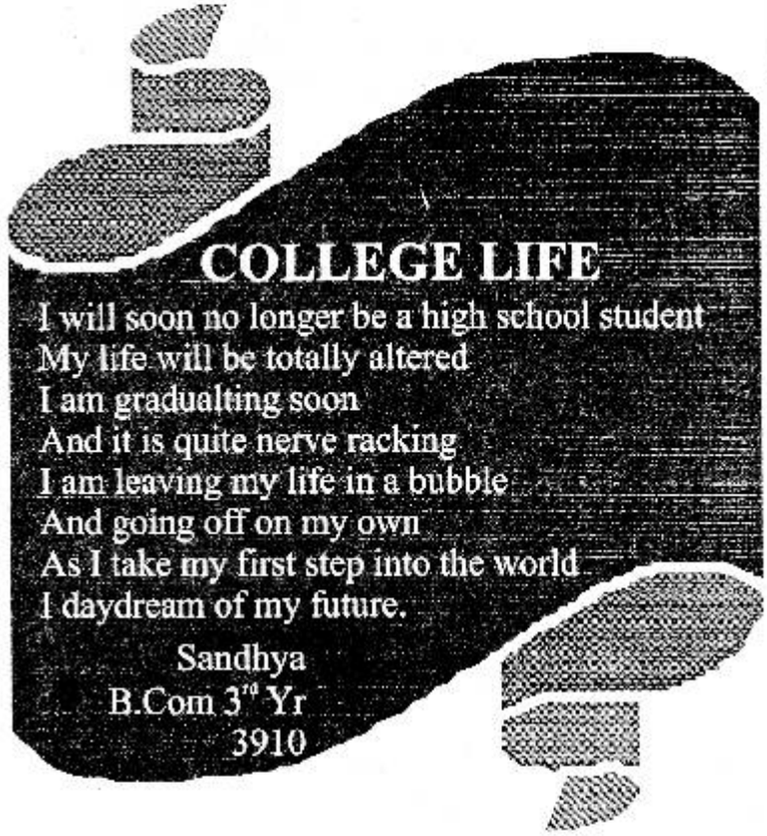

TEACHER'S LOVE

The clarity you gave to me,
It shone like Angel rays
Like water rushed on golden sands,
And crashed along the bays,

The questions deep within my heart
Confused my humble mind,
Yet when you spoke your words aloud
It seemed, no longer I was blind.

The answers call came flooding in,
They touched my inner soul,
The knowledge that you gave to me
Within my heart I hold.

I understand that the events
That troubled me somehow
Was nothing to be frightened of,
Instead I should be proud.

We thank you mam most graciously
These words I say aloud,
For the clarity you've given me.
Has made me feel quite proud.

Sandhya
B.Com 3rd Yr
3910

WORDS TO LIVE BY

* Its never too late for an apology.
* When you're with new friends, don't just talk about old friends.
* Don't make a scene
* Just because you can, doesn't mean you should.
* Make time for your mom on your birthday, its her special day too!
* If you have made your point, stop talking.
* If you offer help, don't quit until the job is done.
* Admit it when you are wrong.
* If you don't understand ask before its too late.
* Forgive yourself for your mistakes.
* Its never too late to learn something
* Your dance moves might not be the best, but trust me, making a fool out of yourself is more fun than sitting on the bench alone.
* Don't grow up too fast.
* Be curious.
* If you hate doing it, then stop it.
* Don't try to read anyone's mind. Don't make them try to read yours. Communicate.
* If you love a flower don't pick it up.
  Because if you pick it up, it dies. So let it be. Love is not about possession its about appreciation.
* Learn something from every person you meet.
* Always try to find the good in others.
* It is never a bad idea to make someone smile.

Shilpa
B.A. IInd Yr
1153

NATURE

Nature plays a very vital role in a man's life. Nature is a true guide and teacher of a man. As a teacher, nature will bring about an all around development in the personality of a man. If one lives in the lap of nature, one will have a watch on his/her every action and deed among the rocks and plains the earth and the sky and in a glade and a bower. One will enjoy fully in the company of nature. He/she will learn the happiness of a supportive fawn, breathe the sweet fragrance of the flowers and will enjoy the calmnless of insensate things. Nature gives him/her the freedom of the cloud, flexibility of the bending willow trees, grace of motions of storm which will teach him/her o have sympathy for everybody and everything. In the company of nature one will watch the beautiful scenes and sights. One will enjoy the beauty of midnight stars and sweetness of murmuring rivers. Nature will give one both physical charm and inward beauty.

Shilpa Jain
B.A. IInd , 1208

WHAT SHOULD I BE WHEN I GROW UP ???

You have heard it before. You can be anything you want to be, the sky is the limit. Some people actually do know what they want to be from a very early age. For example, Aditi, one of my neighbours, decided by the time she was in kindergarten that she would be a teacher. Now 27 Years old, she teaches high school English in Delhi. Other people grow up planning to-and actually do become pilots, nurses, dentists, fire fighters musicians and other popular careers.

Not everyone is quite so decisive or realistic. May be you have heard your friends say, "I am going to be a pro-basketball player!" Or an astronaut or even the President of India. Obviously some people grow up to be astronauts and basketball players and 43 people have grown up to be President. But most say the words without understanding how much work and dedication are required for these specialized jobs .....they are dreaming not actually career planning.

If you have no idea or even a dream of what you want to be when you grow, up you are not alone. About 25% of all college students have not declared their majors. Some 60-75% of college students change majors at least once. After college, according to the U.S. Department of Labour the average American changes careers 3 to 5 times during adulthood and may have as many as 15 jobs. In other words, even grown ups don't always know what they want to be when they grow up.....! This means that choosing your college major does not have to be a life sentence. One wise piece of advice says, "Do what you love and the money will follow." Doing what you love does not necessarily mean following a traditional career path. In fact, looking beyond the obvious job choices may lead to your dream career. May be you love to garden. That doesn't mean your only option is to open a vegetable stand. You might harvest and attractively package seeds to sell online.

Are you the family photographer ? Instead of coaxing clinets to "say cheese" at a traditional photography studio, Shreya is a food photographer for a magazine. She artfully arranges food to accompany recipes of advertisements.

If you love horses and also enjoy helping people, hippotherapy is a fascinating emerging field, where clients receive mental health treatments while riding a horse. The movement of the horse affects the sensory and nervous systems and can increase the effectivenses of various therapeutic practices including occupational speech and physical therapy.

In other words, that limitless sky really is the limit. You really can be anything you are willing to work for.....and then when you change your mind, you can be something else.....?

Diksha Setia
B.A. Ist Yr
203

"TIME IS PRECIOUS"

Imagine there is a bank that credits your account each morning with Rs. 86,400. It caries over no balance from day to day. Every 'Evening' deletes whatever part of the balance you failed to use during the day.

Each of us has such a 'bank'. It's name is 'Time'. Every morning. It credits you with 86,400 seconds. Every night it writes off, as lost, whatever of this you have failed to invest to good purpose. It carries our no balance. It allows no overdrafts.

Each day it open a new account for you. Each night it burns the remains of the day. If you fail to use the day's deposits, the loss is yours there is no going back. There is no drawing against the 'Tomorrow' You must live in present on today's deposits. Invest it so as to get from it the utmost in health,
Happiness and success!
'The clock is running
Make the most of today."

Preety Soni (Verma)
B.A. Ist
191

HANDSOME IS THAT HANDSOME DOES

The proverb 'Handsome is that handsome does'
Emphasizes the importance of noble deeds
Over physical appearance. Phsycial beauty
Is very short lived. It is only a nine days.
Wonder. It is as shortlived as the shadow
Of a cloud. Rosy cheeks and red lips soon
Lose their charm. Curly bleak birght
Hair soon turn grey. Bright eyes become
Dim. Charming face becomes wrinkled.
But noble and handsome deeds shine
Even after a man's death. Some people
Get big victories in the battle field.
They win glory and honour by killing
Thousands of men. They become heroes
For some time. But they are soon forgotten
The only thing that lasts is the noble
And just deeds. These spread their fragrance
Even after death. A life of virture shines
More and more as time passes. We
Remember Mahatma Gandhi, Jawahar Lal Nehru
Sardar Patel, Subhash Bose and for their handsome
Appearances but for their noble
Deeds. Therefore, we should strive for noble and
Handsome deeds because real beauty lies
In them and not in handsome appearance.

Sandhya
B.Com 3rd Yr
3910

OUR LIFE

God is great examiner,
We are all students
This life is the answer book.
On which we take the examination
This world is a hall
The time allowed is only three hours.
The first hour bell rings in childhood
Second in youth and third in old age.
The bell of last hour
Is rung by the messegner of God.
The examination is over
The copy is snatched
Life here meets at end
Do not try to cheat
This examination is everywhere
You may lose marks
By wasting time & Writing nothing
If we fail, we come back
To the same role.
If we pass, we go to the heaven & return no more.

Sandhya
B.Com 3rd Yr
3910

SOME AMAZING THOUGHT-PROVOKING QUOTES

I always wonder why birds stay in
The same place when they can fly
Anywhere on earth.
Then I ask myself the same questions.

Everyone is a genius, but if you judge
A fish by its ability to climb a tree,
It will live its whole life believing
That it is stupid.

The reason we struggle with insecurity
Is because we compare our behind the
Scenes with everyone else's highlight real.
Somewhere in the world someone is training
When you are not. And whenever you will
Meet that person you will lose.

Do not pray for a easy life, pray for
The strength to endure a difficult one.

Take risks. If you win, you'll be
Happy. If you lose you'll be wise.

Two choices,either suffer the pain of
Discipline or the pain of regret.

Shilpa
B.A. 2nd Yr
1153

हिन्दी अनुभाग

प्राध्यापिका सम्पादिका
डॉ0 पूनम मोर

छात्र–सम्पादिका
कु0 पुनीता
बी.ए. तृतीय 2126

विषयानुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय	डॉ पूनम गोर (प्राध्यापिका हिन्दी)
2.	बोधकथा	डॉ0 सुधा मल्होत्रा (प्राध्यापिका हिन्दी)
3.	आत्मिक एवं नैतिक उत्थान में संगीत की भूमिका	डॉ0 क्यूटी (एसिसटेंट प्रोफेसर म्यूजिक)
4.	आज की भारीतय नारी	संध्या, बी.काम. तृतीय, रोल नं.3910
5.	नदी की आत्मकथा	संध्या, बी.काम. तृतीय, रोल नं.3910
6.	मेरी कहानी, मेरी जबानी	आरती बंसल, बी.ए. द्वितीय, रोल नं.1105
7.	चुटकुले	कविता बूरा, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं.2511
8.	पढ़ी–लिखी बेरोजगारी	कविता बूरा, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं.2511
9.	प्रेरक विन्दु	कविता बूरा, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं.2511
10.	हँसगुल्ले	सीमा, बी.ए. द्वितीय, रोल नं. 1145
11.	माँ तुझे प्रणाम	साक्षी जैन, बी.काम., रोल नं. 1648
12.	जन्म दिन मनाएँ दीपक जलाकर, न कि बुझाकर	वर्षा, बी.ए. तृतीय, रोल नं.2244
13.	सर्वोत्तम विचार	मोनिका यादव, बी.ए. प्रथम, रोल नं.102
14.	विशेष महत्व	मोनिका यादव, बी.ए. प्रथम, रोल नं.102
15.	मेरी माँ	शालू, बी.ए. द्वितीय, रोल नं. 1219
16.	मजेदार चुटकुले	पिंकी, बी.ए. द्वितीय, रोल नं.1169
17.	माँ	निशा सहारण, बी.ए. द्वितीय, रोल नं.1138
18.	श्रेष्ठ मानव	निशा सहारण, बी.ए. द्वितीय, रोल नं.1138
19.	देश मुक्त हो गया, मुक्त हम हुए नहीं	शिल्पा, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं. 2523
20.	रोने वालों का कोई साथ नहीं देता	शिल्पा जैन, बी.ए. द्वितीय, रोल नं.1208
21.	अनगोल मोती	श्वेता पहल, बी.ए. प्रथम, रोल नं.249
22.	हँसना मना है	
23.	अनमोल वचन	पिंकी शर्मा, बी.ए. द्वितीय, रोल नं. 1117
24.	जिन्दगी	राजबाला शर्मा, बी.ए. प्रथम, रोल नं. 391
25.	मार गई! मार गई!	रेणु दूहन, बी.ए. प्रथम, रोल नं. 179
26.	माँ	वर्षा, बी.ए. तृतीय, रोल नं. 2244
27.	खाली–खाली जहान	ज्योति सैनी, बी.ए. तृतीय, रोल नं.2245
28.	नारी अबला नहीं सबला	आरती बंसल, बी.ए. द्वितीय, रोल नं.1105
29.	त्रासदी	पिंकी शर्मा, बी.ए., रोल नं. 1117
30.	अंग्रेजी का कमाल	रेखा शर्मा, बी.ए., द्वितीय, रोल नं. 1126
31.	गब्बर	राजबाला, बी.ए. प्रथम, रोल नं. 391
32.	मुश्किलें	रीतू, बी.ए. प्रथम, रोल नं. 158
33.	परीक्षा बनाम क्रिकेट	कोमल यादव, बी.ए., प्रथम, रोल नं.155
34.	माता–पिता	नीतू, बी.ए. प्रथम, रोल नं. 280
35.	मेरा हिन्दू कन्या महाविद्यालय	जरीना खान, बी.ए., तृतीय, रोल नं.2133
36.	सादगी ही जीवन है	जरीना खान, बी.ए., तृतीय, रोल नं.2133
37.	चुटकुले	राजबाला, बी.ए., प्रथम, रोल नं.391
38.	जरा सोचिए	जरीना खान, बी.ए., तृतीय, रोल नं.2133
39.	अपना घर	जरीना खान, बी.ए., तृतीय, रोल नं.2133

40.	जिस दिन तुम हमें	ज्योति सैनी, बी.ए. तृतीय वर्ष, रोल नं 2245
41.	नाम अमर हो जाएगा	रीतू, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं.2528
42.	शिक्षक	मीनाक्षी, बी.काम. द्वितीय, रोल नं. 1749
43.	इस धरती पर क्या होगा	गिरिजा, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं. 2529
44.	आओ, परिवर्तन लाएँ	खुशबू, बी.ए., प्रथम, रोल नं.115
45.	हँसगुल्ले	सीमा, बी.ए. द्वितीय, रोल नं. 1145
46.	आधुनिक जीवन	खुशबू, बी.ए., प्रथम, रोल नं.115
47.	पहेलियाँ	रीतू, बी.एस.सी. प्रथम
48.	अमृत वचन	किरण ढुल, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं. 2514
49.	जीवन	किरण ढुल, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं. 2514
50.	मोहे बिटिया न देना	नीतू, बी.ए., प्रथम, रोल नं.303
51.	बारहमासा	सोनाली, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं.2520
52.	सब्जी बाजार	सोनाली, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं.2520
53.	सब्जी मंडी में मची धूम	सोनाली, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं.2520
54.	चुटकुले	सोनाली, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं.2520
55.	अजन्मी बिटिया की अभिलाषा	महक, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1172
56.	सुन माँ	महक, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1172
57.	पहेलियाँ	पूजा, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं. 2532
58.	बेचारी लड़कियाँ	नीतू रानी, बी.ए. प्रथम, रोल नं. 157
59.	अमृत वाणी	पूजा सैनी, बी.ए., तृतीय, रोल नं.2289
60.	आज के विद्यार्थी	नीतू रानी, बी.ए. प्रथम, रोल नं. 157
61.	महाक्रांति का गुरूवर ने फिर से बिगुल बजाया है	पूजा सैनी, बी.ए., तृतीय, रोल नं.2289
62.	बेटी का अनोखा बयान	हिमांशी, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1232
63.	वक्त की पुकार	हिमांशी, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1232
64.	बेटी बचाओ	रीचा जैन, बी.ए. द्वितीय, रोल नं. 1102
65.	संजोए रखो	सीमा सरोहा, बी.ए., तृतीय, रोल नं.2282
66.	मानव जीवन	पूजा भारद्वाज, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1167
67.	हो रहा भारत निर्माण	पिंकी शर्मा, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1117
68.	योग्यता	सुशीला अहलावत, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1148
69.	शायरी	मोनिका मोर, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं.2516
70.	आज का विद्यार्थी	मोनिका मोर, बी.एस.सी. प्रथम, रोल नं.2516
71.	बेटियों को भी दो सम्मान	मीनू रेढू, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1137
72.	अनपढ़ का जमाना	मीनू रेढू, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1137
73.	गलती	मीनू रेढू, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1137
74.	टेस्ट ने छीना रेस्ट	मीनू रेढू, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1137
75.	माँ–बाप	काजल रंगा, बी.ए. द्वितीय वर्ष, रोल नं. 1196
76.	कॉलेज के वे सुहावने पल	भावना शर्मा, बी.ए., तृतीय, रोल नं.2150
77.	समाज में लड़की	रेणू, बी.ए., द्वितीय, रोल नं. 1136
78.	तीन चीजें	पूजा सैनी, बी. रोल नं. 2289
79.	सफलता का रहस्य	किरण ढुल, बी.एस.सी., रोल नं. 2514
80.	बेटियां	मीनू रेढू, बी.ए., द्वितीय, रोल नं.1137

सम्पादकीय

शिक्षा हमें सभ्य बनाती है, जागरूक बनाती है, अपने चतुर्दिक परिवेश के प्रति संवेदनशील बनाती है। शिक्षा ही है जो हमें हमारे अधिकारों के प्रति सचेत करती है, हमारी तर्क--बुद्धि का विकास करती है, हमारे चिन्तन को प्रौढ़ बनाती है। निः सन्देह आज की शिक्षा बहुमुखी हो गई है। आज की शिक्षा किताबी ज्ञान तक सीमित न रहकर विविधमुखी हो गई है। खेल–कूद, सांस्कृतिक गतिविधियाँ एवं लेखन शिक्षा के महत्वपूर्ण अंग बनते जा रहे हैं। जहाँ तक लेखन की बात है, वह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य सहज ही अपने भावों, विचारों एवं संवेदनाओं को मूर्त रूप प्रदान करता है। मन में उमड़ने वाले भाव व विचार जब कविता या लेख के रूप में लिपिबद्घ होते हैं, तो अनायास पाठक के हृदय को आंदोलित कर देते हैं। लेखन के महत्व एवं आज की शिक्षा की इस अनिवार्यता को दृष्टिगत कर प्रतिवर्ष कॉलेज पत्रिका प्रकाशित की जाती है। वस्तुतः महाविद्यालयी पत्रिका अनेक छात्राओं के छोटे–बड़े अनुभवों का जीवन्त रूप होती है। यह अत्यन्त सराहनीय है कि इस छोटे–से प्लेटफॉर्म के माध्यम से छात्राएँ लेखन की दिशा में कदम बढ़ा रही हैं। छात्राओं के यही साधरण से प्रयास उन्हें भविष्य में श्रेष्ठ लेखन की ओर अग्रसर करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

डॉ० पूनम मोर
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी

बोधकथा

एक बार एक साधु एक शहर में पहुँचे। शहर घूमने के पश्चात् उन्होंने शहर के बाहर जाने वाले मार्ग पर धूनी रमाई। धीरे–धीरे लोगों का आना–जाना बढ़ने लगा। शहर से बाहर जाने वाले इसी मार्ग पर आगे चलकर एक वेश्या का भी कोठा था। जो भी संध्या समय वेश्या के यहाँ जाता, वह साधु के धूनी रमाने के स्थान के सामने से गुजरता। वेश्या को शहर जाने के लिए साधु के आगे से जाना पड़ता। वेश्या जब भी वहाँ से गुजरती, उसके मन में बड़ी ग्लानि होती सोचती कैसा पवित्र जीवन है। ईश भजन में कितनी शक्ति है, तभी तो यह साधु इतने कम साधनों में भी, कितना सुखी तथा आनंदित है। मैं अपार साधनों का उपभोग करते हुए भी, कितना नकली जीवन जी रही हूँ।

उधर साधु देखता कि इस वेश्या के कितने ठाठ है, बड़े–बड़े रईस लोग इसके द्वार पर आते हैं। इसका जीवन कितना सुखी है, इसके एक संकेत पर वे कितना कुछ लुटाते है। साधु महाराज की साधना में साधनों का आकर्षण एक विघ्न डालने लगा। अब उनका 'भगवान का चिंतन' तो छूट गया। हर समय वेश्या के जीवन के सुखों का ध्यान करने लगा। अब उनका मन समाधि में स्थिर न हो पाता था।

धीरे–धीरे वेश्या साधु के जीवन से इतनी प्रभावित हुई कि उसका मन वेश्याकार्य से उचाट होने लगा। उसे लगा साधनों के उपभोग में सुख नहीं, अन्ततः दुख ही छिपे हैं। उचाट मन से वेश्यागिरी कितने दिन चलती। धीरे–धीरे वेश्यागामियों की संख्या घटने लगी और वेश्या रामभक्ति की ओर उन्मुख होने लगी। उसे जो आनंद तथा संतोष भक्ति में मिलने लगा, तो सारी दुनिया ही मानो भूल गई।

दूसरी ओर, साधु की इच्छाएँ निरंतर बढ़ती जा रही थीं। वे सदा भक्तों से कुछ लेने के इच्छुक रहते थे। इस प्रकार उनके चित्त में भगवान न थे, वहाँ सांसारिक साधनों की चाह थी।

संयोग की बात वेश्या और साधु का प्राणान्त एक ही दिन हुआ। जब विष्णु के पार्षद वेश्या के कोठे की तरफ गये और यम के भंयकर दूत साधु की धूनी की तरफ, तो साधु का अंगुष्ठ मात्र जीव ज़ोरों से चिल्लाया और बोला, 'अरे तुम भूल रहे हो', तुम्हे यमराज ने निश्चित ही वेश्या को ले जाने के लिये भेजा है और विष्णु के जो पार्षद वहाँ जा रहे हैं, वे मुझे लेने आये हैं। तुम दोनों एक साथ ही अपना मार्ग भूल गये हो। यमदूतों ने डाँटकर कहा–'भूल तुम मनुष्यों से होती है, हमसे नहीं'। जो तुमने किया, सो तुम्हें मिल रहा है। देखो, जरा नीचे की ओर देखो। तू शरीर से महात्मा था, तो तेरे शरीर के इर्द–गिर्द जयजयकार के नारे लग रहे है। उस पर वन्दन लेपा जा रहा है। मंदिर के पुजारी शंख और घड़ियाल के साथ उसकी आरती कर रहे है, गृहस्थ लोग पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं। बस इतने में सन्तोष मान। आखिर तू तन से ही तो संन्यासी था, इसलिए तेरे तन का उचित–आदर सत्कार हो गया। मन में तो तेरे ईर्ष्या–द्वेष बसता था, इसलिए ऐसे जीव की जो गति होनी चाहिए, उसे भोगने के लिए, अब तैयार हो जा।'

यमदूत फिर बोले,'एक बार नीचे उस वेश्या के भवन की ओर भी देख ले। वहाँ पर नौकरों ने कैसे लूट–खसोट मचा रखी है। कोई कुछ लेकर भाग रहा है, कोई कुछ। उसके तन को मिट्टी देने की किसी को भी चिन्ता नहीं है, उसका तन कैसे लावारिस–सा पड़ा है, उस मृत शरीर की कैसी दुर्गति हो रही है। वह तन से पतिता थी, तो उसके तन की गति वैसी ही हुई, लेकिन मन से तो ईश्वरपरायणा थी। वेश्या का धंधा करते हुए भी वह राग–द्वेष से ऊपर उठ, ईशभक्ति की ओर उन्मुख हो गई थी। अतः उसकी आत्मा सीधी विष्णु लोक में गई है।

साधु के जीव को अब यह बात समझ में आ गई कि पुण्यकाल केवल स्थूल कर्मों से नहीं मिलता, उसके लिए आत्मशुद्धि की आवश्यकता है। संसार में रहते हुए जो कुछ करें, वह निर्लिप्त भाव से करना चाहिए।

डॉ० सुधा
हिन्दी प्राध्यापिका

आत्मिक एवं नैतिक उत्थान में संगीत की भूमिका

मानव के अंतःकरण में उठने वाले भाव साकार स्वरूप पा जाते है तो निश्चितः किसी कला का जन्म होता है। वैदिक साहित्य में मानव कृतित्व से सम्पन्न होने वाली प्रत्येक रचना को कला कहा गया है। मानव चित्त को आंनदप्रदायक सभी चौंसठ कलाओ में केवल पाँच कलाओं को ही ललित कला की श्रेणी में रखा गया है। सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, शैक्षणिक, सौंदर्यात्मक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक–सभी दृष्टिकोणों से इन ललित कलाओं में संगीत को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। ललित कलाओं में अग्रगण्य होने का कारण संगीत में निहित लालित्य का मानव मन मस्तिष्क को तुरंत आकृष्ट करना तथा उसी आकर्षण में तल्लीन होने पर रसानुभूति की चरमोत्कृष्ट अवस्था तक पहुँचना है। इस अर्थ में संगीत का लालित्य अपने विषय के बाह्य एवं आंतरिक सौंदर्य का विश्लेषण करता है।

संगीत ईश्वर द्वारा मानव को प्रदत्त वह श्रेष्ठतम उपहार है जिसके उपयोग से मानव का इहलौकिक जीवन तो आनंदित होता ही है साथ ही साथ पारलौकिक जीवन का मार्ग भी प्रशस्त होता है। आधुनिक तनावपूर्ण वातावरण में प्रत्येक व्यक्ति शांति की खोज में अपना जीवन निरर्थक व्यस्तताओं में बिता रहा है। जबकि अज्ञानता से अविपरित वह यह भी नहीं समझ पा रहा है कि यह सुकून उसे अपने भीतर से ही प्राप्त होने वाला है। आवश्यकता है तो उसकी अन्वेषणा की और भीतर झाँकने की।

ऐसे में संगीत ही एकमात्र ऐसी संजीवनी औषधि है जो समस्त विकारों से मानव चित्त को मुक्त कराने में सक्षम है। संगीत की मधुर लहरियों से अर्थ केवल स्वर, ताल युक्त धुनों से ही नहीं, वरन सारगर्भित रूप में साधना पक्ष के प्रति आस्था उत्पन्न करने की है।

संगीत से प्राप्त आत्मिक रस से विभोर मानव–मन में नवीन चेतना तथा उत्साह का संचार होता है। यही संगीत साधना का वांछित लक्ष्य तथा कला की पराकाष्ठा मानी गई है। सामान्य रूप से देखा जाए तो किसी कारण से मानव मन अशांत होने पर भक्तिमय संगीत व्यथित मन को राहत देता है। अब जब सामान्य रूप से भी संगीत इतनी प्रभावोत्पादक क्षमता आत्मसात किए हुए है तब तो वास्तव में ही संगीत मानवीय संवदेनाओं को समेट कर आत्मप्रकाश का उपादान बन जाता है।

संगीत की अन्य विषयों में अंतर्सबुद्धता अथवा गूढ़ता को स्पष्ट करने के पश्चात अब उद्देश्य है उसके शैक्षिक रूप के विशद विश्लेषण की। कोई भी विषय शास्त्र अथवा सिद्धांत से रहित होकर अपना दृढ़ अस्तित्व नहीं बना पाता। उसे मजबूत आधार के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि संबंधित विषय का शास्त्रात्मक अध्ययन किया जाए। अध्ययन क्षेत्र के पाठ्यक्रम में लागू किए जाने के पश्चात भी शिक्षार्थी विशिष्ट रूप से इस विषय के प्रति रूचि नहीं जताते। प्रत्येक विषय अपनी विशेष पहचान लिए हुए है। लेकिन भावनात्मक व आत्मिक संबल से व्यक्ति विशेष का नैतिक उत्थान का दायित्व केवल इस विषय से ही पूरा होता है।

सरल पाठ्यक्रम की दृष्टि से, परीक्षा में अच्छे अंकों की दृष्टि से, मनोरंजन की दृष्टि से, खेलविधि से सीखने की दृष्टि से यह विषय अति उपयुक्त है।

वर्तमान समय में संगीत मानव जीवन के हर पहलू में आवश्यक एवं कारगर सिद्ध हुआ है। इस विषय की आवश्यकता को महसूस करते हुए एवं निज अनुभवों से यह कहना उचित जान पड़ता है कि भारतीय सांस्कृतिक एवं साहित्यिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं अन्य सभी उद्देश्यों का अनुशीलन व परिशीलन करने हेतु भारतीय संगीत का अध्ययन व अध्यापन नितांत आवश्यक है जो हमारी भावी पीढियों के सांस्कारिक व नैतिक उत्थान में सहायक होगा।

डॉ० क्यूटी
एसिसटेंट प्रोफैसर
म्यूजिक

आज की भारतीय नारी

मातृत्व की गरिमा से मंडित, पत्नी के सौभाग्य से ऐश्वर्यशलिनी, धार्मिक अनुष्ठानों की सहधर्मिणी, गृह की व्यवस्थापिका तथा गृहलक्ष्मी, पुरूष की सहयोगिनी, शिशु की प्रथम शिक्षिका तथा अनेक गुणों से गौरवान्वित नारी के महत्व को आदिकाल से ही स्वीकारा गया है। महाराज मनु ने इस लिए कहा है **'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता।'** जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। इसमें किंचित संदेह नहीं कि नारी के अभाव में मनुष्य का सामाजिक जीवन बेकार है। इसलिए प्राचीन काल से ही नारी की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारा गया है। नारी के इसी रूप को स्वीकारते हुए कविवर जयशंकर प्रसाद ने कहा था–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नभ पग तल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।

प्राचीन भारत में गार्गी, अनुसूया, अत्री, मैत्रेयी, सावित्री जैसी विदुषी महिलाएँ इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि वैदिक काल में भारतीय नारियाँ सम्मानित एवं प्रतिष्ठित पद पर आसीन थी। उन्हें शिक्षा का पूर्ण अधिकार प्राप्त था, कोई भी शुभ एवं मांगलिक कार्य अर्धांगिनी की उपस्थिति के बिना संपन्न नहीं होता था।

मध्यकाल में नारी की वह गौरवपूर्ण स्थिति नहीं रह सकी। यवनों के आक्रमण के बाद उसका मान–सम्मान घटने लगा। अनेक प्रकार के राजनीतिक और सामाजिक उथल–पुथल के कारण नारी को अपनी मान–मर्यादा तथा सतीत्व की रक्षा के लिए घर की चारदीवारी तक ही सीमित कर दिया गया। उसकी स्थिति इतनी दयनीय हो गई कि उसे पुरूष की दासी बनकर अपमान तथा यातनापूर्ण जीवन जीने पर विवश होना पड़ा। परिस्थितियाँ सदा एक–सी नहीं रहती। शनैः शनैः नारी को पुनः प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय पद पर आसीन करने के प्रयास शुरू हुए। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद जैसे अनेक समाज सुधारकों के सत्प्रयासों से नारी की स्थिति में परिवर्तन आया और स्वतंत्रता–प्राप्ति के समय तक भारतीय नारी पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जीवन के हर क्षेत्र में पदार्पण करने लगी। अनेक क्षेत्रों में तो उसने पुरूष को बहुत पीछे छोड दिया। महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने चाहे नारी को 'अबला' कहकर भले ही संबोधित किया हो, पर आज की नारी तो पूर्णतया 'सबला' है। आज तो वह नारी दोहरी भूमिका में है। वह आज घर की चारदीवारी में बंद होकर पुरूष की दासी बनकर केवल उसके योग्य वस्तु नहीं है, आज तो वह शिक्षा, चिकित्सा, सेना, पुलिस, उद्योग धंधे, प्रशासन जैसे अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा एवं योग्यता का परिचय दे रही है। आज उसकी दोहरी भूमिका है एक ओर तो वह गृहिणी है, परिवार के उत्तरदायित्व से बँधी है तो दूसरी ओर अपने अधिकारों तथा स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए अपनी स्वतंत्र जीविका भी चला रही है। वह पुरूष प्रधान समाज में रहकर भी अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए हुए है।

भारतीय नारी की दोहरी भूमिका, समाज में उसके स्थान, उसके कर्त्तव्यों को आज हमें नए परिप्रेक्ष्य में देखना, सोचना होगा। आज की नारी को पिछली स्थिति में नहीं ले जाया जा सकता। आज की आवश्यकता तो इस बात की है कि एक ओर वह अपने पारिवारिक तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों को निभाए तथा साथ ही आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनकर एक सम्मानपूर्ण जीवन बिताए। आधुनिक नारी को अपनी अधिकारों तथा स्वतंत्रता के प्रति इतना मदांध नहीं हो जाना चाहिए कि वह ममता, सहिष्णुता, त्याग, करूणा, सेवा परायणता, उदारता तथा स्नेह जैसे गुणों को भूलकर पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करके अपनी गरिमा को ही विस्मृत कर दे। नौकरी करते हुए उसे आदर्श माता, आदर्श पत्नी तथा गृह स्वामिनी के कर्तव्यों को भली भाँति वहन करना होगा।

खेद का विषय है कि स्वाधीनता के इतने वर्षों के बाद आज भी भारतीय गाँवों में नारी की स्थिति में वांछित परिवर्तन नहीं आया है। भारतीय समाज में आज भी 'लड़के' को 'लड़की' से श्रेष्ठ समझा जाता है तथा अंधविश्वासों, रूढ़ियों, अशिक्षा, गरीबी तथा अज्ञानता के कारण गाँवों में उसकी दशा दयनीय है। समाज के संतुलित विकास के लिए यह आवश्यक है कि दहेज जैसी कुप्रथाओं का समूल विनाश किया जाए और महिलाओं के उत्थान के लिए हर संभव प्रयास किया जाए। राष्ट्र का विकास भी नारी की उन्नति पर निर्भर है।

संध्या
3910, बी.काम. तृतीय वर्ष

नदी की आत्मकथा

हिम गिरि के हिम से निकल निकल, वह विमल
दूध सा हिम का जल,
कर–कर निनाद कल–कल छल–छल, बहता आता नीचे
पल–पल तन का चंचल, मन का विहल।

जी हाँ, मैं नदी हूँ। नगराज हिमालय मेरे पिता हैं। हिमगिरी से निकल, कल–कल, छल–छल करती निरंतर प्रवहगान निर्मल जलधारा नदी। मेरे पिता ने मुझे अत्यंत लाड़–प्यार से पाला है। पर्वत शृंखला के बीच स्थित एक उपत्यका मेरी माता है। मेरा शैशव अपने माता–पिता के यहाँ उछल कूद में बीता। मैं जब भी उछल–कूद करती या क्रीड़ा करती, तो मेरे माता–पिता के मन मोद से भर जाते। पिता के लाड़–प्यार ने मुझसे स्वच्छंदता की प्रवृति भर दी। बचपन से ही मैं सोचा करती थी कि क्या कभी वह दिन भी आएगा, जब मैं वसुधा के वक्षस्थल का प्रक्षालन करने तृषितों की प्यास मिटाने और खेतों का सिंचन करने अपनी यात्रा पर निकलूँगी ?यह सोच–सोचकर मैं कुछ उदास रहने लगी। मेरे मन में तरह–तरह के विचारों, तरह–तरह की भावनाओं और कल्पनाओं का जन्म होता।

न जाने कैसे अनुमान लगा लिया मेरे माता पिता ने मेरी हृदयस्थ भावनाओं का। एक दिन मेरे पिता मुझसे बोले 'कन्या पराया धन होती है। पिता के घर से उसे जाना ही पड़ता है।तेरा जन्म यहाँ रहने के लिए नहीं हुआ। तुझे अपने शीतल जल से लाखों–करोड़ों की प्यास बुझानी है। तुझे चलते ही रहना है और अतंतोगत्वा सागर में मिल जाना है।' पिता के इन शब्दों ने मुझे भावुक बना दिया, परंतु तभी अपने कर्तव्य का ध्यान आया और मैंने पिता की आज्ञा शिरोधार्य करके, उसी क्षण पिता के घर को छोड़ने का निश्चय कर लिया।

कल–कल निनाद करती हुई मैं मंथर गति से निकल पड़ी। प्रारंभ में मैं थोडा डरी हुई थी कि रास्ते में न जाने कितनी बाधाएँ आएँगी, कितने अवरोधों का सामना करना होगा, न जाने कौन–कौन से कष्टों को सहन करना पड़ेगा, पर तभी मुझे कवि की यह उक्ति स्मरण हो आई–

'गहन सघन मनमोहन वन तरू मुझको आज बुलाते हैं।
मेरे जीवन के कर्तव्य की वे सब याद दिलाते हैं।
जीवन में आराम कहाँ है, कष्ट नए नित सहना है।
मुझको तो चलने रहना है, मुझको चलते रहना है।'

मैं लोग–मंगल की देवी हूँ। इस संसार की सेवा ही मेरा व्रत है। मैं किसानो द्वारा रोपे गए बीजों को प्रस्फुटित करती हूँ, धन–धान्य उगाकर लोगों का पेट पालती हूँ तथा सर्वत्र हरियाली उगाकर पर्यावरण को स्वच्छ रखने में अपना अकिंचन योगदान देती हूँ। अनाज ही जीवों का प्राण है, अतः मैं जीवों की प्राणदात्री हूँ। मेरे इस कथन से आप यह आशय न ले कि मैं अभिमानी हूँ अथवा मुझे अपने कर्तव्य पर अहंकार हो गया है। इतना तो सभी जानते हैं कि 'जल' इस लोक के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

यद्यपि मैं परोपकार के लिए जीती हूँ और उसी के लिए निरंतर गतिशली रहती हूँ, परंतु आज का मानव कितना कृतघ्न है कि मुझ में कूडा–कचरा, रासायनिक पदार्थ तथा उद्योगों के अवशिष्ट पदार्थ मिलाकर मेरे स्वरूप को बिगाड़ने में तनिक भी कसर नहीं छोडता अनेक गंदे नाले मुझमें मिला दिए

जाते है तथा सागर तक पहुँचते–पहुँचते मेरा जल पीने के सर्वथा अयोग्य तथा प्रदूषित हो जाता हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि यह कृतघ्न मानव मुझसे प्राण दान लेकर भी मेरे सौंदर्य, निर्मलता तथा स्वच्छता को क्यों हर लेता है?

मैं विघ्न बाधाओं से घबराती नहीं और मार्ग में आने वाली विपत्तियों से भयभीत नहीं होती, वरन मार्ग में आने वाले सभी अवरोधों को भी अपने साथ बहा ले जाने का सामर्थ्य रखती हूँ अपने प्रवाह से शिलाओं को टुकड़े–टुकड़े कर देती हूँ। सागर में मिलते समय मुझे इसी बात का संतोष होता है कि मैंने निरंतर गतिशील रहकर अपने कर्तव्य का पालन किया तथा मानव मात्र को पुत्रवत अपना स्नेह दिया।

चलते–चलते मैं मानव को यह चेतावनी देने में तनिक भी संकोच नही करूँगी कि यदि वह इसी प्रकार मेरे स्वरूप को प्रदूषित करता रहा, तो मैं क्रोधित होकर उसे इसका दंड देने में भी पीछे नहीं हटूँगी, क्योंकि प्रत्येक बात को सहन करने की भी एक सीमा होती है। वैसे भी मनुष्य ने मेरा क्रोध 'बाढ़' तथा 'जल–प्लावन' के रूप में देखा है। ऐसे समय मैं अमर्यादित हो उठती हूँ। अपने कूलो को तोड़ कर विनाश की लीला का दृश्य उपस्थित कर देती हूँ। अतः हे मानव! मैं तुझे चेतावनी देती हूँ कि मुझे प्रदूषित करना बंद कर और अपने विनाश को स्वयं निमंत्रण न दे।

संध्या
3910
बी.कॉम.तृतीय वर्ष

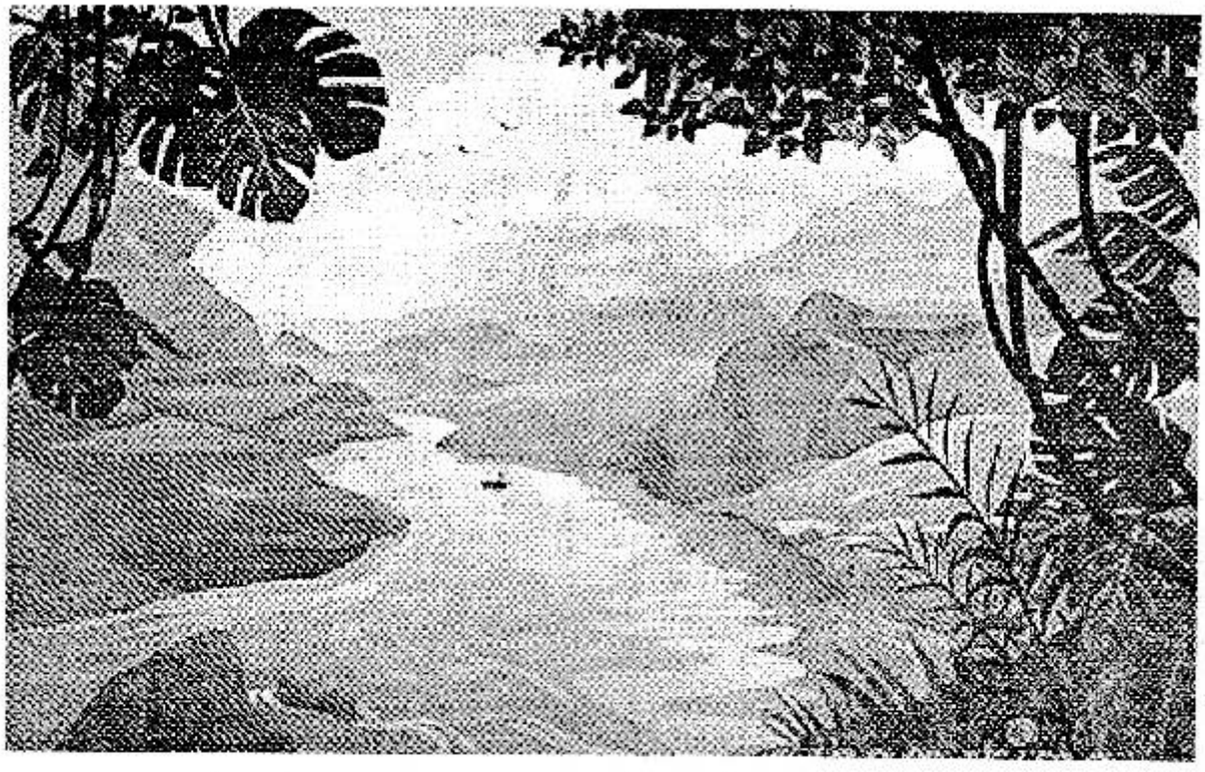

मेरी कहानी मेरी जुबानी

यों तो दिल में कई बातें है हमारी,
पर जो बात सताती है हमें, वो यादें है तुम्हारी।

छोटी थी तो रोती थी तुम्हारे लिए,
हर पल हर क्षण चिल्लाती थी तुम्हारे लिए।
चलना आता नहीं था, विवश थी क्या करूँ
नही तो छीन लाती यमराज से प्राण हमारे लिए।।

जैसे–जैसे बड़ी हुई, दुनिया से कई ठोकरें मिली।,
हर लम्हा सिर्फ जुदाई और तनहाई मिली।
कितना याद करती थी तुम्हें, किसी को बता न सकी।
तड़पती थी तुम्हारे लिए यह भी जता न सकी।।

एक दिन एक सच्चाई, तूफान बन के जिंदगी में आई
ऐसी सच्चाई जिसने सारा भरोसा चकनाचूर कर दिया।
नफरत करने लगी थी अपनो से, पर बदला ले न सकी,
क्योंकि कसम दी थी हमने किसी को, वो कसम मैं तोड़ न सकी।

फिर भी एक उम्मीद थी मन में, कुछ कर दिखाना है,
तुम्हारे खातिर ही नहीं, अपने आप को कुछ ऐसा बनाना है।
तुम्हारी कीमत जान जाए सारा जमाना, यही तो उनको बतलाना है।

आरती बंसल
बी.ए. द्वितीय
रोल न.1105

'चुटकुले'

1. एक बार दो आदमी एक गड्ढा खोद रहे थे, ?
एक गड्ढा खोदता, दूसरा उसे भर देता।
तभी एक आदमी ने उनसे पूछा, "भाई। ये
क्या कर रहे हो?" वे बोले–"हम पेड़ लगा
रहे हैं। मैं गड्ढ़ा खोदता हूँ, दूसरा पेड़
लगाता है और तीसरा उसे भर देता है
मगर आज पेड़ लगाने वाला काम पर नहीं आया है।"

2. पिता (बेटे से): जानते हो, तुम्हारी पढ़ाई में कितना खर्च होता है।
बेटा: हॉ पापा, इसलिए तो मैं थोड़ा ही पढता हूँ।

कविता बूरा
बी.एस.सी. प्रथम
2511

पढ़ी–लिखी बेरोजगारी

चरणदास ने मुझे चाय पर बुलाया
अपने चारों बेटों का मुझसे परिचय करवाया।
ये मेरा बड़ा बेटा है।
एम.बी.बी.एस पास है।
नाम हर्षदास है।
रहता बड़ा उदास है।
वो जो कुएँ से पानी भर रहा है।
वह मेरा दूसरा बेटा है।
अमरीका से आया है।
इंजीनियरिंग की डिग्री लाया है।
वो जो टूटी खाट पर बैठा है।
वो मेरा तीसरा बेटा है।
एम.फिल. पास है।
पी.एच.डी. कर रहा है।
चौथे बेटे का दिमाग है जरूरत से ज़्यादा हाई।
पढ़–लिख तो नहीं पाया भाई, बन गया नाई।
हेयर कटिंग शॉप चलाता है।
बड़ों–बड़ों की हजामत बनाता है।
मैंने कहा चरणदास जी
इसे घर से निकालिए।
अपने घर की रैपुटेशन को जरा संभालिए
उसने कहा निकाल तो दूँ मेरे भाई
पर ये बहुत काम आता है।
बाकी तो सब निकम्मे हैं, बेरोजगार हैं।
घर का सारा खर्च यही चलाता है।

प्रीति मलिक
रोल नं 2525
बी.एस.सी. प्रथम

प्रेरक बिन्दु

चाय– कलयुग का अमृत।
सर्प– भगवान शिव का नेकलेस।
केले का छिलका– पृथ्वी से भेंट कराने वाला दलाल।
जेल–बिना किराये का मकान।
चन्दा लेना– सुधरी हुई भीख।
अंग्रेजी भारत की बिना ब्याही बहू।

कविता बूरा
2511
बी.एस.सी. प्रथम

हँसगुल्ले

पागल खाने में एक पागल तालाब में गिर गया और दूसरे पागल ने दिलेरी दिखाते हुए उसे पानी से निकाल दिया। सभी ने उस पागल की जी भर कर प्रशंसा की। अगले दिन तालाब में गिरने वाला पागल खूँटी पर रस्सी से टंगा मरा पाया।

इस घटना के बारे में एक और साथी ने दूसरे पागल को बताया, तो वह शांत स्वर में बोला 'अरे, वो कल गीला हो गया था, इसलिए मैने उसे सुखाने के लिए खूँटी पर टांग दिया था।

एक बार एक हाथी और कीड़ी के रिश्ते की बात चल रही होती है। लड़की वाले यानी (कीड़ी वाले) लड़के (हाथी) को देख कर मना कर देते हैं।
जब लड़की वाले से इसका कारण पूछा, तो उन्होंने कहा कि दाँत मुँह से बाहर हैं।

माँ तुझे प्रणाम

माँ से बढ़कर कौन है जग में आज मुझे यह बतला दो।
माँ के बाद गुरू का नम्बर तुम सबको ये सिखला दो।
गर्भ में हमने प्रवेश किया तो माँ ने पूरा ध्यान दिया,
क्या खाना है क्या पीना है इस पर माँ ने मनन किया
माँ ने हर क्षण ध्यान दिया तो स्वस्थ मस्त–सा जन्म लिया,
बचपन में खूब लाड़ लड़ाए अब तक भी तो प्यार किया,
माँ के दूध की कदर करी क्या मन से पूछ कर बतला दो
माँ से बढ़कर कौन है.....

माँ ने हमको जन्म देकर, पाल–पोसकर बड़ा किया,
खुद तो सोई गीले में हम पर पूरा ध्यान दिया,
मल–मूत्र से सब नफरत करते माँ ने हँसकर धोया है,
बड़े प्यार से तुझे दुलारा खूब जिद कर तू रोया है।
माँ का कर्ज उतरता नहीं पूरा जीवन तुम तो बता दो
माँ से बढ़कर कौन है.....।।

थोड़ा सा बीमार हुआ तो माँ एकदम घबरा जाती है,
जब तक ठीक न हो बालक भोजन भी नहीं कर पाती है
माँ के मन सदा यह रहता सन्तान मेरी खुशहाल रहे,
उमर मेरी तुझे लग जाये माँ का दिल बस यूँ ही कहे
उस माँ की कोई कदर न करे तो हँसी तो जग में उड़ने दो
माँ से बढ़कर कौन है .....

माँ ने हमको गले लगाकर विनय गुण भी सिखलाया
बड़ो का आदर हम करें ये बडे प्रेम से बतलाया
इन बातों को भूल हम तो बड़ों का आदर भी भूल गए
माँ की प्यारी इस शिक्षा को हम तो बिल्कुल चूक गए।
हम तो अज्ञानी बन गए है जग को जरा ये बतला दो
माँ से बढ़कर कौन है .....

प्रातः उठकर मन से हमको बड़ों के चरणों को छूना है,
विनयपूर्वक नमन करें फिर आशीर्वाद तो मिलना है
हर वस्तु भले कम पड़े पर आशीर्वाद नहीं यह जाना है
यह बात बिल्कुल सत्य है गुरूजनों का कहना है
इस बात को बन्धु तुम हर दिल तक पहुँचा दो
माँ से बढ़कर कौन है.....

न्यूज पेपर, टी.वी., से हमने खबर यह जानी है,
धन के लिए माँ को मारा यह हम सभी ने मानी है,
बात–बात में माँ से लड़कर माँ का दिल तो दुखाया है
कई बेटों ने हद पार करी है गोली से सीना छेदा है
पुत्र होकर यूँ कर्ज चुकाया उन समझदार को समझा दो
माँ से बढ़कर कौन है.....

माँ तेरे पावन चरणों में मैं नित् नित् मस्तक धरता हूँ,
कैसे भूलूँ उपकार तेरा माँ मैं यही तो चिन्तन करता हूँ,
मेरे लिए तो कष्ट सहा है माँ नहीं मैं तो भूल पाऊँगा
हर जन्म में माँ मुझको मिले तू यही तो याद दिलाऊँगा
माँ मेरी बात को मान ले और हाँ करके तुम दिखला दो
माँ से बढ़कर कौन है .....

गुरू ने हमको पाठ पढ़ाया, जीव, अजीव का भेद बताया
मानव जीवन मुश्किल से मिलता इसका सार हमें समझाया
बाँध के मुट्ठी हम आए अब खाली हाथ बस जाना है
त्याग तपस्या कर ले बन्धु एक पल भी नहीं खोना है
यह जीवन सफल करना है तो इस मन को धर्म में रमने दो
माँ से बढ़कर कौन है.....
माँ के बाद गुरू का नम्बर .....

साक्षी जैन
बी.कॉम. प्रथम
1648

जन्मदिन मनाएं दीपक जलाकर, न कि बुझाकर

एक समय ऐसा भी था, जब भारतवर्ष की संस्कृति और ज्ञान का परचम सारे विश्व में लहरा रहा था, किंतु आज हम स्वयं अपने संस्कारों को भूलते जा रहे हैं और 21वीं सदी के हमारे सोने की चिड़िया कहलाने वाले देश की तस्वीर कैसी होगी, यह अभी भविष्य के कैमरे में कैद है। हमारी सांस्कृतिक परंपराएं व आदर्श जग जाहिर रहे है, परंतु बहुत लंबे विदेशी शासन व पश्चिमी रंग ने जिस प्रकार हमारे जन–मानस में ज़हर घोलकर हमारे रहन–सहन और आचार–विचार को दूषित किया है उसके दुष्परिणाम हमारे सामने हैं।

आज यदि आज़ादी के 66 वर्षों पर निगाहें डालें, तो प्रतीत होगा कि हम केवल नाम मात्र के ही भारतीय रह गए हैं। जिन गुणों व संस्कारों के कारण हम विश्व भर में पहचाने जाते थे, वे आज लुप्त प्रायः हो गए हैं। विशेषकर, भारत की वर्तमान युवा पीढ़ी में श्रवण कुमार जैसे आज्ञाकारी पुत्र, भरत जैसा भाई, राजा हरिश्चंद्र जैसे सत्यवादी, सीता जैसी पत्नी, सरदार भगत सिंह, महात्मा गांधी व सुभाष चंद्र बोस जैसे देशभक्तों की नितांत कमी है। आज की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विसंगतियों और परेशानियों के जाल में उलझकर युवा पीढ़ी अपने लक्ष्य से भटक रही है। पश्चिमी सभ्यता की छाप भारतीय जीवन पर स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। हमारे पहनावे, बोलचाल, अभिवादन के तौर–तरीके, रीति रिवाजों, सामाजिक धार्मिक समारोहों, त्योहारों आदि में पाश्चात्य माहौल का ही बोलबाला रहता है। नमस्ते, प्रणाम, चरण स्पर्श की बजाय हाय, हैलो आदि की संस्कृति पनप रही है। कारण स्पष्ट है कि इसके भूल में या तो माता–पिता, अभिभावकों की उदासीनता या इन अभिवादनों से तथाकथित आधुनिक कहलाने की मृगतृष्णा काम कर रही है। आज आवश्यकता है अपने पारंपरिक अभिवादन एवं संबोधन अपनाने की, जो ज्यादा मधुर, सरस, स्नेहपूर्ण एवं आदरसूचक होने के साथ–साथ हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग है।

हमारे शास्त्रों, धर्मग्रंथों में दीपक बुझाना तो गातग का प्रतीक है और फूँक मारकर बुझाना तो और भी अशुभ माना जाता है। जन्मदिन मोमबती बुझाकर नहीं, बल्कि मोमबती जलाकर मनाना चाहिए और यह माँगना चाहिए कि जिस प्रकार दीपक जलकर अंधकारमय जीवन को दूर करता है उसी प्रकार हमारे जीवन में भी सिर्फ़ उजाला ही उजाला हो। हमारे यहाँ भरा–पूरा परिवार बनाने की परंपरा है और पश्चिमी सभ्यता में बच्चे के बड़ा होते ही घर से निकाल दिया जाता है। हमारे यहाँ ढेर सारे रिश्तों का स्नेहजाल है जबकि पश्चिम में बड़े परिवार और ऐसे रिश्तों की अहमियत शून्य है। इस लिए भारत की परंपरा व संस्कृति का परचम आज भी विश्व में लहराया जा सकता है, लेकिन सिर्फ युवा पीढ़ी व अभिभावकों के सहयोग से।

वर्षा
2244
बी.ए. तृतीय

सर्वोत्तम विचार

मजबूत बनो — ताकि मुसीबत का डट कर सामना करो।
फूल बनो — ताकि खिल कर महको और घर–आँगन को सुवासित करो।
पत्थर मत बनो — ताकि दूसरों के दर्द का अहसारा न हो।
कोमल मत बनो — कहीं किसी की ठोकर से बिखर जाओ।
साथी मत बनो — कही सफर में जुदा हो जाओ।
खूबसूरत बनो — ताकि आत्मिक खुशी पा सको।
हसीन मत बनो — कहीं झूठे गुमान में जल जाओ।
इंसान बनो — ताकि प्रभु का शुक्र अदा कर सको।

विशेष महत्व

फिल्मों मे हीरो का, हिसाब में जीरो का,
भारत में फकीरो का विशेष महत्व है।
स्कूल में गेट का, बाजारों में रेट का,
असफलता में फेल का विशेष महत्व है।
क्रिकेट में विकेट का, पार्टी में गिफ्ट का,
राजनीति में टिकट का विशेष महत्व है।
जंगल में हाथी का, जीवन में साथी का,
बुढ़ापे में लाठी का विशेष महत्व है।
अमीरों में कोठी का, गरीबों में रोटी का,
नेताओं में टोपी का विशेष महत्व है।
बचपन गें हीरो का, जवानी में होश का,
बुढ़ापे में रोष का विशेष महत्व है।
गर्म लोहे पर चोट का, सर्दियों में कोट का,
चुनावों में वोट का विशेष महत्व है।
ब्रह्म सरोवर में स्नान का, पढ़ाई में ध्यान का,
कोर्ट में बयान का विशेष महत्व है।
खेलों में खिलाड़ी का, हस्पताल में बीमारी का,
विद्यार्थी में ब्रहमचर्य का विशेष महत्व है।

मोनिका यादव
बी.ए. प्रथम, 102

मेरी माँ

लबों पे उसके कभी बददुआ नहीं होती
बस एक मां है जो मुझसे खफा नहीं होती।

ऐ अंधेरो!देख ले मुँह तेरा काला हो गया
मां ने आंखे खोल दी घर में उजाला हो गया।

इस तरह मेरे गुनाहों को वो धो देती है।
मां बहुत गुस्से में होती है तो रो देती है।

घेर लेने को मुझे जब भी बलाएँ आ गई
ढाल बनकर सामने माँ की दुआएँ आ गई।

अभी जिंदा है मां मेरी मुझे कुछ भी नहीं होगा।
मैं जब घर से निकलता हूँ दुआ भी साथ चलती है।

कुछ नहीं होगा तो आंचल में छुपा लेगी मुझे।
माँ कभी सर पर खुली छत नहीं रहने देगी।

मेरी ख्वाहिश है कि मैं फिर से फरिश्ता हो जाऊँ
माँ से इस तरह लिपट जाऊँ कि बच्चा हो जाऊँ।

आलू
रोल नं. 1219

मजेदार चुटकुले

दोपहर में आईसक्रीम वाला जोर–जोर से चिल्ला रहा थाखून!खून!खून! एक आदमी ने पूछा "खून!खून!खून! क्यो चला रहे हो" आईसक्रीम वाला बोला, "इस दोपहर मे अगर मैं आईसक्रीम आईसक्रीम चिल्लाऊँगा, तो कौन घर से बाहर निकलेगा।"

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

<u>पिता</u> (अध्यापक) से–"मेरा लड़का इतिहास में कैसा है?जब मैं स्कूल में था इस विषय में बहुत कमजोर था।"

अध्यापक: मैं तो यही कहूंगा कि इतिहास अपने आप को दोहरा रहा है

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

<u>संजय:</u> मदन, तुम बात करते समय मुँह में चीनी क्यों रखते हो।

मदन: क्योंकि गुरू जी ने हमेशा मीठा बोलने के लिए कहा है।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

<u>भिखारी:</u> अरे फकीर, आज तू यहाँ स्टेशन पर कैसे भीख मांग रहा है। कल तक तो तू नंदिनी रोड़ पर भीख माँग रहा था।?

<u>फकीर:</u> क्या बताऊँ यार, नंदिनी रोड़ वाली जगह मुझे अपने दामाद को दहेज में देनी पड़ी।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

<u>एक सेठ</u> जी कार में जा रहे थे। अचानक उन्हे धक्का लगा, उन्होंने ड्राईवर से पूछा

<u>ड्राईवर</u>–सेठ जी! एक पत्थर सामने आ गया था।

<u>सेठ</u>– बहुत बेवकूफ हो, तुमने हार्न नही बजाया।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

<u>किराएदार:</u> आप तो कहते थे कि यह मोहल्ला साफ सुथरा है। यहां कोई बीमार नहीं पडता। मगर यह मरियल–सा आदमी कौन है?

<u>मकान मालिक:</u> इस मोहल्ले का डॉक्टर।

पिंकी
1169, बी.ए. द्वितीय

माँ

आसमां ने कहा
माँ एक इन्दधनुष है,
जिसमें सब रंग समाए हुए हैं।
शायर ने कहा–
माँ एक गजल है,
जो सबके दिल में उतरती है।
माली ने कहा–
माँ वो दिलकश फूल है
जो पूरे बाग को महकाती है
हर औलाद ने कहा–
माँ वो ममता की मूरत है,
जिस पर हर दिल कुर्बान है।
मैंने कहा–
माँ वो है जो अपनी औलाद
की हर बात बिना कहे समझ
जाती है।

निशा सहारण
बी.ए. द्वितीय
1138

श्रेष्ठ मानव

ऐसा दीपक बन जाएँ हम
जो करे दिव्य प्रकाश
घर में ही नहीं जिसका
हो सब के दिल में वास।
मूर्खता रूपी अंधकार का
जो करके विनाश।
अपने ऊपर हासिल कर ले
जो सबका विश्वास।
ऐसा पानी बन जाएँ हम
जो उन सबकी प्यास बुझाए
जो अपने देश का निस्वार्थ भाव से
करते है विकास
अपने तन–मन और दिल से
जो करके कुछ खास,
नए समय में अपने देश का
जो रचे नया इतिहास।
ऐसी वाणी हम बोल पाएँ
जो अपनों का कराए अहसास,
सब उससे प्रसन्न रहें
कुछ ऐसा हो उसमें खास।
सत्य हमारे मुख से निकले
हर पल, हर दिन, हर मास
सबके लिए हितकर रहें
जब तक जीवन है हमारे पास।

निशा सहारण
बी.ए. द्वितीय, 1138

देश मुक्त हो गया मुक्त हम हुए नहीं

देश मुक्त हो गया मुक्त हम हुए नही,
विश्व प्रेम–भाव से युक्त हम हुए नहीं।
स्वप्न देख–देख हम सुप्रभात आएगी,
कब लहू गरीब का राग राज्य लाएगी।
कल्पना के बाग में कब बहार आएगी।
भूख से जो रो रहे कब उन्हे हँसाएगी।
देश मुक्त हो गया मुक्त हम हुए नहीं,
विश्व प्रेम–भाव से युक्त हम हुए नहीं।
आज मन उदास है भूख है न प्यास है,
आदमी निराश है हो रहा विनाश है।
सह सकेंगे कब तलक घाव पर पड़ा नमक,
आओ सब प्रण करें,
कष्ट देश का हरें,
इस पर जान वार दें।।

शिल्पा
बी.एससी. प्रथम
रोल नं. 2523

रोने वालो का कोई साथ नहीं देता

जिंदगी एक कैमरा है। इसके सामने सदा मुस्कुराते रहो, तभी जीवन की खूबसूरत तस्वीर निकल कर सामने आएगी।

जीवन में उतार–चढ़ाव आते रहते हैं। जिसने हर परिस्थिति को मुस्कुरा कर जी लिया, उसका जीवन सार्थक हो गया। इसके विपरीत जो जीवन को केवल काँटों का बिछौना समझकर रो–रोकर जीवन गुजारते हैं, उनके लिए जीवन बोझ बन जाता है। उनकी जिंदगी नीरस रहती है। ऐसे लोग जीवन को जी नहीं पाते, जीवन को जीना और गुजारना दोनों अलग अलग बाते है। न जाने कितने भव संकट झेलकर यह अमूल्य मानव जीवन मिला है। इसे व्यर्थ की चिंता, तनाव में गुजार देना ना समझी है। हर प्रकार की चिंता, दुख, तनाव की अपेक्षा सदा हँसते मुस्कराते रहों यही जीवन है। सुख और दुख तो मन की स्थितियाँ है। हँसने वालों के साथ जमाना हंसता है रोने वालों का कोई साथ नहीं देता। रोने वाले दुनिया की भीड़ में खुद को अकेला महसूस करते है। और हंसते मुस्कुराते हुए जीने वाला व्यक्ति हर परिस्थिति में अकेला होते हुए भी सबके स्नेह और सम्मान का पात्र बनता है।

शिल्पा जैन
बी.ए. द्वितीय, रोल नं. 1208

अनमोल मोती

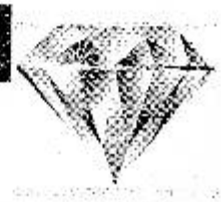

* पूछना है तो अनुभवी से पूछो, बूढ़े से नहीं।
* सबका इलाज है, मगर मूर्ख का नहीं।
* जो व्यक्ति प्रश्न पूछता है वह स्वयं को पाँच मिनट के लिए मूर्ख सिद्ध करता है, पर जो प्रश्न नहीं करता, जीवन भर मूर्ख रहता है।
* मोती, मोती ही रहता है चाहे वह गंदी नाली में ही क्यों न पड़ा हो ?
* कर्मशील व्यक्ति को लक्ष्मी स्वयं ढूंढती है।
* शीघ्रता से किया गया कार्य आपत्तियों से पूर्ण होता है।
* अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम दुनिया के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो।
* गुरू वह दीपक है जो स्वयं जलकर दूसरो को प्रकाश देता है।
* जीवन का अर्थ है–समय। जो जीवन से प्यार करते हैं, वे आलस्य में समय न गवाएँ।
* जो जैसा सोचता है और करता है, वह वैसा ही बन जाता है।
* मन में रोशनी के दीए जलाओ, तो सफलता की सीढियाँ चढ़ जाओगे।

श्वेता पहल
249
बी.ए. प्रथम

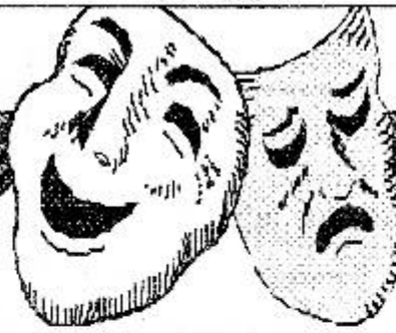

हंसना मना है

➢ एक व्यक्ति डॉ0 से–डॉक्टर साब, देखियो मेरे पेट गैं गोले से उट्ठे सै।
डॉक्टर साब–गोले उट्ठै से तो एक आधा पाकिस्तान पै क्यूं न फेंक देदा।

➢ एक बार घूग्घू कलास मैं पढ़ाण लाग रैया था। वो भुंडू ने खड़या करके बोल्या, 'बता रै भुंडू 'जै एक मुरगी रोज एक अण्डा देवै, तो एक महीने मैं कितणे अंण्डे देवैगी?' भुंडु रोच–साच के बोल्या 'मास्टर जी रोज एक अण्डे के हिसाब तै तो एक मुरगी महीने में 26 अण्डे देवैगी।' मास्टर बोल्या 'अरै ऊत, महीना तो 30 दिन का होवे सै।' भुंडु बोल्या, 'वो तो मन्नै भी बेरा सै, पर चार इतवार की छुटटी भी तो होवै सै।

➢ एक छोरे नै सबेरे आठ बजे तक सोण की आदत थी। उसका बाबू उसकी इस आदत तै घणा दुखी था। उसकी रोज छोरे तै इस बाबत लड़ाई होंदी, पर छोरे के एक न लागती।
एक दिन छोरा तड़के पाँच बजे उठ के आया, तो बाबू बोल्या वाह! गेरे लाल! वाह शेर। जदे छोरा बोल्या कयां का लाल कयां का शेर, पाणी पीवण उठ्या सूं बाबू, जाकें सोऊं फेर।

➢ एक बै एक चुहिया सेठ की दुकान में बड़गी अर माल खा–खा के खूब मोटी होगी। एक दिन सेठ नै वा पकड़ ली अर उसकी गर्दन पकड़ के धरती पै रगड़दी, 'हाँ ऐ सारा सामान चट करूँगी ईब ले नजारे' सेठ यूं बोल्या। थोड़ी हान पाच्छे सेठ ने देख्या चुहिया मरगी। सेठ बोल्या 'रे शेरनी उल्हाणे–उल्हाणे गैं गरगी ईबै तो कुछ कहया भी न था।

➢ एक बै एक घना पतला छोरा होया करदा। वो अपनी बां पे कुछ लिखाण खातर नाम लिखदान आले धोरै चल्या गया। उसकी बां भौते पतली थी। वो ओड़े जा के बोल्या अक मेरे हाथ में शेर बणा दे। तो नाम छापण आला बोल्या अंक साँप बणाण की जगह तो है कोनी, शेर छपवाण चाल्या सै।

अनमोल वचन

1. ईश्वर की महाशक्ति मंद झोंके में है तूफान में नहीं। रविन्द्रनाथ टैगोर
2. धन से धन की भूख बढ़ती है तृप्ति नहीं होती।
3. लोग बदल जाते हैं और एक दूसरे को यह बताना तक भूल जाते है। प्रेमचन्द
4. नीति कहती है कि मित्रता या शत्रुता बराबर वालों से करें। भगवान वाल्मीकी
5. पक्षियों की भाँति हवा में उड़ना ओर मछलियों की तरह पानी में तैरना सीखने के बाद हमें इंसानों की तरह धरती पर चलना सीखना है। डा0 राधा कृष्णन
6. लाभदायक वस्तु को फेक देना और हानिकारक वस्तु को पकड़ कर रखना बस यह मूर्खता है। तिरूवल्लुवर
7. अगर जीते जी तुम्हारे बंधन न टूटे, तो मरने पर मुक्ति की आशा क्या की जा सकती है। स्वामी दयानंद
8. जहाँ नदी गहरी होती है वहां जल प्रवाह अत्यंत शांत व गंभीर होता है। शेक्सपीयर
9. बुढ़ापा परिवार के सहारे के बिना काटना बड़ा कठिन है। इस बात को हर कोई नहीं जानता। डेल कार्नेगी
10. दूसरों के टुकड़ो पर पलने वाले आदमी को सब नफरत से देखते है। नारायण पंडित

पिंकी शर्मा
रोल नं. 1117

जिंदगी

जिंदगी का जिंदगी से वास्ता जिंदा रहे
हम रहे जब तक हमारा हौंसला जिंदा रहे
माना कि वक्त ने हमारे बीच रख दी दूरियाँ
कोशिशे ये हों कि दिलों में वास्ता जिंदा रहे
प्यार से सुलझाइए, हल गुत्थियां हो जाएँगी
जब तलक संसार है ये फलसफा जिंदा रहे।

जीने का हौंसला है, ये और बात है
जीने का फैसला कहाँ अपने हाथ है।
सुख को तलाशने में समझ आ गई हमें
सागर में एक बूँद की कितनी बिसात है।
सूरज न निकलने से समय तो नहीं थमा
होता रहा है, दिन भी, हुई रोज़ रात है।
घिरकर मुसीबतों में न डरना, ये सोचना
गम डाल-डाल तो खुशी पात-पात है।

जिंदगी के लिए खारा खलीफा रखना
अपनी उम्मीद को हर हाल में जिंदा रखना
बंद कमरे बदल जाओगे एक दिन
मेरी मानो तो खुला कोई दरीचा रखना
क्या पता राख में जिंदा हो कोई चिंगारी
जल्दबाजी में कभी पाँव न अपना रखना
वक्त अच्छा हो तो बन जाते है साथी, लेकिन
वक्त मुश्किल हो तो बस खुद पर भरोसा रखना।

राजबाला
बी.ए. प्रथम
391

मार गई! मार गई! (कविता)

Account में Entry की भरमाई मार गई
Business में आँकड़ों की उलझाई मार गई
Hindi में दोहों की दोहराई मार गई
Sanskrit में श्लोकों की सच्चाई मार गई
Pol. Science में नेताओं की झुठाई मार गई
बाकी कुछ रहा तो महंगाई मार गई
Maths में फॉर्मूलों की रटाई मार गई
Physics में लैंस की छपाई मार गई
Chemistry में गैस की सुघांई मार गई
Biology में सांप की कटाई मार गई
Practical में इनकी लिखाई मार गई
बाकी कुछ बचा तो लड़कियों की विद्वता मार गई
English में Essay की घोटाई मार गई
Economics में आँकड़ों की रटाई मार गई
Geography में मेप की भराई मार गई
History में बाबर की लड़ाई मार गई
बाकी कुछ बचा तो किताबों की मोटाई मार गई।

रेनू दुहन
बी.ए. प्रथम
170

मां

मां की गहिमा का मैं, कैसे गुणगान करूं,
संसार की स्याही कम होगी, लिखकर जो बयान करूं।
स्वप्न में भी जो दुख पहुँचे मां को
खुदा वो रात ना आए,
मां को जिससे दुख पहुँचे
जिह्वा पर कभी भी वो बात न आए।
मां तू ही बता हमें, कैसे तेरा अहसान चुकाएँ,
जी चाहता है जीवन का सब कुछ, तुझ पर ही
कुर्बान कर जाएँ।
बस यही कहना चाहूँगी
मां के दिल को न दुःख पहुंचाना
जान भी देनी पड़ जाए पर,
मां के अरमानों को मत ठुकराना।
मां के अहसानों को दिल में छिपाकर
आगे बढ़ना चाहती हूँ।
सारे अहसानों को आँखों में संजोकर
मां को प्यार देना चाहती हूँ।

वर्षा
2244
बी.ए. द्वितीय

खाली–खाली जहान

1. आदमी जब से इंसान हो गया है, खाली रिश्तों का जहान हो गया है।
   पहले तो घर था एक मंदिर, अब खाली मकान हो गया है।

2. पहले चलते थे हंसी–ठहाके, अब बंद हो गई चौपालें।
   शहरीकरण से गाँव सुनसान हो गया है
   खाली रिश्तों का जहान हो गया है।

3. संयुक्त की जगह एकाकी परिवार हो गया
   प्यार विश्वास सब खत्म हो गया,
   बोलता इंसान बेजुबान हो गया है
   खाली रिश्तों का जहान हो गया है।

4. बचपन गया तो आई जवानी, अब सुनो बुढ़ापे की कहानी,
   रोता–बिलखता सारा आसमा हो गया है,
   बूढ़े मां–बाप का सम्मान खो गया है,
   खाली रिश्तों का जहान हो गया है।

5. होली, तीज और दीवाली, लोहड़ी, संक्राति सब हो गई खाली,
   दिखावे ने बुन दी जाली, बाहर से उजली अन्दर से काली
   इन्सानियत से सुनसान हो गया है
   खाली रिश्तों का जहान हो गया है।

ज्योति सैनी
2245
बी.ए. तृतीय वर्ष

नारीः अबला नहीं सबला

(i) ए औरत! क्या है तेरी जिंदगानी
ये दुख, ये तकलीफ, क्या बस ये ही है तेरी कहानी
काँटों की सेज पर, सिर्फ तुझे ही क्यूँ चलना पड़ता है,
खुद को छोड़, दूसरों के लिए तुझे ही क्यों जीना पड़ता है,
समाज जो तकलीफ देता है, उसे तुम क्यों सहती हो,
क्या दोष है तुम्हारा, जो तुम कुछ न कहती हो।

(ii) कभी कच्ची उम्र में ही, तुम्हें ब्याह दिया जाता है,
और वहाँ तुम्हें घरेलू हिंसा का शिकार बना दिया जाता है।
कभी दहेज न लाने पर जिंदा जला दिया जाता है,
या फिर गर्भ में लड़की पाने पर, उसे मरवा दिया जाता है।

(iii) तुम क्या सोचती हो,
ये मार, ये तडप, ये दुख क्या तुम्हारा नसीब है ?
नहीं पगली! ये तो तुम्हारी कमजोरी है,
हे नारी! तुम्हें अपनी सोच को बदलना होना।
तुमको आगे बढ़ना होगा।

(iv) नहीं बढोगी, तो पछताओगी
समाज में कभी जी न पाओगी
यह दावा है मेरा, एक बार अगर तुम खड़ी हुई तो
कोई तुम्हें नहीं गिरा पाएगा
एक बार आगे बढ़ी तो कोई पीछे नहीं हटा पाएगा।

(v) तुम्हें इस सोच को अपनाना होगा,
इस दुनिया को दिखाना होगा।
अपनी ताकत को दिखाओ।
नारी सशक्तिकरण को बढ़ाओ।

आरती बांसल
1105
बी . ए. द्वितीय

त्रासदी

मुझे तो अपनों ने लूटा,
गैरों में कहा दम था।
मेरी हड्डी वहाँ टूटी
जहाँ हॉस्पिटल बन्द था।
मुझे जिस एम्बुलेंस में बिठाया गया,
उसका पैट्रोल खत्म था।
मुझे तो रिक्शा में ले जाया गया,
क्योंकि उसका किराया कम था,
मुझे तो डॉक्टरों ने उठाया,
नर्सों में कहाँ दम था।
मुझे जिस बैड पर लिटाया गया,
उसके नीचे बम था।
मुझे तो बम ने उड़ाया,
गोली में कहाँ दम था।
मुझे तो सड़क में दफनाया गया।
क्योंकि कब्रिस्तान में Function था।

पिंकी शर्मा
1117

'अंग्रेजी का कमाल'

अंग्रेजी का देखा कमाल
जगह–जगह 'टर' का इस्तेमाल
श्री मान है मिस्टर, बहन है सिस्टर,
मंत्री होते मिनिस्टर, निर्देशक होता डायरेक्टर
निरीक्षक होता इंस्पेक्टर, खेती के लिए ट्रैक्टर,
ठंडा करता रैफ्रीजरेटर, गर्मी देता हीटर,
नापने के लिए मीटर, चलती है मोटर,
शुरू करना स्टार्टर, रहने के लिए क्वार्टर,
अध्यापक है मास्टर, चिकित्सक है डॉक्टर,
पानी है वॉटर, मक्खन है बटर,
काटता है कटर, बैरा है वेटर,
बस में होता कण्डक्टर, लेखक है राइटर
बिजली बनाता जनरेटर, हिसाब करता कैलकुलेटर,
समस्या सुलझाए कम्प्यूटर, पढ़ाने आता ट्यूटर,
और यह लिखने के लिए होता रजिस्टर।

रेखा शर्मा
1126
बी.ए. द्वितीय

गब्बर

गब्बरः कितने आदमी थे?
सांभाः सरदार, दो।
गब्बरः मुझे गिनती नहीं आती, दो कितने होते हैं ?
सांभाः सरदार दो, एक के बाद दो आता है।
गब्बरः और दो के पहले ?
सांभाः दो के पहले एक आता है सरदार।
गब्बरः तो बीच में कौन आता है ?
सांभाः बीच में कोई नहीं आता, सरदार।
गब्बरः तो फिर दोनों एक साथ क्यों नही आते ?
सांभाः एक के बाद ही दो आ सकता है क्योंकि दो, एक से बडा है सरदार।
गब्बरः दो, एक से कितना बड़ा है।
सांभाः दो, एक से बड़ा है सरदार।
गब्बरः अगर दो, एक से बड़ा है तो एक, एक से कितना बड़ा है।
सांभाः सरदार अब आप मुझे गोली ही मार दो।
मैंने आपका नमक ही खाया है, च्यवनप्राश नहीं।

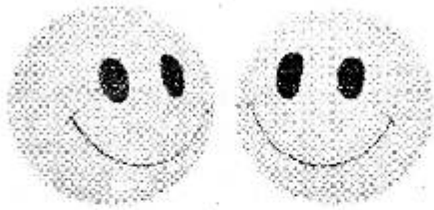

राजबाला
बी.ए. प्रथम, 391

मुश्किलें

मुश्किलें, जिनके बिना हमारा जीवन नीरस
हो जाता है। अगर मुश्किलें नहीं होगी,
तो जीवन में हम कभी ऊपर नहीं उठ
पाएँगे। जिन के जीवन में मुश्किलें नहीं होती,
उनके जीवन के कोई मायने नहीं होते।
ए दोस्त! एक बात कभी मत भूलना
कि मुश्किलें हमेशा महान और निडर
लोगों के सामने आती है, क्योंकि वही उन्हे
अच्छे तरीके से अंजाम देना जानते हैं।

मुश्किलें दिल के इरादे आजमाती हैं,
सपनों के परदे निगाहों से हटाती हैं,
हौंसला मत हार ए मुसाफिर!
क्योंकि ठोकरें ही इंसान को चलना सिखाती हैं,
और वो मुश्किलें ही होती है
जो हमें जीवन का यथार्थ बताती हैं।

ए दोस्त! पीपल के पत्तों की तरह मत बनो,
जो वक्त आने पर सूख जाते हैं।
अगर बनना है तो मेहंदी के उन पत्तों की तरह बनो,
जो खुद पिसकर दूसरों के जीवन में रंग भर देते हैं

रीतू
बी.ए. प्रथम, 158

परीक्षा बनाम क्रिकेट

क्लास रूम	पिच
परीक्षा लेने वाला	अम्पायर
पेपर सेट करने वाला	बॉलर
सुपरिडेंट	लेग अम्पायर
पेपर के प्रशन	गेंद
कठिन प्रशन	फास्ट बाउंसर
अच्छे उत्तर	गुड बैटिंग
चपरासी	वाटर मैन
फलाईंग	थर्ड अम्पायर
नकल करते पकड़े जाना	रन आउट
पेपर में अनुपास्थिति	क्लीन बॉल्ड
प्राप्त अंक	बनाए गए रन

कोमल यादव
155
बी.ए. प्रथम

माता–पिता

मेरा मानना है कि माता–पिता भगवान का रूप होते है। लोग मंदिरो में, मूर्तियों में भगवान को खोजते है लेकिन भगवान उनके घर में होते है। बस पहचानने की देर है। कुछ लोग पत्थर को पूजते है। उन पर माला, प्रसाद और भी बहुत कुछ चढ़ाते है। लेकिन अगर यह सब छोड़कर माता–पिता की सेवा की जाए, तो दुनिया में किसी चीज की कमी नहीं होगी। माता पिता के आशीर्वाद में बहुत शक्ति होती है एक चमत्कार जितनी।
वे हमें दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार करते हैं। इस दुनिया में माता पिता के सिवाय दूसरा कोई नहीं होता, जो हमारा साथ दे।हमारे माता–पिता ही होते हैं जो हर दुख और हर सुख की घड़ी में हमारे साथ खड़े रहते है। वे हमारा हर मोड़ पर साथ देते हैं। हमें एक अच्छा इंसान बनाते हैं। वे हमें सिर उठाकर जीना सिखाते हैं। वे हमें सही और गलत में फर्क बताते हैं। इसलिए हमें कभी अपने माता पिता को दुखी नहीं करना चाहिए।

नीतू
बी.ए. प्रथम, 280

मेरा हिन्दू कन्या महाविद्यालय

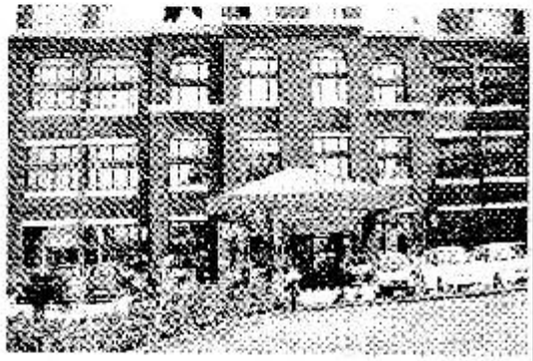

मेरे कॉलेज की हो रही है बड़ी बड़ाई
लडकियाँ इसकी सारी स्टेट पर हैं छाई
पढ़ने में भी आगे और खेलने में भी आगे
सारा जमाना है पीछे–पीछे भागे
अध्यापिकाएँ बड़ी मेहनती और विद्वान हैं
देती ज्ञान बहुत सारा सब ज्ञान की भण्डार हैं
सभी विषयों में कुशल और सरल स्वभाव हैं
बोले मीठी वाणी और पार लगवाती नाव हैं
माता–पिता सा प्यार देती और साहस भी देती हैं
कठिनाई चाहे कैसी भी आए उसको हर ये लेती हैं।

मिले इसे हर वो सफलता जिसका ये हकदार है
मिला हमें जो यहाँ आश्रय हम इसके कर्जदार है
भूले नहीं इनको हम जीवन भर यही हमारी पहचान है।
जिसने बनाया हमें सभ्य और बनाया गुणवान है।

नमन करती हूँ मै इसे, यही मेरा भगवान है
विद्या और चरित्र बनाने वाला एकमात्र स्थान है
मुझे गर्व है अपने आप ही, कि मै हिन्दू कॉलेज की एक छात्रा हूँ।

एच. जारीना खान
2133

सादगी ही जीवन है

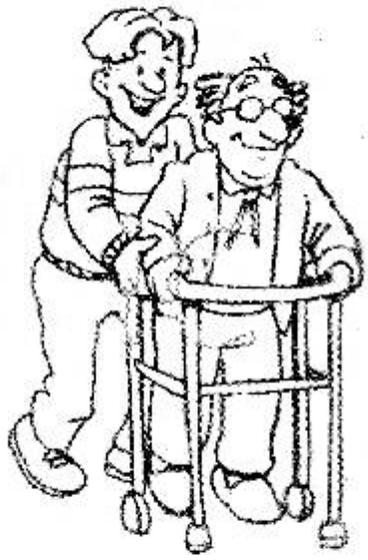

सादगी ही आदमी को इंसान बनाती है
सादगी ही आदमी को जीना सिखाती है
सादगी ही आदमी को सरलता सिखलाती है
सादगी ही आदमी की इज्जत बनाती है
सादगी ही आदमी को आगे बढ़ाती है
सादगी ही आदमी को ऊँचा उठाती है
सादगी ही आदमी को भीड़ से अलग चमकाती है
सादगी ही आदमी को प्रकाश दिखाती है
सादगी ही आदमी को महान बनाती है
सादगी ही आदमी को कर्तव्य समझाती है
सादगी ही आदमी की अलग पहचान बनाती है
अरे!
सादगी ही है वो सोना–चाँदी
जो हमें रहना सिखाती है
सादगी से बेशक! मिले न हीरे–मोती
लेकिन ये अपना अलग एक संसार बनाती है।

एच. जारीना खान
2133

चुटकुले

घर में कलह होने के बाद पति ने गुस्से में पंखे से रस्सी का फंदा लटकाया और स्टूल पर चढ़कर रस्सी को गले में डालने को तैयार हो गया।
पत्नी–जो कुछ करना है जल्दी करो
पति–तुम मुझे शांति से मरने भी नहीं दोगी ?
पत्नी–मुझे अभी स्टूल की जरूरत है।

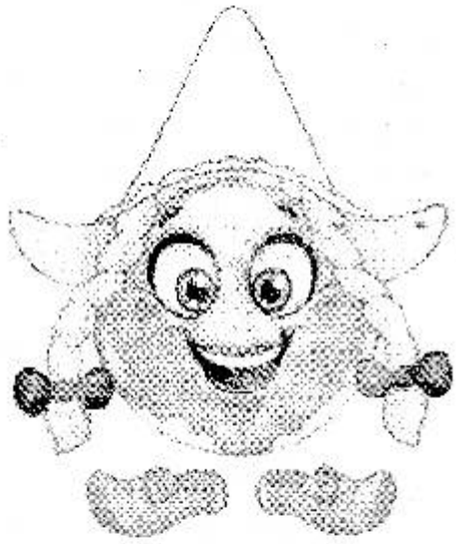

एक खूबसूरत लड़की बस स्टैड पर खड़ी थी। एक नौजवान बोला–चाँद तो रात को निकलता है, आज दिन में कैसे निकल आया?
लड़की बोली–अरे!उल्लू तो रात को बोलता है, आज दिन में कैसे बोल रहा है?

एक छात्र ने गणित के अध्यापक से कहा–सर!
अंग्रेजी के अध्यापक तो अंग्रेजी में बाते करते है।
आप भी गणित में बातें क्यों नहीं करते?
गणित अध्यापक ज्यादा तीन पाँच न कर।
फौरन नौ–दो ग्यारह हो जा, नही तो चार–पाँच रख दूँगा, तो छठी का दूध याद आ जाएगा।

राजबाला शर्मा
391
बी.ए. प्रथम

ज़रा सोचिए!

1. कौन–सा मंदिर विश्व के सबसे बड़े हिन्दू मंदिर परिसर के रूप में गिनीज बुक में दर्ज है।
2. किस भारतीय ने गणित को एक अलग विषय बताया।
3. जन्म दर एक साल के दौरान जन्मों की कितनी संख्या के प्रति मापी जाती है ?
4. किस ग्रह का दिन का मान और उसके अक्ष का झुकाव पृथ्वी के बराबर है ?
5. डाक द्वारा मतदान को क्या कहते हैं ?
6. आजाद भारत के पहले विदेश मंत्री कौन थे ?
7. पुस्तक **To Live** किसने लिखी है ?
8. चिपको आंदोलन किससे सम्बंधित है ?
9. भारतीय सेंसर बोर्ड फिल्म की अध्यक्षा कौन है ?
10. 2013–14 के बजट करों में जी टी पी में कितना योगदान है ?

उत्तर

1. अक्षर धाम मन्दिर, दिल्ली
2. आर्यभट्ट
3. 1000 आबादी
4. मंगल ग्रह
5. परोक्ष मतदान
6. जवाहर लाल नेहरू
7. विक्रम सेठ
8. वन संरक्षण
9. शर्मिला टैगोर
10. 21 फीसदी

एच. जारीना खान
2133

अपना घर

बेटी ने बडी होकर बाप से कहा
मुझे करनी है बी.ए. की पढ़ाई
तब बाप ने बेटी से कहा
अब तुम्हे यहाँ से जाना होगा अपने घर
बी.ए. की तुम करना वहीं पढ़ाई
मैने ढूँढ लिया है तुम्हारे लिए अच्छा वर।
तब माँ ने बेटी को समझाया।
अब तक तुम सिर्फ हमारी थी
पर अब यहाँ से तुम्हें जाना होगा।
हम सबसे दूर होकर
एक अलग घर बसाना होगा।
बहू बनकर बेटी ने अपनी सास से
बी.ए. वाली बात दोहराई
उसकी बातें सुनकर सारा गुर्राया
अगर आगे तक तुम्हें पढ़ना ही था।
तो पढ़ती वहीं अपने घर
इस घर की तू अब बहू है
अब सेवा हमारी कर।
तब बेटी ने बहुत सोचा और समझा
कि कौन सा है अपना घर।
या फिर इस संसार में
बेटियाँ होती ही है बेघर।

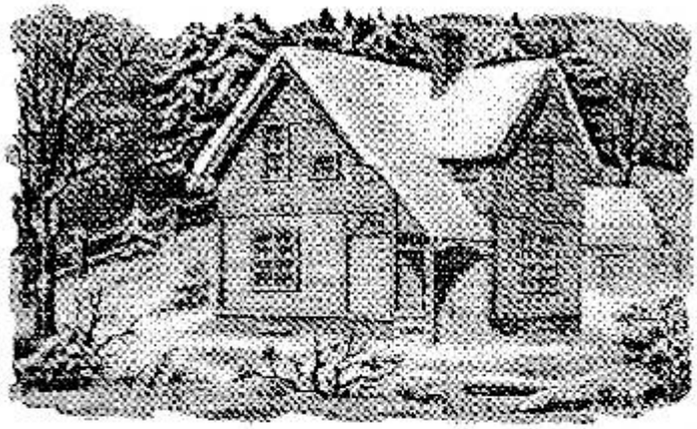

ज़रीना खान
बी.ए. तृतीय
2133

जिस दिन तुम हमें.....

जिस दिन तुम हमें बूढ़ा देखो,
सब्र करना और हमें समझने की कोशिश करना।
जब हम कोई बात भूल जाए।
तो हम पर नाराज न होना।
गुस्सा न करना और अपना बचपन याद करना।
जब तुमने पहला कदम ज़मीन पर रखा,
वो दिन याद करना।
जब हम बूढ़े होकर चल न पाएँ,
तो हमारा सहारा बनना।
जब तुम बीमार थे, हमने रातें जाग-जाग कर काटीं,
वो दिन याद करना।
अब हम बीमार हैं, तो हमारी सेवा करने में कंजूसी न करना।
जब हमने तुम्हारी ख्वाहिशें पूरी करने की कोशिश की,
वो दिन याद करना।
अब हमारी ख्वाहिशों के दिन हैं,
उनको पूरा करने की कोशिश करना ।

ज्योति सैनी
बी.ए. तृतीय वर्ष
2245

नाम अमर हो जाएगा

नन्हा बीज एक बो दे हम,
वही वृक्ष बन जाएगा।
छोटा सा हम दीप जला दे,
अंधकार मिट जाएगा।

अगर ईंट पर ईंट धरे हम,
महल खड़ा हो जाएगा।
अच्छे अच्छे काम करें हम,
देश बड़ा हो जाएगा।

मिल–जुलकर हम काम करें,
तो काम सरल हो जाएगा।
बिना रुके चलते जाएँ
तो नाम अमर हो जाएगा।

ऋतु
बी.एससी प्रथम
2528

शिक्षक

माताएँ देती नवजीवन, पिता सुरक्षा करते हैं।
लेकिन सच्ची मानवता, शिक्षक जीवन में भरते हैं।
सत्य, न्याय के पथ पर चलना, शिक्षक हमें बताते हैं।
जीवन–संघर्षों से लड़ना, शिक्षक हमें सिखाते हैं।
जीवन में कुछ पाना है, तो शिक्षक का सम्मान करें।
शीश झुकाकर श्रद्धा से तुम, बच्चो उन्हें प्रणाम करो।

गीनाक्षी,
बी.काम., द्वितीय, 1749

इस धरती पर क्या होगा ?

इस धरती पर क्या होगा ?
फुटपाथ पर चले आदमी, कुत्ते घूमे कारों में
लुटती है बेचारी जनता देखो आम बाजारों में।
कई बार सोचा करती हूँ हाल देखकर दुनिया का,
कहाँ गया परमेश्वर का भय परमेश्वर के प्यारों में।
कहने को यह चमन हमारा सभी बहारें अपनी हैं,
मगर बहारों वाली मस्ती मिलती नहीं बहारों में।
आखिर जान सका न कोई इस धरती पर क्या होगा,
सागर रहना नहीं चाहता बँधकर आज किनारों में।
फुटपाथ पर चले आदमी, कुत्ते घूमे कारों में।

गिरिजा
2529
बी.एससी. प्रथम

आओ परिवर्तन

आओ प्यारे साथ हमारे
जन सेवा हित साँझ सकारे।

बलात्कार और आर्थिक पीड़ा
से महिला को करें सुरक्षित
शिक्षित करके उस महिला को,
अपने देश का भविष्य सँवारे।

ना जाने कितने क्षेत्र
अब भी हैं अशिक्षित
शिक्षा को उन तक पहुचाएँ
देश को शिक्षित कर जाएँ।

उठो, देश के प्रिय सेवको,
बड़े, बूढ़ों और नौजवानों,
सुनो उने महिलाओं की पुकार,
बंद करवाओ ये अत्याचार।

आओ प्यारे साथ हमारे
जन सेवा हित साँझ सकोर।

खुशबू
बी.ए. प्रथम, 115

हँसगुल्ले

✱ एक बार एक शराबी अपनी आँख डोनेट करने गया।
डॉक्टर ने शराबी से पूछा, 'कुछ कहना चाहते हो'
शराबी, 'यरा, जिराको भी मेरी ये आँख लगाओ,
प्लीज उसको बता देना कि ये 2 पैग लगाने के बाद ही खुलती है।'

✱ सिंगला ने चैलेंज किया कि वह कुतुबमीनार सिर पर रख कर मुम्बई ले जाएगा।
सारे न्यूज चैनल वाले वहाँ पहुँच गए, तो बोला
बस....कोई उठा कर सिर पर रख दे।

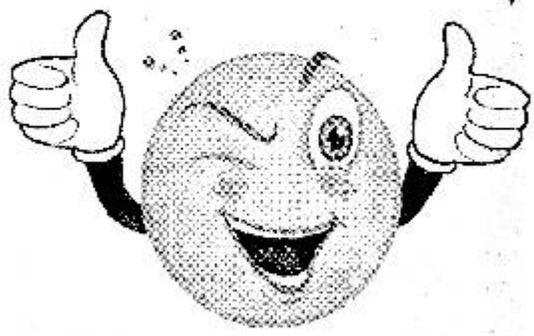

✱ एक रिक्शा वाले के पीछे लिखा था।
'सावन का इंतजार है।
पीछे से एक ट्रक आया और रिक्शा को उड़ा दिया
और उसके पीछे लिखा था 'आया सावन झूम के।'

✱ मन्नू–'डा0 साहब, हर रात मेरे सपनों में चूहे फुटबॉल खेलते है.....'
डॉक्टर, 'यह गोली ले लो, सब ठीक हो जाएगा।'
मन्नू 'कल ले लूं, आज फाइनल मैच है.....।'

✱ पठान टी.वी. पर बम रखकर अपनी पाकिस्तानी
टीम का भारत के साथ मैच देख रहा था।
बीवी ने पूछा, 'यह बम किस लिए रखा है ?'
पठान, 'अगर आज साले फिर हार गए, तो सारी टीम
को बम से उड़ा दूंगा।'

✱ सिंगला, 'जब मैं पैदा हुआ था, तो मिल्ट्री वालों ने 21 तोपें चलाई थीं।'
अशोक, 'कमाल है, सब का निशाना चूक गया।

✱ टीचर (पप्पू से) '1869 में क्या हुआ था ?'
पप्पू गाँधी जी का जन्म हुआ था।
टीचर–शाबाश! बबलू, अब तुम बताओ 1872 में क्या हुआ था।'
बबलू, 'गाँधी जी 3 साल के हो गए।

✱ सिंगला साइकिल के ब्रेक हाथ में लेकर डांस कर रहा था।
अशोक ने पूछा, 'अबे यह क्या कर रहा है ?'
सिंगला, 'दिखता नहीं, ब्रेक डांस कर रहा हूं।'

सीमा
बी.ए. द्वितीय
1145

आधुनिक जीवन

शहर की इस दौड़ में दौड़ के करना क्या है?
जब यहीं जीना है दोस्तो, तो फिर मरना क्या है ?
पहली बारिश में ट्रेन लेट होने की फिक्र है ?
भूल गए, भीगते हुए टहलना क्या है ?
सिरियल्स के किरदारों का सारा हाल मालूम है,
पर माँ का हाल पूछने की फुर्सत कहाँ है ?
अब रेत पे नंगे पांव टहलते क्यों नहीं?
108 है चैनल, फिर भी दिल बहलते क्यों नहीं?
इन्टरनेट की दुनिया से तो टच में है,
लेकिन पड़ोस में कौन रहता है जानते तक नहीं।
मोबाईल, लैंडलाइन सब की भरमार है,
लेकिन जिगरी दोस्त तक पहुँचे ऐसे तार कहाँ है?
कब डूबते हुए, सूरज को देखा था, याद है ?
कब जाना था, शाम का गुज़रना क्या है?
तो दोस्तो, शहर की इस दौड़ में दौड़ के करना क्या है?
जब यही जीना है दोस्तो, तो फिर मरना क्या है?

खुशबू
बी.ए. प्रथम, 115

'पहेलियाँ'

देखी एक अनोखी वर्षा
हाथी खड़ा नहाए।
बहे न पानी प्यास बुझे ना,
धरती भीगी जाय।

ओरा

कार्तिकेय का वाहन कहलाया
राष्ट्रीय पक्षी का सम्मान पाया।
मेघ बुलाने का है उसे वरदान,
नाम बताओ उसको पहचान।

मोर

रीतू
बी . एसारी. प्रथम

अमृत वचन

भूख न हो, तो भोजन व्यर्थ है।
होश न हो, तो जोश व्यर्थ है।
सदुपयोग न हो, तो धन व्यर्थ है।
विनम्रता न हो, तो विद्या व्यर्थ है।
साहस न हो, तो तलवार व्यर्थ है।
परोपकार न हो, तो इंसान व्यर्थ है।
श्रद्धा न हो, तो पूजा व्यर्थ है।
प्रेम न हो, तो जीवन व्यर्थ है।

किरण ढुल
बी.एस.,सी., 2514

जीवन

जीवन एक चुनौती है, सामना करें।
जीवन एक साहसिक कार्य है, हिम्मत रखें।
जीवन एक दुख है, स्वीकार करें।
जीवन एक दुखान्त घटना है, सामना करें।
जीवन एक कर्तव्य है, पूरा करें।
जीवन एक खेल है, आराम से खेलें।
जीवन एक रहस्य है, सुलझाएँ।
जीवन एक संगीत है, आनन्द उठाएँ।
जीवन एक सुअवसर है, सदुपयोग करें।
जीवन एक सपना है, महसूस करें।
जीवन एक यात्रा है, पूरा करें।
जीवन एक प्रतिज्ञा है, निभाएँ।

किरण ढुल
बी.एस.,सी., 2514

मोहे बिटिया न देना

माँ बहुत दर्द देकर, बहुत दर्द सहकर
तुझसे कुछ कहकर मैं जा रही हूँ
आज मेरी विदाई में जब सखियाँ मिलने आएँगी
सफेद जोड़े में लिपटी देख सिसक–सिसक भर जाएँगी
लड़की होने का फिर वो खुद पर अफसोस जताएँगी
माँ तू उनसे इतना कह देना
इन दरिंदो की दुनिया में संभल कर रहना
माँ राखी पर भईया की कलाई जब सूनी रह जाएगी
याद मुझे कर जब उनकी आँखे भर आएँगी
तिलक माथे पर करने की माँ! रूह मेरी भी मचल जाएगी
माँ तू भईया को रोने न देना
मैं साथ हूँ हर पल उनसे इतना कह देना
माँ पापा भी छुप–छुप कर बहुत रोएँगे
मैं कुछ कर ना पाया कहकर खुद को कोसेंगे
माँ वो अभिमान हैं, सम्मान हैं मेरा
तू उनसे इतना कह देना
माँ अब तेरे लिए क्या कहूँ
दर्द को तेरे शब्दों में कैसे बाँधू
फिर से जीने का मौका कैसे माँगू
माँ लोग तुझे सताएँगे
मुझे आजादी देने का तुझ पर इलजाम लगाएँगे
माँ सब कुछ सह लेना, पर यह न कहना
अगले जन्म मोहे बिटिया न देना।

नीतू
बी.ए. प्रथम
303

बारहमासा

कोहरा छाया ओस गिरी, जाड़े से जनवरी भरी।
दिन छोटे हैं रात बड़ी, फूल लिए फरवरी खड़ी।

तेज हुई सूरज की टॉर्च, महुआ से महका है मार्च।
गाँव–गली तपते खपरैल, आग लगाता है अप्रैल।

लाया धूल–पसीना रे, मारे मई महीना रे।
तेज बड़े लू के नाखून, जान बचाओ आया जून।

वर्षा लेकर आई है, कितनी सुखद जुलाई है।
नाचे मयूरा होकर मस्त, आया झूले लिए अगस्त।

इन्द्रधनुष है अम्बर में मौसम मुद्रित सितम्बर में।
पेड़ों ने पत्ते झाड़े, अक्तूबर के पिछवाड़े।

देखो लगा काँपने बन्दर, आया ठिठुरन लिए नवम्बर
धूप लगे अब तो सुन्दर, खत्म साल आ गया दिसम्बर।

सोनाली
बी.एस.सी. प्रथम
2520

सब्जी दरबार

सोनाली
2520

सिंहासन पर लाल टमाटर,
पंखा झलते मूली गाजर।
दरबारी हैं गोभी, आलू,
बैंगन, शलगम, प्याज, कचालू।
लौकी, लोबिया, सेम, चचिंडे,
मटर, भिण्डी, तोरी, टिंडे।
मेथी, पालक, मिर्ची, परमल,
पहरा देते कद्दू, कटहल।

सब्जी मंडी में मची धूम

गाजर की जब से हुई है शादी,
सुनकर मूली हो गई आधी।
टमाटर घूमे, गाल फुलाए,
प्याज उसको पसंद न आए।
टिंडे के घर टी.वी. आया,
आलू को यह नहीं सुहाया।
कद्दू दिन दिन पसर रहा है
डायटिंग करने से डर रहा है।
मिर्ची को जब गुस्सा आया,
उसने लौकी को काट खाया।
शकरकंद से भिड गया शलजम,
ढोल बजाए गोभी ढम ढम।

चुटकुले

* डॉक्टरः बिन्नू तुम्हारे दाँत में दर्द है, इसमें चाँदी भरनी पड़ेगी।
बिन्नूः अंकल, चाँदी की जगह चाकलेट भर दीजिए न।

* अध्यापकः तुम रोज विद्यालय आया करो। यदि तुम्हारी उपस्थिति कम हुई, तो तुम्हें परीक्षा में बैठने नहीं दिया जाएगा।
छात्रः कोई बात नहीं सर, मैं खड़े–खड़े ही परीक्षा दे लूँगा।

* टीचरः पृथ्वी और चाँद में क्या अंतर है ?
रमेशः जी, भाई बहन का।
टीचरः वह कैसे ?
रमेशः क्योंकि पृथ्वी को माँ और चाँद को मामा कहते है।

* एक चोर चाँदी का कप लेकर घर में घुसा।
उसकी पत्नी बोली– ये कहाँ से ले आये ?
चोर– दौड़ में जीता हूँ।
अच्छा! कौन–कौन दौड़ रहा था' पत्नी बोली।
चोर–मैं, दुकानदार, पुलिसवाला और मार्केट के सारे लोग।

सोनाली
बी.एस.सी. प्रथम
2520

अजन्मी बिटिया की अभिलाषा

उठ माँ।
मुझसे दो बातें कर ले
नौ महीने के सफर को
तीन महीनों तक विराम कर ले।
तू चैन की नींद सोई है
सच मान तेरे इस निर्णय से
तेरी बेटी बहुत रोई है।
कल सुबह डॉक्टर से
तू मुझसे मुक्ति पाएगी
नन्ही–सी अजन्मी बेटी के
टुकडे टुकडे करवा के
अपनी कोख उजाड़ोगी

महक
बी.ए. द्वितीय
1172

सुन माँ।

बस इतना कर दे
उन टुकडों को जोड़ के
ऊपर एक कफन दे दे
जिंदगी ना या सही
तेरे आंगन की चिडिया
मौत तो अच्छी दे दे
साँसे न दे सही
ए माँ! मुझे तू
मृत रूप में अपने अंश की
देख ले तू
ए माँ मुससे इतनी
नफरत न कर तू
भ्रूण हत्या है अभिशाप
कभी न करिएगा ये पाप!
बेटी होती देवी का अंश,
बिन बेटी न चलता वंश।

महक
बी.ए. द्वितीय
1172

पहेलियाँ

पूजा
बी.एस.सी. प्रथम
2532

ढाई अक्षर नाम में
एक शहर कहलाए।
जग प्रसिद्ध हर काल में,
शासक बैठा पाए।

दिल्ली

तन गोरा, मुख चन्दा सा, कोई न कहे अधूरी।
तोल माशा तोड़ लो फिर भी पूरी की पूरी।

पूड़ी

देन से घटता नहीं करिए जी भर दान।
छीने से छिनती नहीं, देते बढ़ता मान।

ज्ञान

बेचारी लड़कियाँ

क्यूं इस देश को खटकती हैं लड़कियाँ ?
क्यूं शीशे की तरह चटकती है लड़कियाँ ?
क्यूं अपने आप ही मिटती हैं लड़कियाँ ?
क्यूंलड़कियों को मिटाती है लड़कियाँ ?
क्यूं नजरों से सबकी बचती है लड़कियाँ ?
क्यूं सड़को पर सहमी–सी चलती हैं लड़कियाँ ?
क्यूं आदमी से इतना डरती है लड़कियाँ ?
क्यूं उसी के जन्म को तरसती हैं लड़कियाँ ?
क्यूं हर दर्द को सहन करती हैं लड़कियाँ ?
क्यूं तब भी कमज़ोर कहलाती हैं लड़कियाँ ?
क्यूं सब पर बोझ बनती है लड़कियाँ ?
क्यूं घुट–घुट कर मरती है लड़कियाँ ?
उठो करो संकल्प, पहचानो अपने आप को ,
अपनी ताकत को अपना बनाओ हथियार,
फिर देखो अपना करिश्मा
डरोगी तुम नहीं–डरेंगे वे
जो तुम्हे डराते हैं।

नीतू रानी
बी.ए. प्रथम
157

अमृत वाणी

* प्रत्येक सूर्योदय के साथ जीवन को नए सिरे से प्रारंभ कीजिए।
* घमण्ड से आदमी फूल सकता है, फैल नहीं सकता।
* बोलने से पहले दो बार सोचिए और करने से पहले तीन बार सोचिए।
* धन से ज्ञान बड़ा है क्योंकि धन को हम सुरक्षित रखते हैं और ज्ञान हमें सुरक्षित रखता है।
* कामना पूरी हो जाए, तो लोभ बढ़ता है। कामना पूरी न हो तो क्रोध बढ़ता है, इस लिए काम न छोड़ो, कामना छोड़ो।
* बिना खुद चले मंज़िल तक पहुँच जाओ, ऐसा संभव नहीं। आपको स्वयं प्रयास करना पड़ेगा।
* गुरू आपको दिशा देगा, गति देगा, कहीं भटक रहे होंगे, तो संभाल देगा। परंतु चलना तो स्वयं को पड़ेगा।
* गुरू की डाँट पिता की डाँट से बेहतर होती है।
* अभिमान से चलने वाले, हर किसी से झगड़ा करने वाले जल्दी नष्ट हो जाते हैं।

पूजा सैनी
2289

आज का विद्यार्थी

कौन कहता है कि आज का विद्यार्थी समय का पाबंद नहीं है? मैंने कई विद्यार्थियों को समय से पहले पहुँचते हुए देखा है चाहे वो cinema में हो क्यों न जाते हों ? कौन कहता है कि आज का विद्यार्थी पुरानी सभ्यता भूल गया है। मैंने कई विद्यार्थियों को रानी लक्ष्मीबाई की तरह बालो को बड़े करते हुए देखा है या फिर बाल बढ़ाना आजकल फैशन हो क्यों न हो ! कौन कहता है कि आज का विद्यार्थी अध्यापको का सम्मान नहीं करता है। मैंने कई विद्यार्थियों को नमस्ते करते हुए देखा है चाहे अपना लैक्चर पूरा करवाने के लिए ही क्यों न हो।

मोनिका मोर
बी.एस.सी. प्रथम, 2516

महाक्रांति का गुरुवर ने फिर से बिगुल बजाया है

अमावस की काली रातों में नया सवेरा आया है,
महाक्रांति का गुरूवर ने फिर से बिगुल बजाया है।
अपराध जगत के नायक थे, हृदय कालिमा से भरे थे,
घृणा द्वेष की अग्नि लिए, कारागर में बंद पड़े थे
अंतरक्रांति लाकर गुरूवर ने अंतर का उपचार किया,
सत्कर्म की ओर बढ़ाकर जीवन को आधार दिया
नई भोर का उसने फिर से बिगुल बजाया है।

गहन तमस था जीवन में, भटकाव था, संताप था,
वरदान तुल्य जीवन, नेत्र बिन, एक गहा अभिशाप था
देकर अंतर्दृष्टि गुरूवर ने अंतस का अंधकार हर लिया,
आत्मनिर्भर बना सबको, स्वाभिमान से है भर दिया,
घटा तमस दिव्य दृष्टि से वो ज्ञान सूर्य बन आया है।
महाक्रांति का गुरूवर ने फिर से बिगुल बजाया है।

कन्याभ्रूण हत्या कहीं, कहीं नारी को अपमान मिला,
यही 'द्वार का पायदान' यहीं अबला उसको नाम मिला,
सोई शक्ति को जगा, नर–नारी में संतुलन कर दिया,
नवयुग के नवानिर्माण में अबला को सबला का वर दिया,
सद्गुरू के कृपा हस्त तले सम्मान नारी ने पाया है।
महाक्रांति का गुरूवर ने फिर से बिगुल बजाया है।
मंथन करके प्रकट और विकसित किया प्रतिभाओं को,
उज्ज्वल बने भविष्य राष्ट्र का, विकासित किया क्षमताओं को,
शिक्षा नहीं है मात्र साधन, धन और मान प्रतिष्ठा का,
है दिशा सही तो भर देती, भाव कर्तव्य और निष्ठा का,
उपेक्षित गरीब बच्चों में आदर्श शिक्षा का दीप जलाया है।
महाक्रांति का गुरूवर ने फिर से बिगुल बजाया है।

पूजा सैनी
बी.ए. तृतीय वर्ष
2289

बेटी का अनोखा ब्यान

प्रिय पापा.....
बेटी बनकर आई हूँ
माँ–बाप के जीवन में,
बसेरा होगा कल मेरा
किसी और के आँगन में,
क्यों ये रीत
रब ने बनाई होगी,
कहते हैं आज नहीं
तो कल तू पराई होगी,
दे के जन्म पाल–पोसकर
जिसने हमें बडा किया,
और वक्त आए, तो उन्हीं
हाथों ने हमें विदा किया,
टूट के बिखर जाती है
हमारी जिन्दगी वही,
पर फिर भी उस बन्धन
में प्यार मिले जरूरी तो नहीं,
क्यों बस ये ही बेटियों
का नसीब होता है ?
क्यों रिश्ता हमारा इतना
अजीब होता है?
पापा ने बोला.....
बहुत चंचल, बहुत खुशनुमा सी होती है बेटियाँ
नाजुक–सा दिल रखती है
मासूम–सी होती है बेटियाँ।
बात–बात पर रोती हैं
नादान–सी होती है बेटियाँ।
रहमत से भरपूर
खुदा की नियामत होती हैं बेटियाँ।
घर महक उठता है
जब मुस्कुराती है बेटियाँ।
अजीब–सी तकलीफ होती है
जब दूसरे घर जाती हैं बेटियाँ
घर लगता है सूना–सूना
कितना रूला के जाती है बेटियाँ
खुशी की झलक
बाबुल की लाड़ली होती है बेटियाँ
ये हम नहीं कहते
ये तो रब कहते है.....
कि जब मैं बहुत खुश
होता हूँ।
तो जन्म लेती है
प्यारी सी बेटियाँ।

हिमांशी
बी.ए. द्वितीय
1232

वक्त की पुकार

वक्त न गवां कुछ Great कर
नया–नया सा कुछ Initiate कर
जो Bad Things हैं, उनसे तू Hate कर,
सही है जो उसे तू Appreciate कर।
खोया जो अब तक, वो Compensate कर,
Delay हुआ बहुत, अब न तू Late कर।
काम है बहुत Time न Waste कर,
दिल में नई तरंगे Vibrate कर।
जन्मा है Earth पर, हर काम तू Great कर,
बस तू जो भी कर Up-to-date कर।
Golden Chance की जरा सी तू Wait कर,
Life के को Maths को तू Calculate कर।

रीचा जैन
बी.ए. द्वितीय
1102

बेटी बचाओ

लड़के की तरह लड़की भी मुट्ठी
बाँधकर पैदा होती है।
लडके की तरह लड़कियाँ भी माँ
की गोद में हँसाती–रोती है।
करते शैतानियाँ दोनों एक जैसी है।
करते मनमानियाँ दोनों एक जैसी है।
दादा की छड़ी और दादी का
चश्मा तोड़ते हैं।
लड़के जैसे माँ का आँचल ओढ़ते हैं।
भूख लगे तो रोते हैं।
लोरी सुनकर सोते हैं।
आती है दोनों की जवानी
तो बनती है
दोनों की कहानी
दोनों कदम मिलाकर चलते हैं।
दोनों दीपक बनकर जलते है।
लड़के की तरह लड़की भी नाम
रोशन करती है।
कुछ भी नही अंतर फिर भी
जाने क्यों जन्म से पहले
मारी जाती हैं बेटियाँ।

हिमांशी
बी.ए. द्वितीय
1232

सजाए रखो

ख्वाब आँखों में ऊंचे सजाए रखो
दोस्ती आसमां सी बनाए रखो
कोई अपना दगा दे न जाए कभी
फासला दोस्तों से बनाए रखो
दुख न बाँटेगा कोई यहाँ आपका
दर्द सीने में छिपाए रखो
देश से बढ़कर मंदिर न मस्जिद कोई
सर को सजदे में उसके झुकाए रखो
आपका घर भी है काँच का सोच लो
हाथ में अब ना पत्थर उठाए रखो।

सीमा सरोहा
बी.ए. तृतीय, 2282

मानव जीवन

सादा जीवन उच्च विचार,
मानव जीवन का शृंगार।
जन–जन हो इसका प्रचार,
हो मानव–जीवन का उद्धार।
मानव जीवन बड़ा कीमती,
इसका कोई मेल नहीं।
अच्छे कर्म करे मनुष्य,
उनका कोई तोल नहीं।
कमी अपने जीवन में तुम,
हार न मानो ए मानव।
वरना जुड़ेगा संग तुम्हारे
'कमजोर' शब्द का यह लांछन।

पूजा भारद्वाज
बी.ए. द्वितीय
1167

हो रहा भारत निर्माण

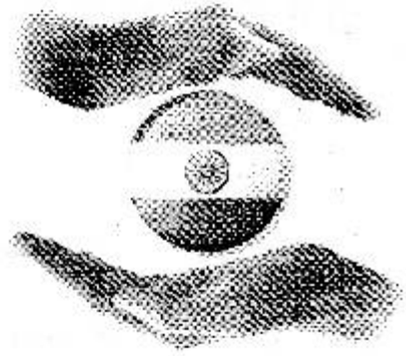

माँ हमारी Mom बन गई छोरियां Item Bomb बन गई।
पिता Dad जी बन गए, घर के मालिक Head बन गए।
गाय हमारी Cow बन गई, शर्म हया अब Wow बन गई।
काढ़ा हमारा Chai बन गया, छोरा बेचारा Guy बन गया।
कठपुतली अब Puppet बन गया, हमारा भारत Great बन गया।

हल्दी हब Turmeric बन गयी, ग्वारपाठा Alovira बन गया।
योग हमारा Yoga बन गया, घर का जोगी Joga बन गया।
भोजन 100 रू Plate बन गया, हमारा भारत Great बन गया।

बीड़ी अब Cigrate बन गई, चटाई अब Carpet बन गई।
मुक्केबाजी Boxing बन गई, कुश्ती हमारी Wrestling बन गई।
गिल्ली डंडा Cricket बन गया, हमारा भारत Great बन गया।

घर की दीवारें Wall बन गई, दुकानें Shoping Mall बन गई।
गली–मोहल्ला Ward बन गया, ऊपर वाला Lord बन गया।
रक्षाकवच Helmet बन गया, हमारा भारत Great बन गया।
INDIA UP TO DATE बन गया, हमारा भारत Great बन गया।

पिंकी शर्मा
बी.ए. द्वितीय
1117

योग्यता

कहने योग्य– सत्य
खाने योग्य– गम
पीने योग्य– क्रोध
लेने योग्य – ज्ञान
देने योग्य– दान
बोलने योग्य– मधुर वचन
धारण योग्य– सन्तोष
दिखाने योग्य – दया
जीतने योग्य– मोह
पढ़ने योग्य– सद्ग्रन्थ
छोड़ने योग्य – ईर्ष्या
समझने योग्य– अपनी त्रुटियाँ
व्यवहार योग्य– सहनशीलता
करने योग्य– दूसरों की भलाई
सम्पूर्ण – इंसानियत

सुशीला अहलावत
बी.ए. द्वितीय
1148

शायरी

हर गम को पाला नहीं जाता,
काँच की चीजों को उछाला नहीं जाता
कुछ करना है तो मेहनत से करो यारी
हर बात को All is well कहके टाला नहीं जाता।

भगवान ने इंसान को क्या से क्या बना दिया
किसी को कवि, तो किसी को कातिल बना दिया
दो फूलों का वजन उठा सकती नहीं थी मुमताज
शाहजहाँ ने उस पर भी ताजमहल बना दिया।

मोनिका मोर
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
2516

आज के विद्यार्थी

आज के विद्यार्थी न पढ़ते है,
न लिखते हैं
मंज़िल का पता नहीं,
फिर भी कदम उनके बढ़ते है।
लगाते हैं समय,
बालों और पोशाकों को सजाने में
कहते हैं इसके सिवाय,
क्या हैं इस ज़माने में।
सिर पर टोपी आँखों पर चश्मा,
रूमाल हाथ में रखते है।
लूजर पैंट और लूजर शर्ट,
जोकर जैसे लगते है।
मत चल इस फैशन पर,
इसमें तुमने क्या पाया है ?
बस तुमने अपना,
कीमती समय गंवाया है।
बीता हुआ समय,
वापिस नहीं आएगा।
अब पढ़े ले वरना,
बाद में पछताएगा
अगर यह समय,
तू लगाएगा पढ़ने में
तो बस थोड़ा ही समय लगेगा
सभ्य बनने में।

नीतू रानी
बी.ए. प्रथम
157

बेटियों को भी दो सम्मान

बेटियां किसी भी हाल में बेटों से कम नहीं है, बेटियों को भी अगर प्यार–सम्मान दो, तो बेटियां भी अपने माँ–बाप का नाम रोशन कर सकती हैं और दूसरी तरफ बेटे अपने माँ–बाप का नाम डुबो भी देते है। समाज में उनकी नाक कटवा देते है। बेटे के जन्म पर जहाँ बढ़ चढ़कर खुशियाँ मनाई जाती हैं, वहीं एक बेटी के जन्म लेने पर उसी परिवार में मानो मातम छा जाता है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, झांसी की रानी, मीरा बाई आदि कितने नाम हैं जिन्होंने अपने और अपने माँ–बाप का और अपने देश का नाम पूरे विश्व में रोशन किया है। इस लिए बेटियों को पत्थर कहकर उनका अपमान नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें भी बेटे का दर्जा देकर उनके चहुमुंखी विकास की ओर ध्यान देना चाहिए। फिर वो दिन दूर नहीं, वो बेटी भी अपना नाम जरूर रोशन करेगी। अगर इंसान बेटा–बेटी को एक समान मानते हुए अपना भरपूर प्यार, सम्मान व अच्छे संस्कार उसे प्रदान करेंगे, तो बेटियां भी ज़रूर अपने माँ–बाप का नाम रोशन करेगी।

मीनू रेढू
बी.ए. द्वितीय
1137

अनपढ़ का जमाना

मीनू रेढू
बी.ए. द्वितीय
1137

अनपढ़ का जमाना हो बाबू पाछे जा लिया,
जाऊंगा स्कूल में घणा तंग पा लिया,

उठ सवेरे बारी–कूसी खां के घर तै जाऊं,
पाटया कुरता पाटि चादर जाड़े में ठर जाऊं।
तेरी लीली धोली गाजै मैं मोड़–मोड़ कै लाऊं,
चप्पल, घुस्से, लात, गाली सारे दिन मैं खाऊँ।
तेरी रन्डी खुडी ने मेरा खा लिया।
अनपढ़ का जमाना तो बाबू पाछे जा लिया,
जाऊँगा स्कूल में घणा तंग पा लिया।
पालत जैसा काम कठिन ना दुनियादारी में,
गर्मी के माह आवै पसीना शिखर दोपहारी मैं,
घर आते ही मिले उल्हाना आज चर गई म्हारै गैं,
तेरी रोज–रोज की मार तै बाबू तंग आ लिया।
अनपढ़ का जमाना हो बाबू पाछे जा लिया,
जाऊंगा स्कूल में घणा तंग पा लिया।

गलती

गलती सब से होती है,
गलती से घबराना मत,
हर गलती से कुछ सीखना
गलती करके झुंझलाना मत,
अपनी गलती मान लेना,
गलती कभी छुपाना मत,
दूसरों की गलती क्षमा कर देना,
बात को अधिक बढ़ाना मत।

मीनू रेढू,
बी.ए. द्वितीय, 1137

टेस्ट ने छीना REST

हर Mondy को Test हमारा,
छीना इसने Rest हमारा।
Sunday को हम पढ़ते रहते,
दस–दस घंटे रटते रहते।
मस्ती है हमसे कोसों दूर,
घर पर रहने को मजबूर।
मुश्किल से है Sunday आता,
उस दिन भी यही टेस्ट रूलाता।
हम से अच्छी बहन समीक्षा,
साल में उसकी दो परीक्षा।
शाम को खेले मौज मनाए,
ताजा होकर स्कूल वह जाए।
टेस्ट ने हर ली खुशी हमारी,
कोई न समझे स्थिति हमारी।
कौन हमें मुक्ति दिलवाए,
इस झंझट से हमें बचाएं।

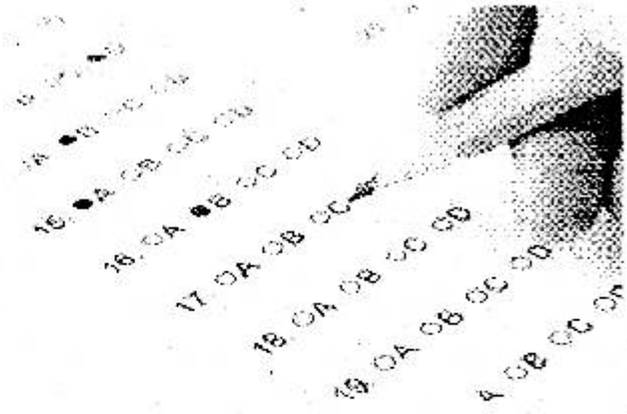

मीनाक्षी
बी.कॉम द्वितीय
1749

माँ–बाप

भूलो सभी को मगर
माँ–बाप को भूलना नहीं।
उपकार अणगणित है उनके
इस बात को भूलना नहीं।
पत्थर पूजे होगे कई तुमने
जन्म जन्म के खातिर अरे!
पत्थर बन माँ–बाप का
दिल कभी दुखाना नहीं।
मुख का निवाला दिया इन्होने तुमको बड़ा किया
लाड लड़ाए लाखों सारे अरमान पूरे किए
पूरे करो उनके अरमान, बात यह भूलना नहीं
लाखों कमाते होगे, मगर माँ–बाप से ज्यादा नहीं
सेवा बिना राब राख, बात यह भूलना नहीं
संतान से सेवा चाहो, संतान बनकर सेवा करो
जैसी करनी वैसी भरनी, न्याय यह भूलना नहीं
सोकर खुद गीले में सूखी जगह तुम्हे सुलाया
माँ–बाप की आँखों को, भूलकर भी भिगोना नहीं
जिसने तुम्हारी राहों में फूल है बिछाए, कांटे कभी उनको न चुभने देना।
धन तो मिल जाएगा मगर माँ–बाप क्या मिल पाएँगे
पल–पल पावन उनके चरणों की, चाह कभी भूलना नहीं।

कॉलेज के वे सुहावने पल

मुझे आज भी बहुत अच्छी तरह याद है–मेरा कॉलेज का वो पहला दिन। मैंने कॉलेज की जिन्दगी के बारे में बहुत कुछ सुना था, जिससे मेरे मन में उत्साह और घबराहट दोनों थी। जब मैंने कॉलेज में पहली बार प्रवेश किया, तो भय, संकोच, उत्साह के भाव एक साथ मन में हिलोरें ले रहे थे।

मैने सबसे पहले कॉलेज की लाइब्रेरी को देखा, क्योंकि मुझे मैगज़ीन पढ़ने का बहुत शौक है। फिर मैने यहां की कैन्टीन को देखा, क्योंकि मैं खाने–पीने की भी बहुत शौकीन हूँ। फिर मैंने अपने कॉलेज क एक पूरा चक्कर लगाया। यहां की साफ–सफाई को देखकर मेरा मन अत्यधिक प्रसन्न हुआ। शुरू–शुरू में मैं अपने आप को अकेला महसूस करती थी, क्योंकि जो सहेलियाँ पहले मेरे साथ थीं उनके विषय अलग होने की वजह से वे मुझसे दूर हो गई। लेकिन समय बीतने के साथ–साथ मेरी बहुत सारी अच्छी सहेलियाँ बन गई। मेरी सबसे अच्छी दो सहेलियाँ है उनके नाम गीत और कन्नू हैं।

हिन्दू कॉलेज की सभी अध्यापिकाएँ बहुत अच्छी व दयालु स्वभाव की हैं। यहां पर जितना ध्यान पढ़ाई पर दिया जाता है, खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि को भी उतना ही महत्व दिया जाता है। इस कॉलेज में किस तरह मेरा ढ़ाई वर्ष से भी ज़्यादा समय बीत गया, मुझे पता ही नहीं चला और खासकर तब, जब मैने यूथफैस्टीवल में भाग लिया हुआ था। इस कॉलेज में ये मेरा अंतिम साल है। जब भी ये सोचती हूँ कि मुझे ये कॉलेज छोड़कर जाना पड़ेगा, तो मैं बहुत दुखी हो जाती हूँ।

इस कॉलेज की सभी अध्यापिकाएँ बहुत अच्छी है और मैं सबको बहुत याद करूँगी। लेकिन कुछ खास अध्यापिकाएँ ऐसी है जिनसे मैं पढ़ी हूँ। मैं उन्हे कभी भी भूल नहीं पाऊँगी। हिन्दी की अध्यापिकाओं का हमें प्यार से समझाना, उनका मुस्कुराना, अंग्रेज़ी की प्राध्यापिकाओं का वो स्नेह। प्राचार्या मैड़म का अर्थशास्त्र हमें प्यार से समझाना और हमें बहुत प्यार करना। संगीत विभाग की प्राध्यापिकाओं का बड़ी बहन की तरह हमारा मार्गदर्शन करना, उनका स्नेह, उनका वो नकली गुस्सा और उनकी वो प्यारी–सी मुरकुराहट आदि। इन सब की अब मुझे आदत सी हो गई है।

अब मुझे अपनी इन सभी अध्यापिकाओं और मेरी सभी सहेलियों को छोड़कर जाना होगा। लेकिन इन सब की याद मेरे मन में हमेशा के लिए ताजा रहेगी और मेरे चेहरे पर एक मीठी और प्यारी सी मुस्कान छोड़ जाएँगी।

भावना शर्मा
बी.ए. तृतीय
2150

समाज में लड़की

माँ की आँख में आँसू देखे, जब दुनिया में आई मैं,
ज़हर पिलाते तरस आ गया, तब कहीं बच पाई मैं
कटे फटे थे कपड़े मिलते, भाई का टूटा मिला खिलौना
मार और दुत्कार मिली, कदम कदम पड़ा था रोना
ले भइया की फटी किताबें चाव से करने लगी पढ़ाई
जल्दी हाथ में झाड़ू आया, क्योंकि बढ़ गई थी महँगाई
मां बाप ने पिण्ड छुड़ाया, अधेड़ पुरूष का हाथ थमाया
ननद सास के ताने खाए, पति परमेश्वर ने हाथ उठाया
तेल छिड़ककर आग लगा दी, नहीं किसी ने मुझे बचाया
पुलिस बिक गई थी फिर से, गवाही को न कोई आगे आया
आधे नर या आधी नारी, अब तो बन जाओ तुम चिंगारी
हर लड़की अब कसम उठाए, अब कोई जुल्म न होने पाए।

रेणू
बी.ए. द्वितीय
1136

तीन चीजें

1. तीन चीजें मनुष्य को एक बार मिलती है।
   माता, पिता, सौदंर्य
2. तीन चीजें कभी छोटी नहीं होती।
   दुश्मन, कर्ज, बीमारी
3. तीन चीजें मनुष्य को उसके असली उद्देश्य से दूर ले जाती है।
   लालच, गुस्सा, बदचलन
4. तीन चीजें भाई–भाई को भी एक दूसरे की जान का दुश्मन बनाती है।
   जर, जोरू, जमीन।
5. इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाए।
   इस तरह न खर्चो कि कर्ज़ हो जाए।
   इस तरह न खाओ कि अपच हो जाए।
   इस तरह न चलो कि देर हो जाए।
6. मनुष्य में तीन चीजें वास करती हैं।
   मनुष्यता, पशुता, दिव्यता
   आप जिसको चाहे बढ़ा सकते हैं।
7. तीन चीजें निकल कर वापस नहीं आती हैं
   बात जुबान से, तीर कमान से, आत्मा शरीर से

पूजा सैनी
2289

सफलता का रहस्य

बटन ने कहा–आगे की ओर बढ़ने की कोशिश करो।
बर्फ ने कहा– ठण्डे रहकर धीरज धारण करो।
घड़ी ने कहा– प्रत्येक काम समय पर करो।
हथौड़े ने कहा– ठीक स्थान और ठीक समय पर प्रहार करो।
चाकू ने कहा– प्रत्येक काम में तेजी और गति लाओ।
मोहर ने कहा– जो भी मिले, उस पर अपनी छाप छोड़ दो।
खिड़की ने कहा– धूप, वर्षा और जाड़े आदि की चिन्ता न करो।

किरण दुल
बी.एस.,सी.
2514

बेटियां

विनती सुनकर मेरी भगवान
एक वचन तुम दे जाना
'गर्भ में पल रही हैं जो बेटियाँ
उनकी जान बचा जाना'
उनकी जान बचा जाना.....
बेटी को मरवाने में
माँ भी नहीं शरमाती है
लिंग–जाँच करवाने में भी,
माँ ही आगे आती है।
उनको सदबुद्धि दे भगवान
मन उनका पलटा जाना
'गर्भ में पल रही हैं जो बेटियां
उनकी जान बचा जाना'
हाल बुरा होता है उनका
जो बेटी को मरवाते हैं।
वे ही फिर बेटी को ढूंढे
जब बेटे को व्याहते।
फिर बेटी मिलेगी उन्हें कहाँ
यह बात उन्हे समझा जाना।
'गर्भ में पल रही हैं जो बेटियां
उनकी जान बचा जाना'।

मीनू रेढू
बी.ए. द्वितीय, 1137

संस्कृत विभाग

2013–2014

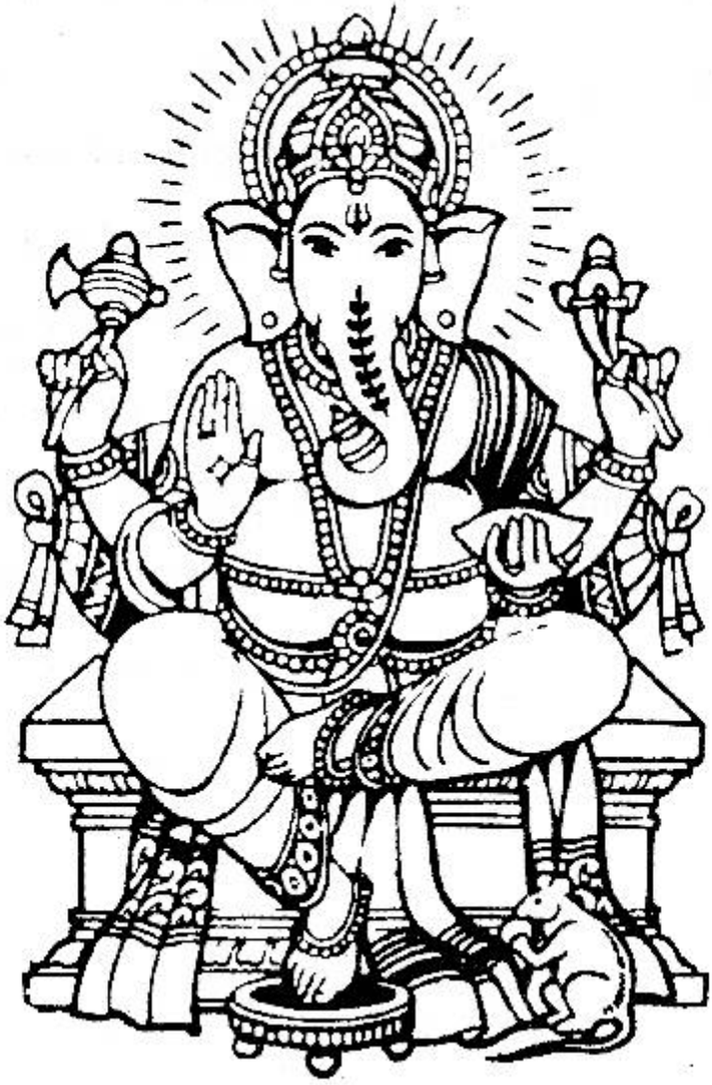

प्राध्यापिका सम्पादिका
श्रीमती सुषमा वर्मा

छात्रा सम्पादिका
शिवराज नरवाल
बी.ए. तृतीय वर्ष, 2123

विषयानुक्रमणिका

1.	सम्पादकीयम्	श्रीमती सुषमा वर्मा प्राध्यापिका संस्कृत विभाग
2.	नीति शतकम्	प्रीति, बी.ए. प्रथम वर्ष रोल नं. 191
3.	गायत्री मंत्र	रेणु, बी.ए. प्रथम वर्ष रोल नं. 170
4.	वन्दे मातरम	नीतू, बी.ए. प्रथम वर्ष रोल नं. 157
5.	चाणक्य–नीति	रीना, बी.ए. द्वितीय वर्ष रोल नं. 1140
6.	हितोपदेश	खुशबू, बी.ए. द्वितीय वर्ष रोल नं. 1300
7.	नीति–सूक्तयः	ममता, बी.ए. द्वितीय वर्ष रोल नं. 1194
8.	सूक्तिसग्रंह	काजल, बी.ए. द्वितीय वर्ष रोल नं. 1196
9.	ईश–स्तुति	दर्शन, बी.ए. तृतीय वर्ष रोल नं. 2220
10.	श्री मद भगवद गीता	रीना, बी.ए. तृतीय वर्ष रोल नं. 2121
11.	विद्याया महत्वम्	शिवराज, बी.ए. तृतीय वर्ष रोल नं. 2123
12.	परोपकार	रीना, बी.ए. तृतीय वर्ष रोल नं. 2291

सम्पादकीयम्

संसारे अनेके भाषाः प्रचलिताः सन्ति। तास भाषासु संस्कृत भाषा प्रचलिताः अस्ति। संस्कृत भाषा तु भारतस्य सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति। विश्वस्य सर्व प्राचीनाः ग्रन्थाः वेदाःसंस्कृत भाषायामेव लिखिताः न केवल भारतीयाना जीवने संस्कृत भाषायाः महत्वम् अस्ति, अपितु विश्वस्यमावनानां जीवनेऽपि अस्याः अति गरिमामयी स्थिति अस्ति। अद्यापि इयं भाषा संसारस्य प्रमुखेषु विश्व विद्यालयेषु पाठ्यते। मानव सभ्यता संस्कृतिश्चव संस्कृताश्रिता। धन्या एवं अस्ति इयं भारतभूमिः यत्र मधुरा संस्कृत भाषा समुल्लसति। अद्यापि निरन्तर अनवतरू पेण प्रवहन्ती इय पुण्य–सलिला सरित प्राचीनाऽपि नवैवा।

उक्त चः

"यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीत ले। तावद् संस्कृत भाषा लोकेषु प्रचरिष्यति।"

श्रीमति सुषमा वर्मा
प्रध्यापिका
संस्कृत विभाग

नीति शतकम्

1. विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद धनमाप्नोति धनाद्धर्मम् ततः सुखम्।।

अर्थः– विद्या नम्रता प्रदान करती है। विनय से योग्यता प्राप्त होती है। योग्यता से धन प्राप्त होता है। धन से धर्म प्राप्त होता है। उस धर्म से उत्तम सुख प्राप्त होता है।

2. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि।
एक श्चन्द्रतमो हन्ति न च तारागणोऽपि।।

अर्थः– एक गुणवान पुत्र अच्छा है। सैकडों मूर्ख पुत्र व्यर्थ है। अकेला चन्द्रमा अन्धकार को नष्ट कर देता है। नक्षत्रों का समूह अंधकार का विनाश नहीं कर सकता है

3. यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत।
एवं पुरूषकारेण बिना दैव व सिध्यति।।

अर्थः– जिस प्रकार एक पहिए से रथ का चलना संभव नहीं है। वैसे ही प्रयत्न के बिना भाग्य फल देने वाला नहीं है।

4. परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।।

अर्थः इस परिवर्तनशील संसार मे किसकी मृत्यु नहीं होती है। तथा जिसका जन्म नहीं होता है उसी का जन्म लेना सार्थक है जिसके जन्म लेने से वंश की उन्नति होती है।

प्रीति सोनी
बी.ए. प्रथम, 191.

गायत्री महामन्त्र

ओउम भूर्भुवः स्वः तत्सवितुवरेण्यं, भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

शब्दार्थः

ओउमः सबकी रक्षा करने वाला।
भूः जो सब जगत् के जीवन का आधार प्राणों से प्रिय और स्वयं मे है।
भुवः जो सब दुखों से रहित जिसके संग से जीवन सब दुखों से छूट जाता है।
स्वः जो नाना विध जगत में व्यापक होकर सबको धारण करता है।
ततः उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग
सवितुः जो सब जगत का उत्पादक और ऐश्वर्य का दाता
वरेण्यमः जो स्वीकार करने योग्य अति श्रेष्ठ
भर्गोः शुद्ध स्वरुप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप है।
देवस्यः जो सब सुखों का दाता और जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते है।
धीमहिः धारण करें। इस प्रयोजन के लिए कि
धियोः बुद्धियो को
योः जो सविता देव परमात्मा
नः हमारी
प्रचोदयात्: प्रेरणा करे अर्थात बुरे कामों से छुड़ा कर अच्छे कार्यो से प्रवृत करें।

रेणु दुहन
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं 170

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयज–शीतलाम्।
शस्य–श्यामलां मातरम्
वन्दे मातरम्
शुभ्र–ज्योत्सना–पुलकित यामिनीम्
फल्लकुसुमित–द्रुमदल–शोभिनीम्
सुहासिनी सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदा मातरम्।
वन्दे मातरम्।

भावार्थः

सुन्दर जल वाली सुन्दर फल वाली, मलय पर्वत से आती वायु से शीतल बनी हुई और हरी–भरी खेती वाली मातृभूमि की मैं वन्दना करती हूँ, वह मातृभूमि सफेद चाँदनी से प्रसन्न रात्रियों वाली है, वह खिले हुए फूलों से युक्त वृक्षों से शोभा देती है वह सुन्दर हसी वाली औ सुमधर बोलने वाली है, वह सुख देने वाली और वर देने वाली है। ऐसी मातृभूमि की मै वंदना करती हूँ।

नीतू रानी
बी.ए. प्रभग वर्ष
रोल नं: 157

चाणक्य–नीति

1. जल बिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः
सःहेतु सर्वविद्याना धर्मस्य च धनस्य च।।
अर्थः धन और अन्न के व्यवहार में विद्या ग्रहण करने में, भोजन करने से और व्यवहार में जो व्यक्ति लज्जा नहीं करता, वह सदैव सुखी रहता है।

2. अनित्यानि शरीराणि क्षिमवो नैव शाश्वतः।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्म संग्रहः।।
अर्थः सभी शरीर नाशवान है, सभी धन संपति चलायमान है, मृत्यु निकट है। ऐसे में मनुष्य को सदैव धर्म का संचय करना चाहिए।

3. सत्य माता–पिता ज्ञान धर्मो भ्राता दया एवं सा
शांति पत्नी क्षमा पुत्र षडेते मम बान्धवाः।।
अर्थः सत्य मेरी माता है, पिता मेरा ज्ञान है, धर्म मेरा भाई है, दया मेरी मित्र है, शांति मेरी पत्नी है और क्षमा मेरा पुत्र है। ये छः मेरे बधु बांधव है।

4. यस्य स्नेहो भय तस्य स्नेहो दुखस्य भाजनम्।
स्नेह मूलानि दुखानि तानि त्यक्त्वां वसेतु सुखम्
अर्थः जिसे किसी से लगाव है, वह उतना ही भयभीत होती है। लगाव दुख का कारण है। दुखो की जड लगाव है। अंतः लगाव को छोड़कर सुख से रहना सीखो।

5. अहो बत विचित्रा णि चरितानि महात्मनाम्।
लक्ष्मी तृणाय मन्यन्ते तद भारेण नमन्ति च।।
अर्थः अहो! आश्चर्य है कि बड़ो के स्वभाव विचित्र होते है, वे लक्ष्मी को तृण के समान मानते है और उसके प्राप्त होने पर उसके भार से और भी अधिक नम्रहो जाते है।

रीना यादव
बी.ए. द्वितीय वर्ष,
1140

हितोपदेश

1. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।
अर्थः सभी कार्य परिश्रम से सफल होते है, इच्छा करने मात्र से नहीं। पशु सोए हुए सिंह के मुख में स्वयं प्रवेश नहीं करते है।

2. लोभात क्रोध : प्रभवति, लोभात कामः प्रजायते।
लोभात् मोहश्च नाशश्च, लोभः पापस्य कारणम।।
अर्थः व्यक्ति में लोभ से क्रोध पैदा होता है। लोभ से काम पैदा होता है, लोभ के कारण ही मोह और नाश होता है। लोभ ही पाप का सबसे बड़ा कारण है।

3. सर्वस्यही परीक्ष्यन्ते स्वभावा नेतरे गुणाः
अतीत्य हि गुणान सर्वान स्वभावो मूर्ध्नि वर्त ते।।
अर्थः सभी व्यक्तियों के स्वभाव की परीक्षा की जाती है। दान दया आदि गुणो की नहीं, क्योकि सभी गुणों को लाघकर स्वभाव ही सबसे ऊपर रहता है।

4. अयं निजः परोवेति गुणना लघुचे त्तसाम्।
उदार चरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम।।
अर्थः यह व्यक्ति अपना है, यह पराया है ऐसी धारणा तुच्छ हृदय वाले मनुष्य की होती है। उदार हृदय वाले महापुरूषों के लिए तो सारी पृथ्वी ही कुटुम्ब के समान है।

5. संसार विषवृक्षस्य द्वे एवं रसवत्फले।
काव्यामृतर सास्वाद :संगमः सुजनै सह।।
अर्थः इस संसार रूपी विष वृक्ष के दो ही रसयुक्त फल है। काव्य रूप अमृत रस का आस्वादन करना और दूसरा सज्जनों का साथ।

रवुशबू
बी.ए. द्वितीय वर्ष,1300

नीति सूक्तयः

1. न विश्वसेत्कुमित्रे च मित्रे चापि न विश्वसेत्।
कदाचित्कुपितं मित्रं सर्वगुह्यं प्रकाशयेत्।।

अर्थः बुरे मित्र के प्रति विश्वास नहीं करना चाहिए। साथ ही मित्र पर भी अधिक विश्वास नहीं करना चाहिए। किसी समय क्रोध से भरा हुआ मित्र छिपाने योग्य सभी बातों को प्रकट कर सकता है।

2. उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं जपतो नास्ति पातकम्।
मौने च कलहो नास्ति जागरतो भयम्।।

अर्थः परिश्रम करने पर गरीबी नहीं रहती है। जाप करते हुए व्यक्ति को पाप नहीं लगता है। शांत रहने पर लडाई झगडा नही होता है। सावधान रहने पर डर नहीं रहता है।

3. एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादित कुल सर्व यथा चन्द्रेण शर्वरी।।

अर्थः विद्या को प्राप्त करने वाले, अच्छे स्वभाव वाले, एक उत्तम पुत्र से भी समस्त कुल प्रसन्नचित हो जाता है जैसेः एक चन्द्रमा से ही रात्रि सुशोभित होती है।

4. नास्ति काम समो व्याधिर्नास्ति मोह समो रिपु!।
नास्ति कोप समों वह्निर्नास्ति ज्ञानात्पर सुखम्।

अर्थः काम वासना के समान कोई रोग नहीं है। मोह के समान कोई शत्रु नही है। क्रोध के समान अग्नि नही है। ज्ञान से उत्तम सुख नहीं है।

5. अधमा धनमिच्छन्ति धन मान च मध्यमाः।
उत्तमा मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम।।

अर्थः निम्न वर्ग के मनुष्य धन चाहते है। मध्यम वर्ग के मनुष्य धन व सम्मान को चाहते है। उत्तम श्रेणी के मनुष्य मान को चाहते है क्योंकि निश्चय से ही महान पुरूषों का मान ही धन है।

ममता
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं: 1194

ईश–स्तुति

1. सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाम अमंगलम्।
येषा हृदिस्थो भगवान, मंगलायतनो हरिः।।

2. नित्योत्सवाः सदातेषाम् कुतस्तेषां पराजय।
येषा हृदिस्थो भगवान, मंगलायतनो हरिः।।

3. ऊँ विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परासुव।
यद यद्र तन्न आसुव।।

4. त्वम देव--देव :पुरूषः पुराण
त्वमरूप विश्वरूप ? विभो निदानम्।
त्वमीश विश्व परिपासि हंसि
त्वां विश्वनाथ सतत नमामि।

दर्शना
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल नं: 2220

परोपकार

परेषां उपकारः परोपकारो वर्तते। परेषां अन्येषां या हिताय यत कार्य क्रियते स एव परोपकार भवति। संसारें अनेके जनाः परोपकार परायणा अभवन। तेषा नामानि इतिहासः गायति । परोपकार युक्तः जनः सदा दयावान, कृपामुक्तः नम्रः आद्रीभूतश्च भवति। संसारे परोपकार मानवाः एव न कुर्वन्ति, पर अमानवा अपि परोपकार कुर्वन्ति। यथा परोपकाराय वृक्षाः लताश्च फलन्ति, मेघा, वर्षा कुर्वन्ति नद्यः वहन्ति। सूर्य आकांशो तपति, एते सर्वे सदा परोपकाराय संलग्ना सन्ति। परोपकाराय पु0यस्य प्राप्तिर्भवति, परपीडनाय पाप भवति उक्त वः

"परोपकार : पु0याय पापाय परपीडनम्'

परोपकारेण एव मानवेषु प्राणिषु वा सुख शांन्ति वा जायते। राष्ट्र सेवा, देश भक्तिः दीनान् प्रति दया, दुःखितान प्रति सहानुभूति : इत्यादय : परोपकारपक्षे भवति परोपकार। सर्वेषा सदगुणा नाम सारो वर्तते । अतएव सज्जना सदा परोपकारिण भवन्ति।

तथा चोक्ताम्:

"विभाति कायः खलु सज्जनानां
परोपकारेण नतु चन्दनेन।"

रीना
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल नं: 2291

श्रीमद् भगवद्गीता

1. वांसासि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहणाति अपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।

अर्थः जिस प्रकार मनुष्य पुराने कपड़ो को उतार कर नए वस्त्र धारण कर लेता है उसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीरों को छोड़कर दूसरे नए शरीर को धारण कर लेती है।

2. देही नित्यमवहयोऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।।

अर्थः हे अर्जुन। यह आत्मा सभी के शरीर में सर्वदा मारने योग्य नही है। इसी कारण तुम्हे सभी जीवों के लिए शोक नहीं करना चाहिए।

3. हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुतिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।

अर्थः हे अर्जुन । या तो मरने पर तुम स्वर्ग को प्राप्त करोगे अथवा जीतने पर पृथ्वी का भोग करोगे। इसी कारण हे अर्जुन युद्ध के लिए दृढ़ निश्चय करके तुम खडे हो जाओ।

4. कर्मण्येवाधि कारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हे तुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

अर्थः तुम्हारा कर्म करने में ही अधिकार है, कर्मों के फलों में कमी नहीं है। तुम कर्मों के फल का कारण मत बनो। तुम्हारी कर्म न करने में भी आसक्ति नहीं होनी चाहिए।

5. विहाय कामान यः सर्वान्युमांश्चरति निः स्पृहः
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिम धिगच्छति।

अर्थः जो पुरूष सभी इच्छाओं को छोड़कर लालसा रहित, ममता रहित अंहकार रहित होकर आचरण करता है, वही शान्ति को प्राप्त करता है।

रीना
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल नं: 2121

सूक्तिसंग्रह

1. अर्थो हि कन्या परकीय एव।
अर्थः निश्चय ही कन्या पराया धन है।
2. सर्वः प्रार्थितार्थमधिगज्य सुखी सम्पद्यते जन्तु।।
अर्थः इच्छित वस्तु को प्राप्त करके सभी प्राणी सुख का अनुभव करते है।
3 मूर्च्छन्त्यमी विकाशः प्रायेणैश्वर्यमत्तेषु।
अर्थः ऐश्वर्य के कारण मतवाले पुरूषों मे विकार प्रायः बढ़ जाया करते है।
4. भवितव्यता बलवती।
अर्थः होनी दलवान् होती है।
5. सत्पुरूषाः शोकबद्ध धैर्याः भवन्ति।
अर्थः सज्जन शोक की दशा मे भी धैर्य धारण करने वाले होते है।
6. तेन हानतिक्रमणीयानि श्रेयांसि।
अर्थः कल्याण करने वालों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए

काजल
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं:1196

विद्याया महत्वम्

अस्मिन जगति अनेके पदार्थाः सन्ति परन्तु तेषु पदार्थेषु विद्या एवं सर्वश्रेष्ठ धनमस्ति। यतः विद्याधनम् एक हि एतादृश धन लोके यत व्ययतोऽपि वृद्धिं प्राप्नोति,, संचयात क्षयम आयाति। अनया एवं कर्तव्याकर्तव्यस्य, उचितानुचित स्वय सम्यक ज्ञानं भवति। इत्यमेव उक्तम्।

"येषां न विद्या न तपो न दान
ज्ञान न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्यलोके भुवि भारभूताः।
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।"

विद्या प्रकाशेन अज्ञानान्धकारः दूरीभवति। विद्या विहीन : मनुष्यः पशुवत भवति । यः नर विद्यासमन्वितः सएव विद्वान कथ्यते। यथा निशा चन्द्रेण, मणिना सूर्यः शिखया मयूरः सरोवर कमलेन शोभते तथैव विद्यया मनुष्यः शोभते। विद्यां बिना ज्ञानं न भवति। ज्ञानं बिना मुक्तिः नास्ति।

'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।"

अतएव प्रमादं परित्यज्य विद्याध्ययनम् अवश्यमेव कर्तव्यम्।

शिवराज नरवाल
बी.ए. तृतीय वर्ष, रोल नं: 2123

NEWS SECTION

College in News

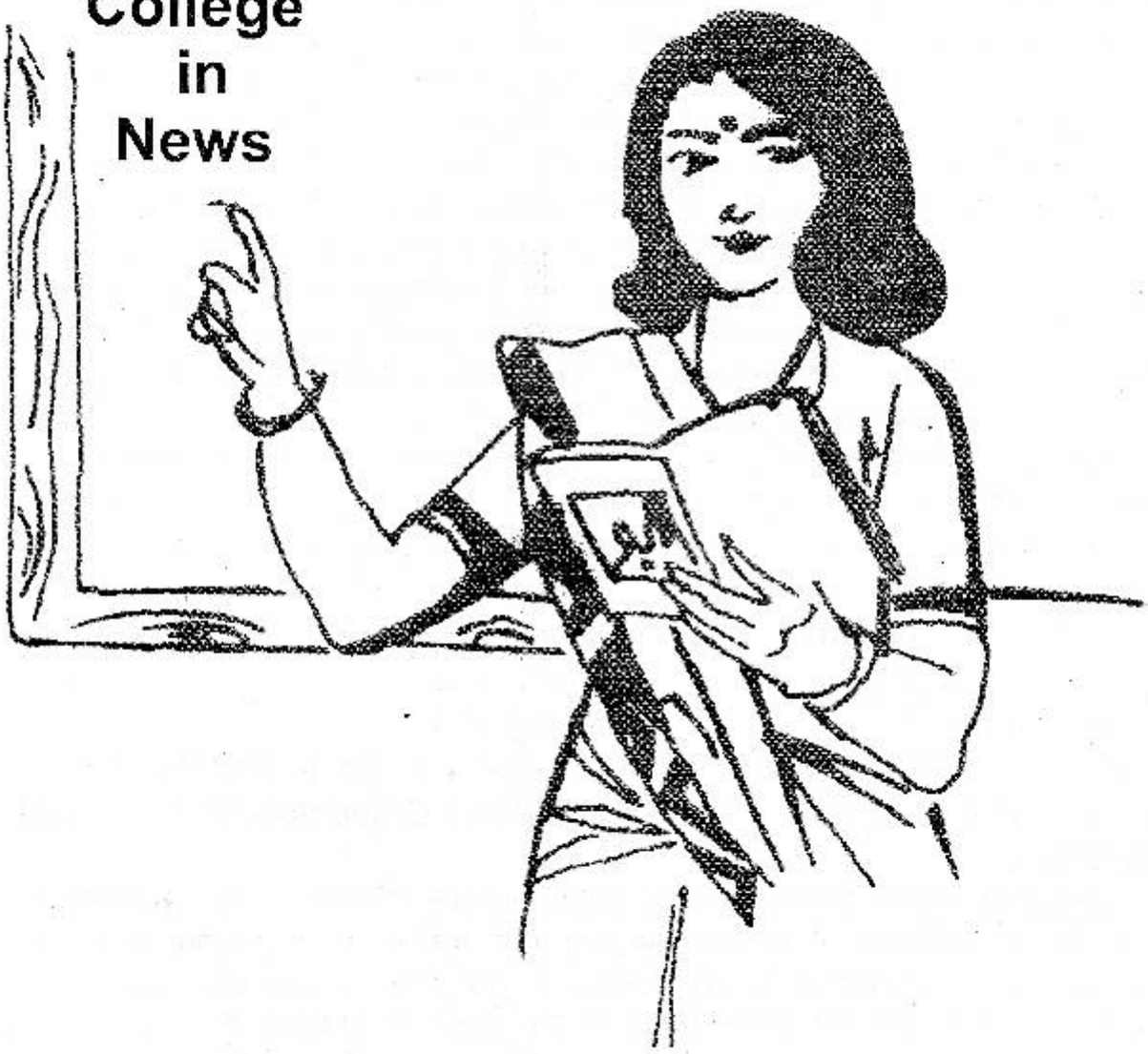

Teacher Editor:
Dr. Sudha Malhotra
Dr. (Mrs.) Geeta Gupta

सांस्कृतिक कार्यक्रम का विवरण

2013–14

शिक्षा केवल किताबी ज्ञान–अर्जन का माध्यम नहीं है। अपितु राष्ट्र के भावी निर्माताओं के सांस्कृतिक एवं चारित्रिक संस्कार की सीढ़ी भी है। प्रत्येक शिक्षण संस्थान की भाँति हमारे महाविद्यालय में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष भी छात्राओं ने अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का बखूबी प्रदर्शन किया।

1. 15 अगस्त को महाविद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम प्रबन्धकसमिति के पदाधिकारियों प्राचार्या महोदया श्रीमति शशि बहल व स्टाफ के सदस्यों की उपस्थिति में कॉलेज में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा पुनीता व सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी कुमारी आशिका ने ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात कॉलेज की छात्राओं के देश भक्ति के भावों से सराबोर कविता गीत व भाषण की भावपूर्ण प्रस्तुति की। छात्राओं के सामूहिक व एकल नृत्य ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इन कार्यक्रमों से प्रभावित होकर प्रबन्धक समिति ने प्रतिभागी छात्राओं को पुरस्कार स्वरूप 3100 रूपए प्रदान किए। प्राचार्या श्रीमती शशि बहल जी ने भी प्रभावपूर्ण वक्तव्य दिया।

2. सितम्बर माह में महाविद्यालय परिसर में प्रतिभाखोज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया; इसके अन्तर्गत चित्रकला, नृत्य, गायन, भाषण, कविता मोनो एक्टिंग व प्रश्नोतरी प्रतियोगिताओं को आयोजित किया गया; चित्रकला में सविता प्रथम, ज्योति द्वितीय सोनम और रीचा तृतीय रहीं। भाषण प्रतियोगिता में नीशु, आरती एवं आँचल क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रही। कविता–पाठ प्रतियोगिता में आरती ने प्रथम, नीशु व रेनू द्वितीय तथा ज्योति ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। संगीत वादन में अनु पूनम व प्रोमिला ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में पुनीता, सुमन व ज्योति प्रथम, आरती शिल्पा व पूनम द्वितीय तथा साहिबा, पूजा एवं शिवानी तृतीय रही। गायन में रश्मि, हिमानी व दिव्या तृतीय रहीं। नृत्य प्रतियोगिता में पूजा, रितू प्रथम, पूर्णिमा एवं प्रियंका द्वितीय तथा रिवा और प्रियंका तृतीय स्थान पर रही। प्रत्येक प्रतियोगिता की विजेता छात्राओं को कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय (युवा एवं सांस्कृतिक विभाग) द्वारा पुरस्कृत किया गया।

3. अक्तूबर माह में राजकीय महाविद्यालय हिसार में क्षेत्रीय युवा समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में छात्राओं ने निम्न गतिविधियों में पुरस्कार प्राप्त किया।

Group Song (General)	Recommended
Group Song (Haryanvi)	Recommended
Group Song (Western)	Commended
Indian Light Vocal	Commended
Haryanvi Gazal	Commended

4. नवम्बर माह के प्रारम्भ में कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र के युवा एवं सांस्कृतिक विभाग द्वारा Inter Zonal Youth Festival का आयोजन किया गया, जिसमें हमारी Group Song Haryanvi हमारी की टीम Commended रही।

5. 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर सर्वप्रथम प्रबन्धक समिति के पदाधिकारियों एवं प्राचार्या श्रीमती शशि बहल जी तथा महाविद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा कुमारी पुनीता ने ध्वजारोहण किया। अनेक छात्राओं ने देश–भक्ति के भावों को परिपूर्ण राष्ट्रगान, नृत्य, कविता व भाषण प्रस्तुत किये। कॉलेज प्राचार्या श्रीमति शशि बहल ने भी प्रभावपूर्ण वक्तव्य दिया। प्रबन्धक समिति के कोषाध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर जिन्दल जी सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाली छात्राओं 4100 रूप्ये देकर पुरस्कृत किया। इसी अवसर पर संस्कृत व हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को भी पुरस्कृत किया गया। इसी अवसर पर डॉ0 सतीश ने अपनी माता की स्मृति में बी.ए., बी. कॉम एवं बी.सी.ए. के प्रथम व द्वितीय वर्ष में महाविद्यालय में अपनी कक्षा में प्रथम रहने वाली छात्राओं को 1100–1100 रूपये तथा स्मृति चिन्ह भेंट करके उनका उत्साहवर्दन किया।

इंचार्ज: श्रीमती फूलवती पंघाल
श्रीमती रेखा सैनी

N.S.S. REPORT 2013-14

The N.S.S. unit of the college started its work with usual enthusiasm and energy this year also. Committed to the task of individual development through community service the following activities were performed by the N.S.S. volunteers.

1. **12 August,2012:** A meeting of the NSS volunteers was hled to motivate them towards the fulfillment of their objective of self development through social service and to make them aware about various rules and regulations of the unit.
2. **Independence Day:** The NSS voluntrees showed their patriotic fervour by participating in various culture programmes organized on the occasion. They also contributed in making seating arragements for staff members and students.
3. **Tree Plantation:** On 20th August Tree Plantation Program was organized. The officiating Principal Mrs. Shashi Behl, senior staff member Mrs. Anjali Gupta and about 100 volunteers participated in it. N.S.S. volunteers were motivated to grow more and more trees in the society and efforts were suggested to be made for environment enrichment and conservation.
4. **One day camp**: On 31 August, one day camp was organized by the volunteers. The main thrust of the camp was on the cleanliness of the every nook and corner of the college campus. The project was completed successfully by the volunteers with usual devotion and sincerity towards the work.
5. **World Literacy Day:** On 9th September 2013 was celebrated as world literacy day. Slogan writing competition was held. The following students were awarded prizes.

	Roll No.	Class	Name
First	1734	B.Com II	Suman Goyal
	2133	B.A. III	Jarina
Second	1710	B.Com II	Pooja
	1750	B.Com II	Sakshi
Third	1721	B.Com II	Shivani

6. **NSS Day:** 24th September, 2013 was celebrated as NSS day by the volunteers. On this occasion the volunteers took the oath to eradicate poverty, illiteracy and other social evils like dowry, female foticide etc to the best of their capacity. They were motivated to contribute in the task of purging society of all its negative traits.
7. **Blood Donation Day**: Ist October, 2013 was celebrated as blood Donation Day. On that day the N.S.S. incharge herself addressed the volunteers and told them about the importance and need of blood donation to the needy persons.
8. **World Sanitation day:** A one day camp was organized on 2nd October 2013 to celebrate fruitfully the World Sanitation Day. In the camp the volunteers wiped and cleaned all the rooms and lawns of the college premises devotedly.

An Essay- writing competition was held on the occasion of Gandhi Jayanti. Following students won prizes.

	Name	Class	Roll No.
First	Sakhsi	B.Com II	1750
Second	Salma	B.A.I	379
Third	Ritu Malik	B.A. III	2222

9. Traffice Education week: It has been a tradition with NSS unit of the College to celebrate Traffice Education week every year from 24th of October to 31th of October. Maintaining the same tradition, this year also Traffice Education week was celebrated. Incharge told the volunteers about various traffic rules and pamphlets were distributed about regulations that are necessary to be followed so that the life on roads may be made free of danger. This is also noteworthy that all the students showed their keen interest in the activities and guidance given to them.

10. Organization of seven days N.S.S. Camp: 9th January 2014 to 15th January 2014) Seven days special camp was organized in the college campus from 9th Jan., 2014 to 15th Jan. 2014. After much discussions and preparations, the opening ceremony of the camp took place on 9th January 2014. On this occasion, Shri Baldev Raj Ahuja, the vice President, Managing Committee honoured the occasion as chief guest. He appreciated the volunteers for taking of this task and encouraged them for various activities that they will be doing during the next six days. Various Cultural activities were also performed on the occasion.

During the next six days the volunteers participated with zeal and vigour in the task of personality development by learning how to cooperate with each other in all kinds of community service. Various programmes were organized for the volunteers on the fallowing topic:

A. Organization of Yoga Classes.
B. Providing First Aid Training to N.S.S. Volunteers by Shri Surya Dev Shastri.
C. Judo Training by Mr. Parmod Malik.
D. How to improve English speaking (Lecture) by Dr. Javad Abbas.
E. Dental check up and counseling by Dr. Varun Arora.
F. Personality development (Lecture) by Sh. Shyam Lal Kaushik.
G. Training of self Employment making Golden tree by Mrs. Himanshu Garg.
H. How to channelize youth power to Mr. Naresh Jaglan.

Various experst and specialists were invited for the above said task. Simultaneosuly, cleanliness move was also carried on by the volunteers with the usual devotion and enthusiasm. As 'Hari Nagar' was adopted for literacy campaign, our volunteers visited the same and taught the women alphabet, spellings, signatures and some other creative things like art of Mehndi etc.

Volunteers also took upon themselves the task of cleaning the college campus, They labored hard and unhesistantly cleaned chocked drains, and other kind of wiping and cleaning 15th January was the closing ceremony of the camp. Shri Chand Saini, member managing committee honoured the occasion as Chief Guest. He appreciated the work done by the volunteers during the camp. He also conferred a prize of Rs. 11000/- on the N.S.S. unit of the college as encouragement. Miss Varsha, B.A.III, was declared the Best NSS Camper.

Various cultural activities were performed on the occasion of successful completion of the seven day's camp.

11. Voter's Day celebration 25th Jan. 2014: N.S.S volunteers were given proformas on voter's day and advised to pay a visit door to door. They were given the duty to get these proformas filled up and ensure oath taking by the votes in the neighboring colonies. Every student had to get the detailed information of 10 houses each regarding the issue of voter's card.

12. Republic Day 26th January: On Republic Day, volunteers made seating arrangements for college staff and students. They also tried to maintain discipliene during the porgramme and N.S.S. volunteers also participated in patriotic songs and dances and they were educated about he importance of Republic Day for our nation.

So, the NSS unit of this institution is fulfilling its obligations towards the society with full zeal and courage. In this regard Principal and senior members of staff and management keep on guiding the students during the year and they praised the efforts of NSS volunteers.

Mrs. Neelam
Incharge, N.S.S.

WOMEN CELL

The women cell of the college has beeen very active in sensitizing the studens about women empowerment and in instilling in them the confidence and understanding required to face the challenges of the present times. Keeping in view this motive various programmes were held from time to time in the college campus.

The chief judicial Magistrate Mrs. Harleem A Sharma. Sh. Arminder Sharma, CJM along with a team of legal advisers and advocates were invited to the college under the joint efforts of women cell and legal litereacy cell of the college. The chief guest as well as all the other legal experts imparted knowledge about various legal facilities and rights for women. They sensitized the girls about the current problems of women like eve-teasing, rapes, domestic violence etc. They also gave a special helpline No. to the students in case of any emergency. Sh. Jai Bhagwan Goyal, Secretary, Managing Committee was also present on the occasion and addressed the students.

A lecture was organized on 11.2.2014 in which Dr. Ved Parkash Sharma, Principal, Govt. College, Jind acted as the chief speaker. The topic of his lecture was "Magic of Motivation". He told the students many valuable and practical ways to develop their inner and outward personality and become and active and responsible member of society.

The renowned skin specialist of the city Dr. Pankaj Soni arranged a free skin care camp in the college premises under the guidance and care of women-cell. About two hundred students consulted him about their problems and were benefited by his medical advice. He also distributed fee medicines among students.

The women cell celebrated women' Day on 8th March with the collaboration of Mahatma Gandhi Institute of education and social services. On this day, girls were given demonstration of various Judo techniques by the Judo expert and black Belt champion. Mr pramod Malik. He told many useful methods to tackle a tough situation faced by girls at road, in buses etc and at home. **Shri Raj Kumar Bhola** along with other members of institute addressed the students to inspire them to work actively for self development as well as for the prayers of society. The also made the students take an oath not to support female foeticide and help in curbing this menace.

Apart from these programmes students participated in various essay writing and poster making competitions with in the college campus as well as at district and state level competitions. The topics of competitions were as under:

1. Modern Gadgets and Crime against women.
2. Honour killing Role of society and law
3. Women empowerment
4. Female education

Ms. Harigandha, Ms. Sonam and Ms. Shilpa Jain won prizes in these competitions. Ms. Harigandha (B.Com II) got first prize of Rs.500/- at Inter college essay writng competition.

Anjali Gupta
Incharge Women-Cell

REPORT OF MATHEMATICS 2013-14

Deptt. Of Mathematics was established in 1982. Eleven student took admission in Prop. Out of which three students got Ist, 2nd & 7th position in the university merit list.Since then we the deptt. Of Mathematics have been maintaining the performance. Every year our students get position in the university merit list.

We have started B.A. computer science & B.A. (Hons.) Maths on U.G.C. Pattern. Our Students always achieve Ist, 2nd, 3rd & 4th position in the University Merit list. Apoorva of B.A. got Ist Position in each semester in the University Merit List. Many students of B.A. Maths & B.A. Maths (Hons) are doing M.Sc. (Mathematics) in different Univeristy and other Institutions. Many students are employeed in different occupations in teaching MNC's and other offices.

We have also started information technology as Add-On-Course under the deptt. Of Mathematics. We have also established computer labs.

We no only teach our students prescribed syllabus but also guide on different topics as for competitive examination and entrance test etc. We discourage cramming. We give our best to make them understand the subject we are always ready to help our student as and when required.

Dr. (Mrs) Alka Gupta
Associate Porffessor
Mathematics

RED CROSS REPORT (2013-14)

हमारे महाविद्यालय की रैड क्रॉस शाखा इण्डियन रेड क्रॉस सोसाइटी चंडीगढ़ से संबंधित है। प्रत्येक छात्रा से रू 60 रेड क्रॉस फीस ली जाती है, जिसका 30 प्रतिशत इण्डियन रेड क्रॉस सोसायटी चंडीगढ़ को भेज दिया जाता है। कॉलेज की रेड क्रॉस यूनिट गरीब और शारीरिक रुप से अक्षम छात्राओं को किताबे, गर्म कपड़े और फीस में छूट जैसी सुविधाएँ देती है। इस वर्ष रैड क्रॉस युनिट मे 81 छात्राओं ने सदस्यता ग्रहण की।

सत्र के प्रारम्भ में अगस्त माह में ही एक मीटिंग ले कर छात्राओं को रेड क्रॉस के उद्देश्य और कार्यों की जानकारी दी गई। बाद में भी समय समय पर मीटिंग सत्र के दौरान होने वाली गतिविधियों की जानकारी दी जाती रही। सत्र के प्रारम्भ में दाखिले के समय जुलाई माह में तथा बाद में नवम्बर माह में गरीब छात्राओं को रेड क्रॉस यूनिट द्वारा फीस में छूट दी गई। शारीरिक रूप से अक्षम छात्राओं को फीस के साथ–साथ किताबे गर्म कपड़े देकर समय समय पर आर्थिक सहायता दी जाती रही।

सितम्बर माह में दिनांक 16–20 सितम्बर, 2013 तक District Red Cross society, Jind की ओर से District Level Youth Red Cross Training Camp का आयोजन किया गया, जिसमें कॉलेज की निम्न छह छात्राओं ने भाग लिया।

Nishu	B.A.III
Aarti Bansal	B.A.II
Shilpa	B.A.II
Shallu	B.A.II
Sanju	B.A.II
Annu	B.A.II

कैम्प के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में कॉलेज की इन छात्राओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। भाषण प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा आरती तथा बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा नीशू सर्वश्रेष्ठ वक्ता चुनी गई। दौड़ प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय की छात्रा शालू द्वितीय स्थान पर रही। पेटिंग प्रतियोगिता में शालू द्वितीय स्थान पर रही। कैम्प में भाग लेने वाली अनेक टीमों में से कॉलेज की टीम को सर्वश्रेष्ठ टीम चुनते हुए पुरस्कृत किया गया।

अक्तूबर माह में गाँधी जयंती के उपलक्ष्य में अहिंसा और शांति विषय पर slogan writing comp. करवाया गया, जिसका परिणाम इस प्रकार रहा।

Ist	Sonam	B.Com III
2nd	Shilpa Jain	B.A. II
3rd	Jarina	B.A.III

दिसम्बर माह में रेड क्रॉस यूनिट की ओर से गरीब छात्राओं को गर्म कपड़े वितरित किए गए।

फरवरी माह में Red Cross unit की ओर से Poster making comp. का आयोजन किया गया, जिसका परिणाम इस प्रकार रहा।

Ist	Sonam	B.Com III
2nd	Shilpa Jain	B.A.II
3rd	Tina Sharma	B.A.I

21–22 मार्च 2014 को कॉलेज की Red Cross Unit की ओर से दो दिवसीय योग व फर्स्ट एड ट्रेनिंग कैम्प लगाया गया। कैम्प के दौरान श्री सूर्यदेव आर्च जी ने योग, मेडिटेशन एवं श्रेष्ठ आहार सम्बन्धी जानकारी दे कर अच्छे स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री ईश्वर सांगवान जी ने फर्स्ट एंड ट्रेनिंग देते हुए छात्राओं को प्राथमिक उपचार की जानकारी दी। इसी अवसर पर स्लोगन व पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर आने वाली छात्राओं को पुरस्कृत भी किया गया।

डॉ0 पूनम गोर
इंचार्ज
रैड क्रॉस

SPORTS ACHIEVEMENTS

1. नरवाना में हुई सीनियर राष्ट्रीय हैंडबाल प्रतियोगिता में कु0 ममता खर्ब बी.ए. द्वितीय वर्ष ने गोल्ड मैडल एवं इंदौर में हुई राष्ट्रीय स्तर की जूनियर हैंडबॉल प्रतियोगिता में गैडल एवं तिरूपति (आंध्रप्रदेश) में हुई इंटर जोनल राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल एवं जैसलमेर (राजस्थन) मे हुई राष्ट्रीय स्तर की फैडरेशन कप हैंडबाल प्रतियोगिता में सिलवर मैडल एवं गिलाई (छतीसगढ़) में हुई राष्ट्रीय स्तर की इंटर जोनल प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल एवं नरवाना में हुई राज्य स्तरीय सीनियर प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल एवं दनौदा में हुई राज्य स्तरीय जूनियर प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल एवं करनाल में हुई राज्य स्तरीय महिला खेल उत्सव में गोल्ड मैडल प्राप्त किया। एवं हरियाणा सरकार द्वारा इन्हे 2 लाख रू की राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई।

2. तिरूपति में हुई राष्ट्रीय स्तर की इंटर जोनल हैंडबाल प्रतियोगिता में कु0 ज्योति बी.ए. द्वितीय वर्ष ने गोल्ड मैडल एवं नरवाना में हुई राज्य स्तरीय सीनियर प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल एवं दनौदा में हुई राज्य स्तरीय जूनियर प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल एवं जीन्द में हुई जिला स्तरीय प्रतियोगिता में सिल्वर मैडल प्राप्त किया।

3. आशिका ने हैदराबाद में Women National Championship सिल्वर मैडल प्राप्त किया एवं दनौदा में हुई जूनियर स्टेट हैंडबाल चैंपियनशिप में गोल्ड मैडल प्राप्त किया एवं करनाल में हुई Women State Handball Championship में गोल्ड मैडल प्राप्त किया एवं नखाना में हुई Senior State Handball Championship में गोल्ड मैडल प्राप्त किया एवं हरियाणा सरकार द्वारा इन्हे 2 लाख रूपये की राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई

4. दनौदा में हुई Junior State Handball प्रतियोगिता में कुमारी नैन्सी ने Gold Medal प्राप्त किया एवं जीन्द में हुई Distt. Handball प्रतियोगिता में भी गोल्ड मैडल प्राप्त किया।

5. छत्तीसगढ़ मे हुई Junior National Fencing प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय कुमारी सोनिया ने भाग लिया था एवं कैथल में हुई Senior State Fencing प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल प्राप्त किया और पचंकुला में हुई Junior State Fencing में कांस्य पदक प्राप्त किया। करनाल में हुई Inter College तलबारबाजी प्रतियोगिता में सोनिया ने Silver Medal प्राप्त किया। एवं जीन्द में हुई Distt. Fencing प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया।

6. कैथल में Senior State Fencing प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय वर्ष की कुमारी ज्योति ने कांस्य पदक प्राप्त किया एवं करनाल में हुई Inter College Fencing प्रतियोगिता में सिल्वर मैडल प्राप्त किया। और जीन्द में हुई Fencing District प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया।

7. बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा कुमारी गोनिका ने कैथल में हुई Senior State Fencing प्रतियेगिता में Bornz Medal प्राप्त किया एवं करनाल में हुई Inter College Fencing प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया और जीन्द में हुई Distict Fencing प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया।

8. करनाल में हुई Inter College Fencing प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय वर्ष की कुमारी अनुराधा ने सिल्वर मैडल प्राप्त किया।

9. करनाल में हुई Inter College Fencing प्रतियोगिता में बी.ए. प्रथम की कुमारी नैन्सी ने कांस्य पदक प्राप्त किया।

10. बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा हैप्पी ने जम्मू में हुई Senior National Fencing प्रतियोगिता में भाग लिया एवं करनाल में हुई Inter College Fencing प्रतियोगिता में सिल्वर मैडल प्राप्त किया और कैथल में हुई Senior State Fencing प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया। एवं जीन्द में हुई Distict प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल प्राप्त किया।

11. अंबाला में हुई Senior State लॉन टेनिस प्रतियोगिता में बी.ए. प्रथम की छात्रा शीतल ने भाग लिया एवं जीन्द में हुई Woman Distic प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

12. जीन्द में हुई Woman Distict लॉन टेनिस प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा अनुराधा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

13. जींद मे हुई Woman Distict हॉकी प्रतियोगिता में बी.ए. प्रथम की छात्रा पूनम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया एवं Senior Staete प्रतियोगिता में भाग लिया।

Legal Literacy Cell 2013-14

1. 8-10-2013 Different types of college level competitions were organized on 8-10-2013 and their results are as under:

a)	**Essay Writing**			
	First	Harigandhar	B.Com II	1729
	Second	Jyoti	B.A. II	2224
	Third	Sahiba	B.Com II	1736
b)	**Painting Competitions**			
	First	Pancy	B.Com II	1793
	Second	Priyanka	BBA II	4501
	Third	Nidhi Nagpal	BBA II	4513
c)	**Slogan Writing**			
	First	Sonam	B.Com III	1807
	Second	Suraksha	BBA II	4511
	Third	Aakansha	B.Com II	1785
d)	**Declamation**			
	First	Charu	B.A.III	2176
	Second	Aarti Bansal	B.A. II	1105
	Third	Kusum	B.Com III	2905
f)	**Poem Recitation**			
	First	Suman		
	Second	Aarti Bansal	B.A.II	1734
	Third	Nishu	B.A.III	2117
	Third	Vinit	B.Com III	2907

2. **2 9-11-2013 National Legal Services day:** Advocate Ms. Archna Pawar apprised the students about women Empowerment rights of senior citizens and role of legal Services Authority in Legal Literacy. Objective of this seminar was to rededicate the cause of bringing out equal opportunities and equal Justice through Legal Services.

3. **24-11-2013 District level competitions:** winners of college level competitions participated in district level competitions held at Govt- PG collage , Jind following student won prizes in various competitions.
   1. Harigandha B com II, IIIrd participated in distict level competition Essay writing
   2. Charu BA III, Ist in declamation
   3. Nishu BA II, IInd Poetic Recitation

4. **1-2-2014 Special Legal Literacy Seminar on woman empowerment:** This seminar was organised to apprise the student about women Empowerment this seminar was presided over by madam Harleen Sharma , CJM secretary DLSA, jind and Sh- Arminder Sharma CJM , Jind were the chief Guest Advocates Sh rakesh Kumar chugh and Ms Pooja Verma apprised the student about the rights of women Sh. Jai Bhagwan Goel General Secretary Managing Committee H.K.M.V. Jind was our special Guest on this occasssion All the eminent speakers discussed about various laws and rights of women in detail. Assoc. Prof. Ms. Anjali Gupta and students also actually participated in this seminar through poem speech and songs.

5. **15-2-2014 Special Lectures:** Advocates Ms. Anjali Kaushik and Sh. Manoj Sheokand were deputed by DLSA Jind to apprise students about various issues. Ms. Anjali Kaushik talked about Lok Adalt free Legal Services under Legal Services Authorities Act, 1987 Environment pollution Advocate Sh. Manoj Sheokand elightened the students about food safety and standers act 2006 and discussed the issue of women empowerment.

6. **22-3-2014: Legal Awareness camp:** This camp was organized on protection of women from domestic violence act 2005 was organized on 22-3-2014 Advocates Sh. J.S. Tanwar and Ms. Sushita Devi were deputed by DLSA Jind to apprise the students and staff about this act. Mrs. Sushita Devi motivated the students to tackle this problem of domestic violence with their innate powers and take the help of protection officer. Advocate Sh. J.S. Tanwar sensiffized the students about the moral and social values to so that they can adjust smoothly in their future lives.

7. **5-4-2014 Special Legal Literacy Camp on PCPNDT Act. :** This camp was organized to make the students aware about the pre conception and prenatal diagnostic technologies (prohobition of sex selection Act.) Advocates Sh. Nand Mohan Sharma and Ms. Pooja Verma and para Legal volunteers Sh. Mukesh Kumar and Ms. Suman were deputed by DLSA for this camp.

Anita
Convener, Legal Literacy Cell

Red Cross

कॉलेज की टीम कैम्प में सर्वश्रेष्ठ टीम चुनी गई कॉलेज की छात्राएँ पुरस्कार ग्रहण करती हुई

Poster making Competition के दौरान **Poster** बनाती हुई छात्राएँ

22 मार्च 2014 को श्री ईश्वर सांगवान जी फर्स्ट एड सम्बन्धी जानकारी देते हुए

योगा कैम्प के दौरान श्री सूर्यदेव आर्य जी योगाभ्यास करवाते हुए

21 मार्च 2014 को श्री सूर्यदेव आर्य जी योगाभ्यास करवाते हुए

District Red Cross Society द्वारा आयोजित 5 दिवसीय कैंप के दौरान दौड़स्पर्धा में भाग लेती कॉलेज की छात्राएँ नीशु, आरती, शिल्पा व शालू

जनवरी 2014 रेड क्रॉस के तहत छात्राओं को स्वैटर वितरित किए गए

Voter Celebration Day

कुमारी निशू वोट्रस डे के
उपलक्ष्य में भाषण देते हुए

कैम्पस एम्बेस्डर कुमारी आरती
एस.डी.एम. महोदया का स्वागत करते हुए

नोडल अधिकारी श्रीमति नीलम को उत्कृष्ट
कार्यों के लिए सम्मानित करती हुई
एस.डी.एम. कुमरी अमृता सिवाच

प्रिंसीपल श्रीमति शशी बहल एस.डी.एम. महोदया को बुके देकर आभिनन्दन करते हुए।

एस.डी.एम. महोदया वोटरस
डे पर शपथ दिलवाते हुए

नाट्य मंचन करती हुई छात्राएँ

एस.डी.एम. प्रिंसीपल श्रीमति शशि
बहल और नोडल अधिकारी श्रीमति
नीलम दीप प्रज्जवलित करते हुए

Our College Gems

कु ज्योति बी.ए. द्वितीय (हैंडबॉल)
राष्ट्रीय स्तर पर खेलकूद में गोल्ड मैडल जीते

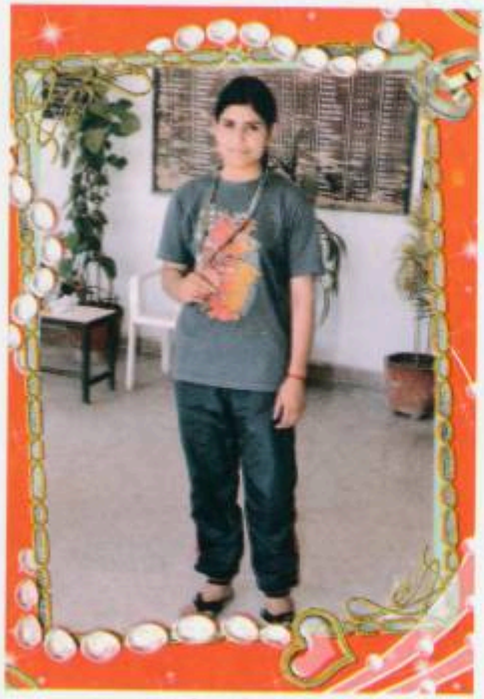

कु ममता बी.ए. द्वितीय (हैंडबॉल)
राष्ट्रीय स्तर पर पाँच गोल्ड मैडल प्राप्त कर हरियाणा सरकार से 2 लाख रू की राशि से सम्मानित हुई

शैक्षणिक गतिविधियों में विश्वविद्यालय में मैरिट

दीक्षा
बी.कॉम द्वितीय वर्ष

मिताली
बी.कॉम द्वितीय

गरिमा गुप्ता
बी.कॉम द्वितीय

डा. शिवराज
बी.ए. तृतीय वर्ष

गीत
बी.ए. तृतीय
मिस कॉलेज 2014
हरियाणवी ग्रप सॉग तथा
पाश्चात्य समूहगान में राज्य
स्तर पर द्वितीय

कु0 नीशू
बी.ए. द्वितीय
सांस्कृतिक कार्यक्रम
में विशेष प्रतिभा

अपूर्वा शर्मा
विश्वविद्यालय में
I, II, III, IV, V, VI सैम में प्रथम

कु. आरती
बी.ए. द्वितीय

Sports

अनुराधा बी.ए. द्वितीय
ने Inter College fancing में
Silver Medel और Senior State में
Gold Madel
प्राप्त किया

तलवारबाजी में
Inter College में **IInd**
और **State Level**पर **Gold** और
Bronze Madel
जीता

कु. ममता बी.ए. द्वितीय
ने **Handball** में
Natinoal Level पर
Gold Madel जीता

National Handball
में **State Leval** पर
Gold Madel
जीता

College In News

सात दिवसीय एनएसएस शिविर

व्यक्तित्व विकास के लिए छात्राओं में आत्मविश्वास होना जरूरी : कौशिक

योग से दूर भगाएं सभी रोग : सूर्यदेव

हिंदू कन्या महाविद्यालय में सात दिवसीय एनएसएस शिविर का पहला दिन

रंगारंग कार्यक्रमों के साथ एनएसएस कैंप का समापन

छात्राओं को बताए अधिकार

हिंदू कन्या महाविद्यालय में कानूनी सेवा प्राधिकरण की ओर से ... सुशीला देवी ने छात्राओं को घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 की जानकारी दी। एडवोकेट सुशीला देवी ने छात्राओं को बताया कि वे किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। लड़कियों को अपनी काबिलियत पहचाननी होगी। ... ने छात्राओं को अपने भावी जीवन में आने वाली समस्याओं से जूझने के लिए प्रेरित किया। सेमिनार में प्राचार्य शशि बहल व ... सैल इंचार्ज अनीता व सुषमा सुरा मौजूद थी। उन्होंने छात्राओं को जागरूक रहने व अपने अधिकारों का प्रयोग करने की सलाह दी।

छात्राओं ने मतदान के प्रति किया जागरूक

वर्षा बनी बैस्ट कैम्पर

स्वयं सेविकाओं ने चलाया सफाई अभियान

शिविर में छात्राओं को सिखाए आत्मरक्षा के गुर

सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया

छात्राओं ने मतदान के लिए जागरूकता रैली निकाली

लड़कियां लड़कों से नहीं कम

जींद। हिंदू कन्या कॉलेज में सोमवार को सात दिवसीय एनएसएस शिविर का शुभारंभ प्रबंधक समिति के उपाध्यक्ष बलदेव आहूजा ने किया। उन्होंने स्वयंसेवकों को ऐसे कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया। प्रिंसिपल शशि बहल ने कहा कि आज लड़कियां किसी भी क्षेत्र में लड़कों से कम नहीं हैं। देश की प्रधानमंत्री बनने वाली इंदिरा गांधी भी महिला ही थी। कल्पना चावला, टेनिस स्टार सानिया मिर्जा ऐसे कई उदाहरण हैं जिसे अपना प्रेरणा स्रोत बना कर लड़कियां आगे बढ़ सकती हैं। छात्र जीवन से ही एकता व भाईचारे का भाव सीखा तो वह अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ते हुए स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। इस मौके पर एनएसएस इंचार्ज नीलम, मधु रानी, डा. सुषमा, डा. गीता गुप्ता, अंजलि गुप्ता, रेखा आदि मौजूद रही।

बेटी बेटी सबसे सुंदर

कुरीतियों को खत्म करने की शपथ दिलाई

दीप प्रज्ज्वलन

गोल्ड मेडलिस्ट खिलाड़ी का स्वागत

पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

फर्स्ट एड की दी जानकारी

शिविर में दी फर्स्ट एड की जानकारी

हिंदू कन्या महाविद्यालय में किया पौधारोपण

छात्राओं ने सीखे आत्मरक्षा के गुर

छात्राओं को गीता की प्रासंगिकता बताई

छात्राओं ने सीखे सेल्फ डिफेंस के गुर

छात्राओं को दी कानून की जानकारी

'महिला सशक्तीकरण के लिए कानून में कई प्रावधान'

छात्राओं को सिखाए आत्मरक्षा के गुर

छात्राओं को गीता की प्रासंगिकता बताई

हिंदू कॉलेज की छात्राओं ने मेडल जीत बढ़ाया गौरव

छात्राओं को बताए दांतों की सुरक्षा के उपाय

गोल्ड मेडलिस्ट खिलाड़ी का स्वागत

Supplied By: Effuctial Enterprises: 092170-00261, 7357710050